ॐ

KUNDLI REPORTS



मित्रता अनुकूलता रिपोर्ट

दो कुंडलियाँ, एक मित्रता

व्यक्ति 1: **Ananya Sample · 17 अगस्त 1994**

व्यक्ति 2: **Rohan Example · 3 फ़रवरी 1992**

नमूना रिपोर्ट (SAMPLE), काल्पनिक जन्म विवरण

कृपया ध्यान दें: ज्योतिष रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन, आत्म-चिंतन और मनोरंजन केलिए हैं। ये पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देतीं। ये चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक या अन्य पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं। रिपोर्ट केआधार पर स्वास्थ्य, कानूनी या वित्तीय निर्णय न लें। कुंडली कंप्यूटर द्वारा गणना की जाती है (स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश) और व्याख्याएँ AI सहायता से लिखी व मनुष्यों द्वारा संपादित हैं। कोई ज्योतिषी व्यक्तिगत रिपोर्ट की समीक्षा नहीं करता। पूरा अस्वीकरण अंतिम पृष्ठ पर है।

Ananya: जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

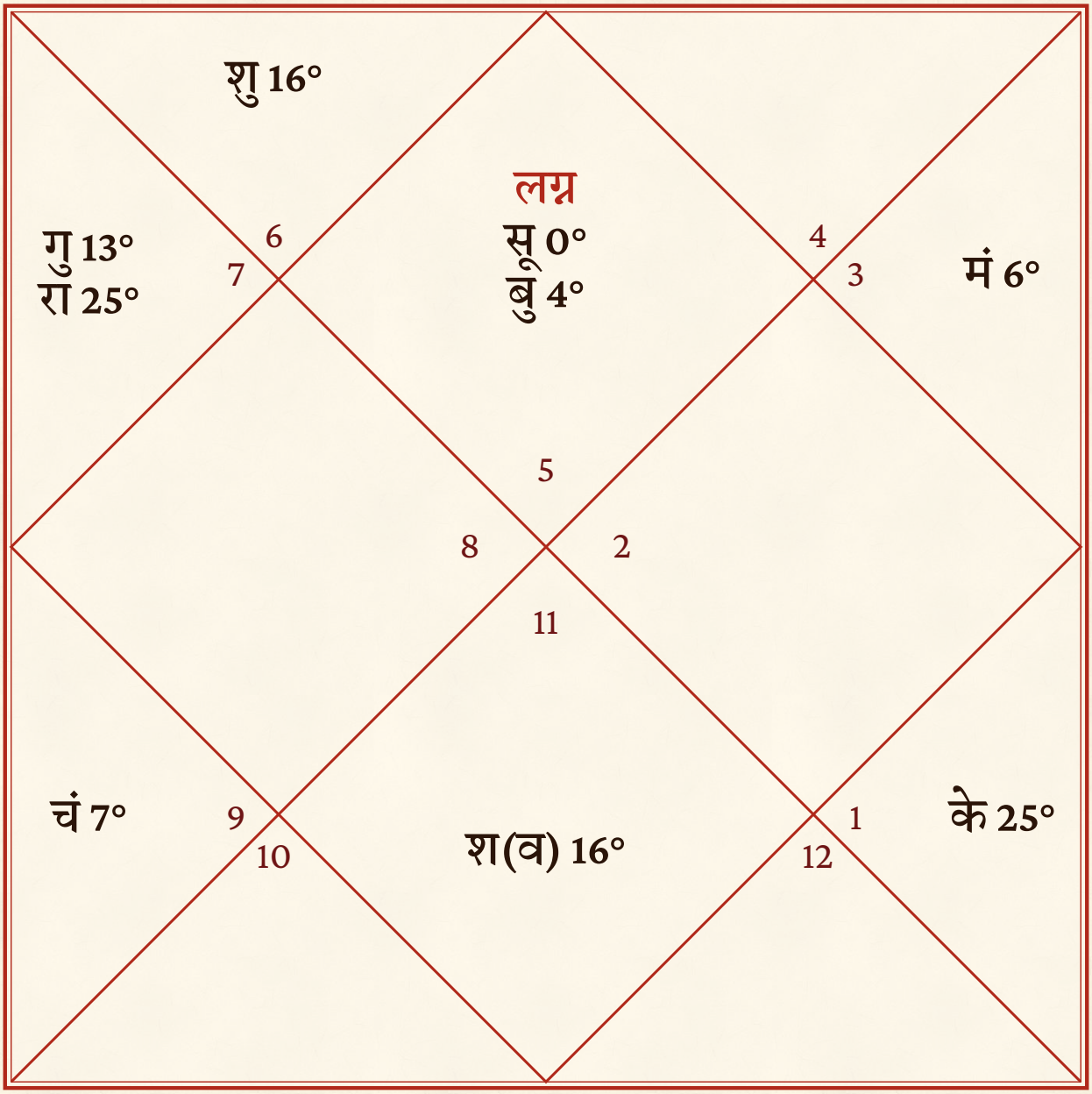

Ananya: जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

यह आपकी जन्म कुंडली उत्तरी (हीरे जैसी) शैली में है। पहला भाव ऊपर केहीरे में है; भावों में लिखी संख्याएँ राशियाँ हैं (1 मेष है)। ग्रह-लेबल उस राशि में अंश दिखाते हैं। यह स्थितियों का मानचित्र है, घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

Ananya: D1: दक्षिण भारतीय शैली

Pis	Ari के 25°	Tau	Gem मं 6°
Aqu श(व) 16° Cap	D1: दक्षिण भारतीय शैली		Can Leo लग्न सू 0° बु 4°
Sag चं 7°	Sco	Lib गु 13° रा 25°	Vir शु 16°

Ananya: D1: दक्षिण भारतीय शैली

यही जन्म कुंडली दक्षिणी (वर्ग) शैली में है, जिसमें राशियाँ स्थिर हैं (मीन ऊपर-बाएँ कोष्ठ में)। इसे पिछले पृष्ठ की उत्तरी कुंडली से मिलाकर देखें। दोनों एक ही कुंडली का वर्णन हैं।

Rohan: जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

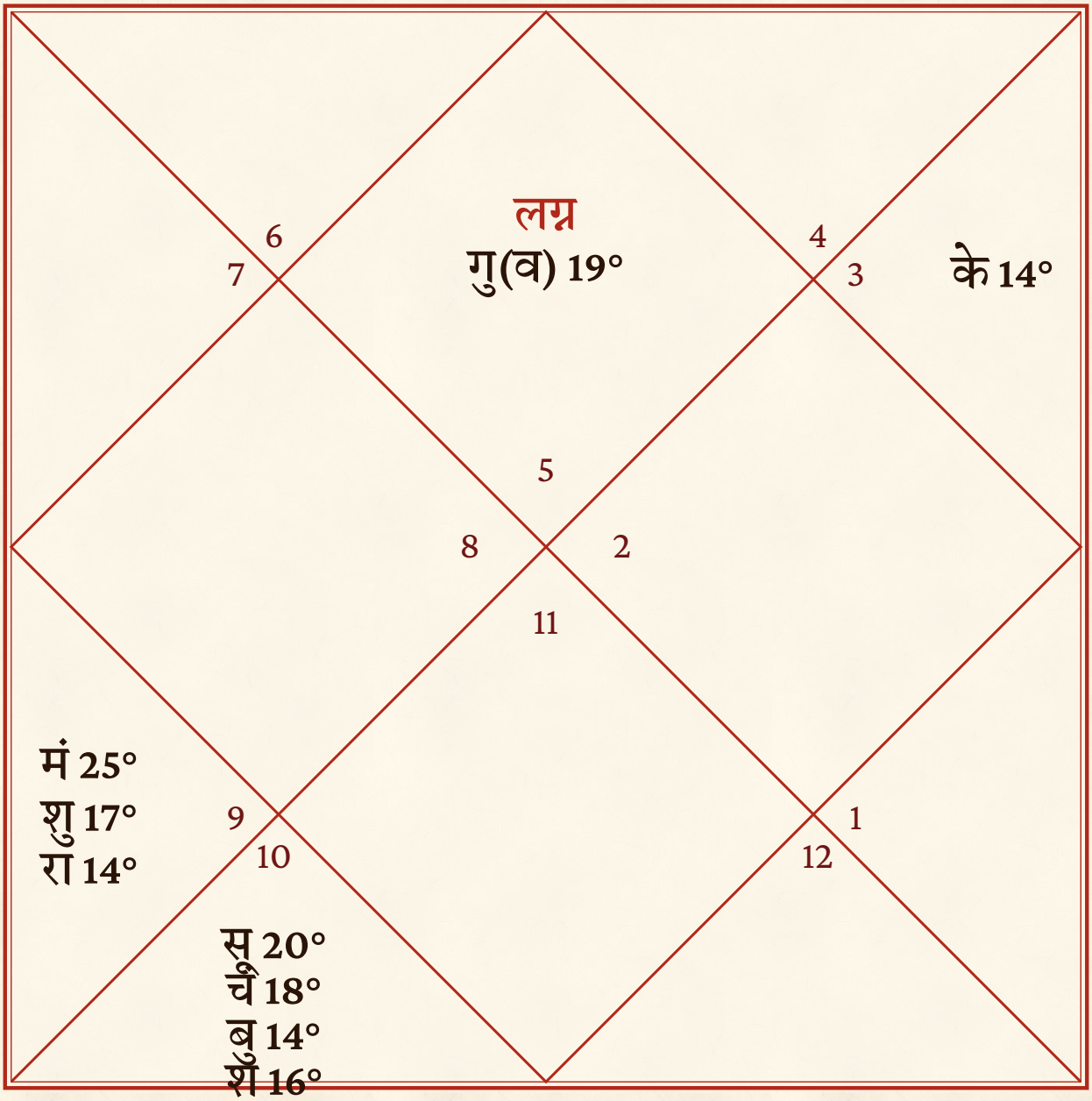

Rohan: जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

यह आपकी जन्म कुंडली उत्तरी (हीरे जैसी) शैली में है। पहला भाव ऊपर केहीरे में है; भावों में लिखी संख्याएँ राशियाँ हैं (1 मेष है)। ग्रह-लेबल उस राशि में अंश दिखाते हैं। यह स्थितियों का मानचित्र है, घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

Rohan: D1: दक्षिण भारतीय शैली

Pis	Ari	Tau	Gem के 14°
Aqu Cap सू 20° चं 18° बु 14° श 16°	D1: दक्षिण भारतीय शैली		Can Leo लग्न गु(व) 19°
Sag मं 25° शु 17° रा 14°	Sco	Lib	Vir

Rohan: D1: दक्षिण भारतीय शैली

यही जन्म कुंडली दक्षिणी (वर्ग) शैली में है, जिसमें राशियाँ स्थिर हैं (मीन ऊपर-बाएँ कोष्ठ में)। इसे पिछले पृष्ठ की उत्तरी कुंडली से मिलाकर देखें। दोनों एक ही कुंडली का वर्णन हैं।

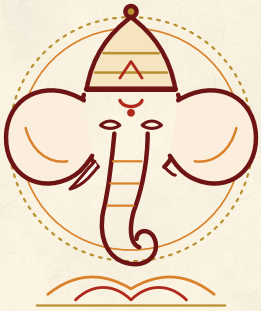

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

जन्म पत्रिका

व्यक्ति 1	Ananya Sample · 17 अगस्त 1994
व्यक्ति 2	Rohan Example · 3 फ़रवरी 1992

ऊपर दिए जन्म विवरण से स्विस एफ़ेमेरिस और लाहिरी अयनांश द्वारा, पारंपरिक जन्म-पत्रिका की रीति से तैयार।

विषय-सूची

1. इस दो-व्यक्ति रिपोर्ट को कैसे पढ़ें
2. Ananya: व्यक्तित्व
3. Rohan: व्यक्तित्व
4. आप दोनों के व्यक्तित्व साथ कैसे चलते हैं
5. दोनों जन्म पत्रिकाएँ
6. दोनों जन्म कुंडलियाँ
7. मुख्य कारकों की तुलना
8. स्वभाव का मेल
9. Ananya Sample: शैली और शक्तियाँ
10. Rohan Example: शैली और शक्तियाँ
11. साथ मिलकर अच्छा काम करना
12. अष्टकूट: कूट-दर-कूट
13. दोनों पक्षों की मांगलिक जाँच
14. भाव-आच्छादन: Ananya के ग्रह Rohan की कुंडली में
15. भाव-आच्छादन: Rohan के ग्रह Ananya की कुंडली में
16. दोनों कुंडलियों के बीच ग्रह-संपर्क
17. दशा-मेल: दोनों समय-रेखाएँ साथ
18. दोनों चंद्रमाओं से गोचर: अगले 24 महीने
19. Ananya: जन्म विवरण और पंचांग
20. Ananya: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण
21. Ananya: भाव-दर-भाव विश्लेषण
22. Ananya: ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग
23. Ananya: आपकी कुंडली के योग और दोष
24. Ananya: D9 · नवांश
25. Ananya: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल
26. Ananya: जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ
27. Rohan: जन्म विवरण और पंचांग
28. Rohan: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण
29. Rohan: भाव-दर-भाव विश्लेषण
30. Rohan: ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग
31. Rohan: आपकी कुंडली के योग और दोष
32. Rohan: D9 · नवांश
33. Rohan: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल
34. Rohan: जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ
35. शब्दावली
36. महत्वपूर्ण अस्वीकरण

यह रिपोर्ट आपके दिए गए जन्म विवरण से स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश वाली निरयन राशि-पद्धति, पूर्ण-राशि (whole-sign) भाव और माध्य राहु-केतु के आधार पर गणना की गई है, भारतीय (वैदिक) ज्योतिष में सबसे अधिक प्रचलित पद्धतियाँ।

इसे अंतिम निर्णय नहीं, बल्कि आत्म-चिंतन का दर्पण समझें। पारंपरिक ज्योतिष प्रवृत्तियों और समय के विषयों का वर्णन करता है; वास्तव में क्या होगा, यह आपके निर्णय, प्रयास और परिस्थितियाँ तय करती हैं।

इस दो-व्यक्ति रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

इस दो-व्यक्ति रिपोर्ट को कैसे पढ़ें

यह रिपोर्ट दो कुंडलियों को साथ पढ़ती है। पहले अध्याय दोनों जन्म पत्रिकाओं और अष्टकूट मिलान के आठ पारंपरिक कूटों की तुलना करते हैं, जिनकी गणना चंद्रमा की सटीक स्थिति से हुई है। बाद के अध्याय एक कुंडली को दूसरी पर रखते हैं: हर व्यक्ति के ग्रह दूसरे के किन भावों में पड़ते हैं, कौन-से ग्रह एक-दूसरे पर दृष्टि डालते हैं, और दोनों की दशाएँ साथ-साथ कैसे चलती हैं।

जिन अध्यायों के शीर्षक में किसी का नाम है, वे उसी व्यक्ति की अपनी कुंडली पढ़ते हैं; उन अध्यायों में "आप" और "आपका" का अर्थ वही व्यक्ति है। यहाँ सब कुछ दिए गए जन्म विवरण से, निरयण (लाहिरी) स्थितियों और पूर्ण-राशि भावों से गणना किया गया है।

> ज्योतिष में अनुकूलता एक पारंपरिक दृष्टिकोण है। यह प्रवृत्तियाँ और करने योग्य बातचीत बताती है, दो लोगों पर कोई निर्णय नहीं। विश्वास, संवाद और साझा मूल्य किसी भी अंक से कहीं अधिक निर्णायक हैं।

Ananya: व्यक्तित्व

शायद आप वही व्यक्ति हैं जिसकी ओर लोग तब देखते हैं जब माहौल को गर्मजोशी, दिशा या थोड़े साहस की ज़रूरत हो।

❖ दूसरे आपको कैसे देखते हैं, और आप भीतर कैसा महसूस करते हैं

आपका सिंह लग्न वह चेहरा है जो आप दुनिया को दिखाते हैं। लोग प्रायः आपको सीधा, ऊर्जावान और तुरंत काम करने वाला मानते हैं। आपने देखा होगा कि किसी बैठक या पारिवारिक जमावड़े में सब आपकी पहल का इंतज़ार करते हैं, और बात टलती रहे तो आप बेचैन हो जाते हैं। धनु राशि का चंद्र आपका निजी पक्ष दिखाता है। भीतर आपकी भावनाएँ तेज़ और गर्म बहती हैं: उत्साह, झुंझलाहट और जोश जल्दी आते हैं, और आपको उन्हें दबाकर बैठने के बजाय कुछ करना होता है। चंद्र आपके पंचम भाव में है, जो बुद्धि, पढ़ाई, रचनात्मक काम, प्रेम और संतान का क्षेत्र है; वहाँ जो होता है वह आपके मन को सबसे अधिक छूता है, और वहीं आप सुकून भी खोजते हैं।

यहाँ बाहर का आप और भीतर का आप एक ही भाषा बोलते हैं, इसलिए लोग जो देखते हैं वह आपकी भावनाओं के बहुत क़रीब होता है। इससे आप सच्चे और आसानी से समझ आने वाले लगते हैं, हालाँकि कभी-कभी आपको एक शांत कोना चाहिए जहाँ आप ख़ुद में लौट सकें। आपका जन्म नक्षत्र मूल अपना अलग रंग जोड़ता है: परंपरा इसे इन गुणों से जोड़ती है: जड़ तक पहुँचना, दार्शनिक गहराई और नए सिरे से शुरू करने का साहस। नए लोगों और नई स्थितियों से मिलने के आपके ढंग में आप इन्हें पहचान सकते हैं। भीतर से (सिंह में सूर्य) आप रचना करना, नेतृत्व करना और अपने असली रूप में सराहे जाना चाहते हैं; दिल खोलकर देने पर आप सबसे अधिक चमकते हैं। आपका सूर्य प्रथम भाव (आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप) में है, जो दिखाता है कि आप कहाँ सबसे अधिक चमकना और सम्मान पाना चाहते हैं; जीवन के उस हिस्से की पहचान आपका आत्मविश्वास बढ़ाती है।

❖ आपकी शक्तियाँ, अनदेखी कमज़ोरियाँ और तनाव में आपका स्वभाव

आपका सबसे बलवान ग्रह सूर्य है, जो आपको आत्मविश्वास, नेतृत्व और उद्देश्य की भावना देता है। लोग अक्सर आपको ज़िम्मेदारी सौंपते हैं और निर्णय के लिए आपकी ओर देखते हैं। इसके ठीक बाद बुध है, जो तेज़ और व्यावहारिक बुद्धि, अच्छी अभिव्यक्ति और अंकों या शब्दों की कुशलता जोड़ता है। आपकी कुंडली में शश योग है (पाँच 'महापुरुष' योगों में से एक, जो केंद्र में बलवान शनि से बनता है), जिसे परंपरा आपके व्यक्तित्व में स्पष्ट अनुशासित, सहनशील पक्ष मानती है। लग्न या चंद्र से दशम में शुभ ग्रह है (अमल योग), जो परंपरा में साफ़ छवि का संकेत है: लोग आपकी नीयत पर भरोसा करते हैं। आपकी कुंडली में राजयोग है, यानी कर्म और भाग्य के भावों का जुड़ाव; परंपरा इसे नेतृत्व और पहचान की क्षमता मानती है, जो प्रयास से बढ़ती है।

आपकी अनदेखी कमज़ोरी अधीरता हो सकती है: आप सारे तथ्य आने से पहले निर्णय ले सकते हैं, या कोई तीखी बात कहकर भूल जाते हैं जबकि सामने वाला उसे याद रखता है। जिस क्षेत्र को अधिक अभ्यास चाहिए वह शुक्र से जुड़ा है: संबंध, आराम और आत्म-सम्मान। प्रेम में आपके मानक बहुत ऊँचे हो सकते हैं, या जो पास है उसका आनंद लेना कठिन लग सकता है। तनाव में आप बेचैन या चिड़चिड़े हो जाते हैं और तुरंत कुछ न कुछ करना चाहते हैं। शारीरिक गतिविधि, तेज़ सैर या कोई एक छोटा काम पूरा करना आपको बातचीत से भी जल्दी सहज कर देता है।

मुख्य बात

आप तब सबसे अच्छे होते हैं जब अपनी स्वाभाविक अग्नि तत्व वाली शैली पर भरोसा करते हैं; सफल होने के लिए आपको कोई और बनने की ज़रूरत नहीं। जब कुछ ठीक न लगे, तो प्रायः इसलिए कि आप उसे दबा रहे थे।

❖ आप निर्णय कैसे लेते हैं और बात कैसे करते हैं

यह सोच और वाणी के ग्रह बुध से आता है, जो सिंह में है। आप जल्दी निर्णय लेते हैं और अपने मन पर भरोसा करते हैं। आपने देखा होगा कि पहला अंदाज़ा अक्सर सही निकलता है, पर किसी बड़े वादे से पहले एक रात रुक जाना कभी-कभार की जल्दबाज़ी से बचा लेता है। आप सीधे और जोश के साथ बात करते हैं; लोग जानते हैं कि वे आपके साथ कहाँ खड़े हैं। संदेश नहीं, कहने का ढंग थोड़ा नरम करने से आप कहीं अधिक प्रभावशाली बनते हैं। बुध आपके प्रथम भाव में है, जो आपका शरीर, ऊर्जा, स्वभाव और लोगों पर पड़ने वाली पहली छाप का क्षेत्र है, इसलिए आपकी योजना, चिंता और बातचीत का बड़ा हिस्सा इन्हीं बातों की ओर मुड़ता है। भावनात्मक रूप से अग्नि तत्व का चंद्र आगे बढ़ना चाहता है: यदि निर्णय लटकता रहे तो आप केवल इंतज़ार ख़त्म करने के लिए उसे ले सकते हैं, इसलिए अपने आवेग से एक दिन बाद की समय-सीमा रखें।

❖ आप प्रेम कैसे करते हैं

यह स्नेह के ग्रह शुक्र से आता है, जो कन्या में है। प्रेम में आप वफ़ादार, स्थिर और व्यावहारिक देखभाल से स्नेह जताने वाले हैं: खाना बनाना, बातें याद रखना, साथ खड़े रहना। आपको भरोसा करने में समय लगता है और लगातार निभाने वाला साथी चाहिए; बड़े शब्द आपके लिए भरोसे से कम मायने रखते हैं। शुक्र आपके द्वितीय भाव (बचत, परिवार के संबंध, आपकी वाणी और खान-पान की आदतें) में है, जो दिखाता है कि आपको कहाँ आनंद और सहजता मिलती है, और लोग आपको कहाँ सबसे आकर्षक पाते हैं। आपका सप्तम (साझेदारी) भाव वायु राशि में है, इसलिए मित्रता और बातचीत आपके रिश्तों के केंद्र में हैं; आपको ऐसा साथी चाहिए जिससे हर बात हो सके और जो आपको खुलकर साँस लेने दे। साथी से आपके चंद्र को उत्साह और ईमानदारी चाहिए।

❖ आप धन कैसे सँभालते हैं

यह आपके द्वितीय (बचत) भाव से आता है, जो कन्या राशि का है। धन के मामले में आप सावधान हैं और मात्रा से अधिक गुणवत्ता को महत्व देते हैं। आपको बचत बढ़ते देखना अच्छा लगता है और कर्ज़ से बेचैनी होती है; समय के साथ यह धैर्य एक बड़ी पूँजी है। आपके द्वितीय भाव का स्वामी बुध आपके प्रथम भाव (आप स्वयं) में है, इसलिए धन प्रायः आप स्वयं के माध्यम से आता है और उन्हीं पर ख़र्च भी होता है। आपका एकादश (लाभ) भाव वायु राशि में है: संपर्क, विचार और आपके परिचित लोग यह तय करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं कि अवसर आप तक कैसे पहुँचते हैं। धन का पारंपरिक कारक गुरु कुछ दबाव में है, इसलिए अति-आशावाद और बहुत अच्छी लगने वाली सलाह से सावधान रहें; धीमे, अच्छी तरह समझे गए निवेश आपके लिए सबसे उपयुक्त हैं।

❖ आपकी कार्य-शैली

यह आपके दशम (कर्म) भाव से आता है, जो वृषभ राशि का है। काम में आप व्यवस्थित, भरोसेमंद और धैर्यवान हैं। आपने देखा होगा कि दूसरों का शुरू किया काम अक्सर आप ही पूरा करते हैं, और लगातार बदलाव के बजाय स्पष्ट अपेक्षाएँ और उचित प्रतिफल पसंद करते हैं। आपके दशम भाव का स्वामी शुक्र आपके द्वितीय भाव (संचित धन और परिवार) में है, इसलिए आपका काम प्रायः संचित धन और परिवार से जुड़ता है या आपको उनकी ओर ले जाता है। आपका सबसे बलवान ग्रह सूर्य काम में एक भरोसेमंद प्रतिभा जोड़ता है: आत्मविश्वास, नेतृत्व और उद्देश्य की भावना। कर्म और ज़िम्मेदारी का ग्रह शनि आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है, इसलिए लंबा, धैर्यपूर्ण प्रयास आपको फल देता है और भरोसेमंदी आपकी पहचान बनती है।

❖ आप अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में, और किसी कठिन दिन

सब मिलाकर तस्वीर ऐसे व्यक्ति की है जो अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में स्पष्ट प्रतिफल वाला स्थिर, सावधान काम पसंद करते हैं, वफ़ादारी और व्यावहारिक देखभाल से प्रेम करते हैं और सावधानी से बचाते और गुणवत्ता को महत्व देते हैं। किसी कठिन दिन आप तनाव में तुरंत कुछ करना चाहते हैं। इनमें से कोई भी "असली" आप नहीं है; दोनों एक ही स्वभाव हैं, बस अलग दबाव में। लक्ष्य कोई और व्यक्ति बनना नहीं, बल्कि यह पहचानना है कि आप किस ओर झुक रहे हैं और उस अवस्था को जो चाहिए वह देना: बोझ ज़्यादा हो तो आराम और थोड़ी जगह, अटके हों तो एक छोटा ठोस क़दम, और कुछ अकेले ढो रहे हों तो किसी से ईमानदार बातचीत।

आज़माकर देखें

एक सप्ताह यह आज़माएँ: स्नेह सरल और नियमित तरीक़ों से दिखाएँ, और ख़ुद को भी उतना ही महत्व दें जितना दूसरों को। देखें कि आपके मन और संबंधों में क्या बदलता है।

यह आपके सिंह लग्न, धनु राशि के चंद्र (मूल नक्षत्र), सिंह के सूर्य और आपके सबसे बलवान ग्रहों सूर्य और बुध से पढ़ा गया है।

Rohan: व्यक्तित्व

शायद आप वही व्यक्ति हैं जिसकी ओर लोग तब देखते हैं जब माहौल को गर्मजोशी, दिशा या थोड़े साहस की ज़रूरत हो।

❖ दूसरे आपको कैसे देखते हैं, और आप भीतर कैसा महसूस करते हैं

इसका एक हिस्सा ऊपर Ananya के वर्णन से मेल खाता है; Rohan के लिए जो अलग है, वह यह है। मकर राशि का चंद्र आपका निजी पक्ष दिखाता है। भीतर आपको स्थिरता चाहिए। अचानक बदलाव आपको जितना दिखाते हैं उससे अधिक बेचैन करते हैं, और दिनचर्या, जाना-पहचाना भोजन और भरोसेमंद लोग आपको सबसे अच्छा महसूस कराते हैं। चंद्र आपके षष्ठ भाव में है, जो रोज़ का काम, स्वास्थ्य की आदतें, प्रतियोगिता, ऋण और विवाद का क्षेत्र है; वहाँ जो होता है वह आपके मन को सबसे अधिक छूता है, और वहीं आप सुकून भी खोजते हैं।

Rohan इसमें से कुछ Ananya के साथ साझा करते हैं, पर ज़ोर अलग है। आपका बाहरी स्वभाव और भीतरी ज़रूरतें काफ़ी अलग हैं, इसलिए जो लोग आपको सतही तौर पर जानते हैं वे आपको ग़लत समझ सकते हैं। आपकी आत्मविश्वासी या संयत सतह देखने वाला शायद न समझे कि भीतर कितना कुछ चल रहा है। कुछ भरोसेमंद लोगों को अपना भीतरी पक्ष दिखाने से संबंध बहुत आसान हो जाते हैं। आपका जन्म नक्षत्र श्रवण अपना अलग रंग जोड़ता है: परंपरा इसे इन गुणों से जोड़ती है: ध्यान से सुनना; ज्ञान और विद्या; संपर्क बनाना। भीतर से (मकर में सूर्य) आप कुछ स्थायी हासिल करना और उसके लिए सम्मान पाना चाहते हैं; धीरे-धीरे ऊपर चढ़ते हुए आप सबसे सहज होते हैं। आपका सूर्य षष्ठ भाव (रोज़ का काम, स्वास्थ्य की आदतें, प्रतियोगिता, ऋण और विवाद) में है, जो दिखाता है कि आप कहाँ सबसे अधिक चमकना और सम्मान पाना चाहते हैं; जीवन के उस हिस्से की पहचान आपका आत्मविश्वास बढ़ाती है।

❖ आपकी शक्तियाँ, अनदेखी कमज़ोरियाँ और तनाव में आपका स्वभाव

यहाँ Rohan और Ananya आंशिक रूप से ही मेल खाते हैं। आपका सबसे बलवान ग्रह गुरु है, जो आपको विवेक, अच्छा निर्णय और दूसरों का मार्गदर्शन करने की क्षमता देता है। लोग आपसे सलाह माँगते हैं, और अक्सर सही समय पर अच्छे गुरु मिल जाते हैं। इसके ठीक बाद सूर्य है, जो आत्मविश्वास, नेतृत्व और उद्देश्य की भावना जोड़ता है।

Ananya का कुछ वर्णन यहाँ लागू होता है; बाक़ी Rohan का अपना है। जिस क्षेत्र को अधिक अभ्यास चाहिए वह बुध से जुड़ा है: एकाग्रता और संवाद। आप अपने निर्णयों पर बार-बार संदेह कर सकते हैं, या जल्दबाज़ी में आपकी बात ग़लत समझी जा सकती है। तनाव में आप चुप हो जाते हैं, अड़ जाते हैं और और भी मेहनत करने लगते हैं, कभी-कभी थकान को अनदेखा करते हुए। आराम, अच्छा भोजन और तय दिनचर्या आपको किसी भी उपदेश से अधिक शांत करते हैं।

मुख्य बात

आप तब सबसे अच्छे होते हैं जब आपकी अग्नि तत्व वाली बाहरी ऊर्जा और पृथ्वी तत्व वाली भीतरी ज़रूरतें, दोनों का सम्मान हो। जब कुछ ठीक न लगे, देखें कि किसे अनदेखा किया है।

❖ आप निर्णय कैसे लेते हैं और बात कैसे करते हैं

यह सोच और वाणी के ग्रह बुध से आता है, जो मकर में है। आप व्यावहारिक ढंग से और सोच-समझकर निर्णय लेते हैं। आप विकल्पों की तुलना करना, लागत देखना और दूर तक सोचना पसंद करते हैं, इसलिए बड़े निर्णयों में समय लगता है, पर पछतावा कम ही होता है। आप साफ़ और समझदारी से बात करते हैं, और जो कहते हैं वही करते हैं। लोग आपकी बात पर भरोसा करते हैं; केवल निष्कर्ष नहीं, अपना तर्क भी बताने से वे आपके साथ चल पाते हैं। बुध आपके षष्ठ भाव में है, जो रोज़ का काम, स्वास्थ्य की आदतें, प्रतियोगिता, ऋण और विवाद का क्षेत्र है, इसलिए आपकी योजना, चिंता और बातचीत का बड़ा हिस्सा इन्हीं बातों की ओर मुड़ता है। भावनात्मक रूप से पृथ्वी तत्व का चंद्र सुरक्षा चाहता है: जब आपको पता हो कि लागत क्या है और क्या वैसा ही रहेगा, तब आप सबसे अच्छा निर्णय लेते हैं, इसलिए चुनने से पहले व्यावहारिक तथ्य लिख लें।

❖ आप प्रेम कैसे करते हैं

यह स्नेह के ग्रह शुक्र से आता है, जो धनु में है। प्रेम में आप गर्मजोशी भरे, जोशीले और उदार हैं, और इसे काम से दिखाना पसंद करते हैं: योजनाएँ, सरप्राइज़, सुरक्षा। आपको ऐसा साथी चाहिए जो आपकी ऊर्जा के साथ चल सके और आपकी आत्मा को बाँधने के बजाय सराहे। शुक्र आपके पंचम भाव (बुद्धि, पढ़ाई, रचनात्मक काम, प्रेम और संतान) में है, जो दिखाता है कि आपको कहाँ आनंद और सहजता मिलती है, और लोग आपको कहाँ सबसे आकर्षक पाते हैं। साथी से आपके चंद्र को निरंतरता और शांति चाहिए।

❖ आप धन कैसे सँभालते हैं

आपके द्वितीय भाव का स्वामी बुध आपके षष्ठ भाव (दिनचर्या और समस्या-समाधान) में है, इसलिए धन प्रायः दिनचर्या और समस्या-समाधान के माध्यम से आता है और उन्हीं पर ख़र्च भी होता है। धन और सौभाग्य का पारंपरिक कारक गुरु आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है, जिसे परंपरा सही समय पर सहायता मिलने का संकेत मानती है, बशर्ते आप उदार रहें और सीखते रहें।

❖ आपकी कार्य-शैली

आपके दशम भाव का स्वामी शुक्र आपके पंचम भाव (रचनात्मकता और विद्या) में है, इसलिए आपका काम प्रायः रचनात्मकता और विद्या से जुड़ता है या आपको उनकी ओर ले जाता है। आपका सबसे बलवान ग्रह गुरु काम में एक भरोसेमंद प्रतिभा जोड़ता है: विवेक, अच्छा निर्णय और दूसरों का मार्गदर्शन करने की क्षमता।

❖ आप अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में, और किसी कठिन दिन

सब मिलाकर तस्वीर ऐसे व्यक्ति की है जो अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में स्पष्ट प्रतिफल वाला स्थिर, सावधान काम पसंद करते हैं, गर्मजोशी और काम से प्रेम जताते हैं और सावधानी से बचाते और गुणवत्ता को महत्व देते हैं। किसी कठिन दिन आप तनाव में अड़कर और मेहनत करने लगते हैं।

आज़माकर देखें

एक सप्ताह यह आज़माएँ: कुछ महत्वपूर्ण कहते या हस्ताक्षर करते समय धीमे चलें, और संदेश भेजने से पहले दोबारा पढ़ें। देखें कि आपके मन और संबंधों में क्या बदलता है।

यह आपके सिंह लग्न, मकर राशि के चंद्र (श्रवण नक्षत्र), मकर के सूर्य और आपके सबसे बलवान ग्रहों गुरु और सूर्य से पढ़ा गया है।

आप दोनों के व्यक्तित्व साथ कैसे चलते हैं

आप दोनों के व्यक्तित्व साथ कैसे चलते हैं

दो लोग कभी कुंडलियों के रूप में नहीं, व्यक्तित्वों के रूप में मिलते हैं। यह अध्याय आप दोनों के व्यक्तित्व-चित्र साथ रखकर दिखाता है कि आप कहाँ स्वाभाविक रूप से जुड़ते हैं और कहाँ धैर्य चाहिए।

भावनात्मक रूप से (Ananya का चंद्र धनु में, Rohan का चंद्र मकर में): एक को काम और रोमांच चाहिए, दूसरे को स्थिरता; अगर अग्नि वाला सुरक्षा की ज़रूरत का सम्मान करे और पृथ्वी वाला थोड़ा रोमांच आने दे, तो यह सुंदर संतुलन बनता है।

रोज़ के स्वभाव में (Ananya: सिंह, Rohan: सिंह): एक टीम में दो नेता: शानदार ऊर्जा, बशर्ते आप बारी-बारी से निर्णय लें और एक-दूसरे की जीत का जश्न मनाएँ।

बातचीत में Ananya प्रायः सीधे और जल्दी बोलते हैं, जबकि Rohan प्रायः साफ़ और पक्का होने पर ही बोलते हैं। यह जानना बहुत सी ग़लतफ़हमियाँ बचाता है: जो एक को रूखा या अस्पष्ट लगता है, वह दूसरे की स्वाभाविक शैली भर है।

आज़माकर देखें

हफ़्ते में एक बार एक-दूसरे से पूछें: "इस हफ़्ते तुम्हें मुझसे क्या चाहिए था जो नहीं मिला?" बचाव किए बिना सुनें। शुरुआत में किए छोटे बदलाव दोनों व्यक्तित्वों को सहज रखते हैं।

दोनों जन्म पत्रिकाएँ

दोनों जन्म पत्रिकाएँ

यह आप दोनों के लिए क्यों मायने रखता है: यह अध्याय आपकी कुंडलियों की तुलना करता है ताकि आप देख सकें कि आप स्वाभाविक रूप से कहाँ मिलते हैं और कहाँ थोड़ा धैर्य मदद करता है।

नीचे की दोनों पत्रिकाएँ हर व्यक्ति के जन्म विवरण से पारंपरिक रीति से तैयार की गई हैं।

विवरण	Ananya	Rohan
नाम	Ananya Sample	Rohan Example
जन्म तिथि (दिनांक)	17 अगस्त 1994	3 फ़रवरी 1992
जन्म समय	07:42 (स्थानीय समय)	21:15 (स्थानीय समय)
जन्म स्थान	Jaipur, Rajasthan, India	Pune, Maharashtra, India
वार	बुधवार	सोमवार
जन्म तिथि	शुक्ल पक्ष एकादशी (11)	कृष्ण पक्ष अमावस्या
नक्षत्र	मूल · पद 3	श्रवण · पद 3
योग	विष्कुंभ	व्यतीपात
करण	विष्टि (भद्रा)	नाग
लग्न	सिंह	सिंह
राशि (चंद्र राशि)	धनु	मकर
चांद्र मास	श्रावण (अमांत)	पौष (अमांत)

विवरण	Ananya	Rohan
संवत	विक्रम संवत 2051 · शक 1916	विक्रम संवत 2048 · शक 1913

दोनों जन्म कुंडलियाँ

यह आप दोनों के लिए क्यों मायने रखता है: अनुकूलता पास या फ़ेल होने वाला अंक नहीं है; यह अध्याय दिखाता है कि आप कहाँ स्वाभाविक रूप से समझेंगे और कहाँ धैर्य रखना है।

❖ Ananya

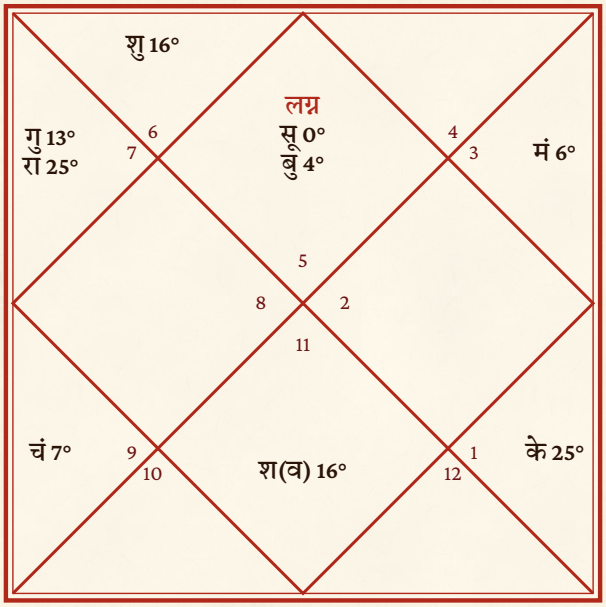

जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

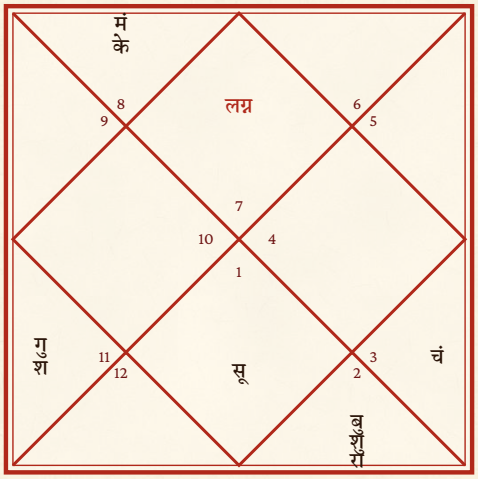

D9: नवांश

❖ Rohan

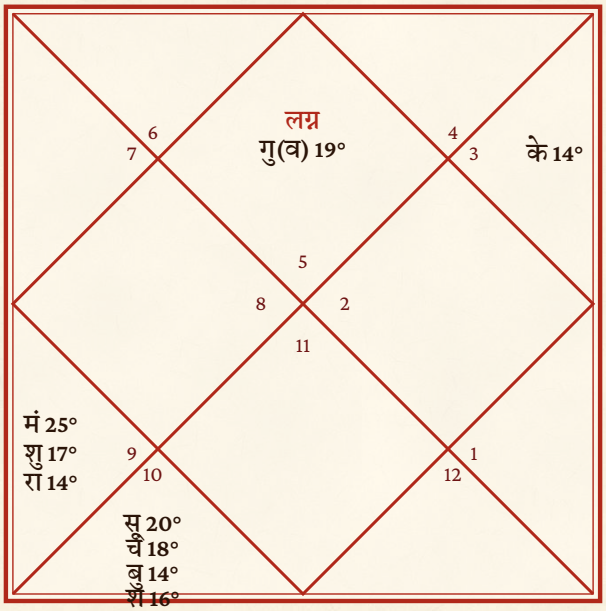

जन्म कुंडली (D1, राशि): उत्तर भारतीय शैली

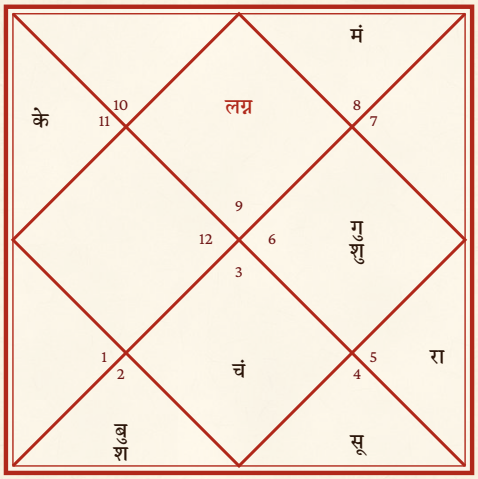

D9: नवांश

व्यक्ति	ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र / पद	भाव	बल
Ananya	सूर्य	सिंह	0°11′	मघा 1	1	स्वराशि
Ananya	चंद्र	धनु	7°19′	मूल 3	5	सम राशि
Ananya	मंगल	मिथुन	6°24′	मृगशिरा 4	11	शत्रु राशि
Ananya	बुध	सिंह	4°23′	मघा 2	1	मित्र राशि
Ananya	गुरु	तुला	13°58′	स्वाति 3	3	शत्रु राशि
Ananya	शुक्र	कन्या	16°00′	हस्त 2	2	नीच
Ananya	शनि (व)	कुंभ	16°23′	शतभिषा 3	7	स्वराशि
Ananya	राहु	तुला	25°14′	विशाखा 2	3	छाया ग्रह
Ananya	केतु	मेष	25°14′	भरणी 4	9	छाया ग्रह
Rohan	सूर्य	मकर	20°19′	श्रवण 4	6	शत्रु राशि
Rohan	चंद्र	मकर	18°51′	श्रवण 3	6	सम राशि
Rohan	मंगल	धनु	25°11′	पूर्वाषाढ़ा 4	5	मित्र राशि
Rohan	बुध	मकर	14°06′	श्रवण 2	6	सम राशि
Rohan	गुरु (व)	सिंह	19°00′	पूर्वा फाल्गुनी 2	1	मित्र राशि
Rohan	शुक्र	धनु	17°44′	पूर्वाषाढ़ा 2	5	सम राशि
Rohan	शनि	मकर	16°03′	श्रवण 2	6	स्वराशि
Rohan	राहु	धनु	14°16′	पूर्वाषाढ़ा 1	5	छाया ग्रह
Rohan	केतु	मिथुन	14°16′	आर्द्रा 3	11	छाया ग्रह

मुख्य कारकों की तुलना

मुख्य कारकों की तुलना

> यह आप दोनों के लिए क्यों मायने रखता है: अधिकांश असहमतियाँ बुरी नीयत से नहीं, अलग शैलियों से आती हैं; यह अध्याय उन शैलियों को नाम देता है ताकि आप उन पर बात कर सकें।

सारणी सबसे महत्वपूर्ण स्थितियों को साथ-साथ रखती है।

विवरण	Ananya	Rohan
लग्न	सिंह	सिंह
चंद्र (राशि · नक्षत्र)	धनु · मूल 3	मकर · श्रवण 3
नक्षत्र स्वामी	केतु	चंद्र
वर्तमान दशा	चंद्र / गुरु	गुरु / बुध
एकादश भाव की राशि	मिथुन	मिथुन
एकादश भाव का स्वामी	बुध, प्रथम भाव में, सिंह (मित्र राशि)	बुध, षष्ठ भाव में, मकर (सम राशि)
तृतीय भाव की राशि	तुला	तुला
तृतीय भाव का स्वामी	शुक्र, द्वितीय भाव में, कन्या (नीच)	शुक्र, पंचम भाव में, धनु (सम राशि)
पंचम भाव की राशि	धनु	धनु
पंचम भाव का स्वामी	गुरु, तृतीय भाव में, तुला (शत्रु राशि)	गुरु, प्रथम भाव में, सिंह (मित्र राशि)
सप्तम भाव की राशि	कुंभ	कुंभ
सप्तम भाव का स्वामी	शनि, सप्तम भाव में, कुंभ (स्वराशि)	शनि, षष्ठ भाव में, मकर (स्वराशि)
बुध	सिंह, प्रथम भाव (मित्र राशि)	मकर, षष्ठ भाव (सम राशि)
चंद्र	धनु, पंचम भाव (सम राशि)	मकर, षष्ठ भाव (सम राशि)
सूर्य	सिंह, प्रथम भाव (स्वराशि)	मकर, षष्ठ भाव (शत्रु राशि)

❖ चंद्र से चंद्र

Ananya का चंद्र धनु (अग्नि) में और Rohan का मकर (पृथ्वी) में है; Ananya के चंद्र से गिनने पर Rohan का चंद्र द्वितीय राशि में है। ये तत्व अलग लय में चलते हैं, इसलिए भावनाओं को स्पष्ट शब्दों में कहना सहायक है।

बुध: Ananya के लिए सिंह, प्रथम भाव (मित्र राशि), Rohan के लिए मकर, षष्ठ भाव (सम राशि)। यह Ananya की कुंडली में अधिक प्रबल है, इसलिए मित्रता के इस पक्ष को प्रायः Ananya सँभालते हैं।

चंद्र: Ananya के लिए धनु, पंचम भाव (सम राशि), Rohan के लिए मकर, षष्ठ भाव (सम राशि)। दोनों में यह लगभग समान बल का है।

सूर्य: Ananya के लिए सिंह, प्रथम भाव (स्वराशि), Rohan के लिए मकर, षष्ठ भाव (शत्रु राशि)।



स्वभाव का मेल

स्वभाव का मेल

यह आप दोनों के लिए क्यों मायने रखता है: दो कुंडलियों का समय बताता है कि कब आप दोनों व्यस्त, तनाव में या बदलाव के लिए तैयार हो सकते हैं; बड़े निर्णय दोनों को ध्यान में रखकर लें।

Ananya Sample	Rohan Example	संबंधित कूटों पर गुण
धनु · मूल	मकर · श्रवण	6 / 16

मित्रता के लिए परंपरा मुख्य रूप से मानसिक तालमेल (ग्रह मैत्री), स्वभाव (गण), परस्पर प्रभाव (वश्य) और नक्षत्र-संबंध (तारा) देखती है। नाड़ी और भकूट जैसे विवाह-विशिष्ट कूट इसमें शामिल नहीं हैं।

कूट	गुण	विवरण	यह क्या दर्शाता है
वश्य	0.5 / 2	जलचर / मानव	परस्पर आकर्षण और प्रभाव।
तारा	1.5 / 3	श्रवण / मूल	जन्म-नक्षत्रों का सामंजस्य; प्रायः साथ में सुख-सौभाग्य के रूप में पढ़ा जाता है।
ग्रह मैत्री	3 / 5	शनि / गुरु	दोनों चंद्र-राशि स्वामियों की मित्रता से मानसिक मेल।
गण	1 / 6	देव / राक्षस	स्वभाव: देव (सौम्य), मनुष्य (संतुलित) या राक्षस (तीव्र)।

Ananya Sample: शैली और शक्तियाँ

Ananya Sample: शैली और शक्तियाँ

यह आप दोनों के लिए क्यों मायने रखता है: हर व्यक्ति की अपनी कुंडली बताती है कि वह रिश्ते में क्या लाता है; साथी के पृष्ठ पढ़ना उन्हें बेहतर समझने का तरीक़ा है।

लग्न	चंद्र
सिंह	धनु

बुध
सिंह · मित्र राशि

धनु का प्रतीक दूर लक्ष्य साधता धनुर्धर है, यह राशि दिशा और अर्थ की है।

शक्तियाँ: आशावाद और आस्था; ईमानदारी और सिद्धांत; ज्ञान-प्रेम; उदार, प्रोत्साहक।

निकट संबंधों में: धनु को प्रेम में स्वतंत्रता और साझा रोमांच चाहिए। विकास और बड़ी बातचीत का साथ देने वाला साथी संबंध जीवंत रखता है।

Rohan Example: शैली और शक्तियाँ

Rohan Example: शैली और शक्तियाँ

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan Example: शैली और शक्तियाँ" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

लग्न	चंद्र
सिंह	मकर

बुध
मकर · सम राशि

मकर लंबे क्षितिज वाली महत्वाकांक्षा है।

शक्तियाँ: अनुशासन और धैर्य; व्यावहारिक महत्वाकांक्षा; ज़िम्मेदारी; सूक्ष्म हास्य।

निकट संबंधों में: मकर प्रतिबद्धता को गंभीरता से लेता है और भरोसे व ज़िम्मेदारी से प्रेम जताता है। धीरे खुलता है पर स्थिर साथी बनता है।

साथ मिलकर अच्छा काम करना

साथ मिलकर अच्छा काम करना

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "साथ मिलकर अच्छा काम करना" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

आपके चंद्र-राशि स्वामी गुरु और शनि हैं; गुरु शनि को सम मानता है, और शनि गुरु को सम मानता है।

एक-दूसरे की गति के लिए जगह बनाएँ: मित्रताएँ तब टिकती हैं जब दोनों को लगे कि उन्हें समझा जा रहा है, संभाला नहीं जा रहा।

अनुकूलता के अंक केवल पारंपरिक संकेत हैं। सच्ची मित्रता विश्वास, समय और साझा अनुभवों पर टिकी होती है।

अष्टकूट: कूट-दर-कूट

अष्टकूट: कूट-दर-कूट

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "अष्टकूट: कूट-दर-कूट" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

मित्रता के लिए सबसे महत्वपूर्ण कूट ग्रह मैत्री, गण, वश्य और तारा हैं; विवाह-विशेष कूट पूर्णता के लिए दिखाए गए हैं। पारंपरिक नियम से Rohan का चंद्र पहली कुंडली और Ananya का दूसरी माना गया है।

कूट	अधिकतम	गुण
वर्ण	1	0
वश्य	2	0.5
तारा	3	1.5
योनि	4	2
ग्रह मैत्री	5	3
गण	6	1
भकूट	7	0
नाड़ी	8	8
योग	**36**	**16**

कुल: 36 में से 16, जिसे परंपरा 18 की पारंपरिक सीमा से नीचे कहती है। सबसे प्रबल कूट: नाड़ी और ग्रह मैत्री। सबसे निर्बल: वर्ण और भकूट।

❖ वर्ण · 0 / 1

Rohan की चंद्र राशि से वैश्य वर्ण और Ananya की से क्षत्रिय वर्ण आता है। परंपरा यह गुण तब देती है जब पहला वर्ण दूसरे के बराबर या ऊँचा हो; यहाँ 1 में से 0 गुण मिलते हैं। वर्ण को दृष्टिकोण और कर्तव्य-भावना का मेल माना जाता है।

❖ वश्य · 0.5 / 2

Rohan का चंद्र जलचर राशि में और Ananya का मानव राशि में है। ये समूह बताते हैं कि स्वाभाविक रूप से कौन किसे प्रभावित करता है; इस जोड़ी को 2 में से 0.5 गुण मिलते हैं।

❖ तारा · 1.5 / 3

Rohan के जन्म नक्षत्र श्रवण से Ananya के मूल तक गिनने पर वध तारा आती है, और उलटा गिनने पर क्षेम तारा। विपत, प्रत्यरि और वध (तीसरी, पाँचवीं और सातवीं) कठिन ताराएँ हैं; जो दिशा इनसे बचती है उसे 1.5 गुण मिलते हैं, इसलिए तारा को 3 में से 1.5 गुण मिलते हैं।

❖ योनि · 2 / 4

नक्षत्र-योनि Rohan के लिए वानर और Ananya के लिए श्वान है। योनि सहज सुविधा और शारीरिक सामंजस्य को पढ़ती है; इस जोड़ी को 4 में से 2 गुण मिलते हैं।

❖ ग्रह मैत्री · 3 / 5

चंद्र-राशि स्वामी Rohan के लिए शनि और Ananya के लिए गुरु हैं। शनि गुरु को सम मानता है, और गुरु शनि को सम; मन के मेल की ग्रह मैत्री को 5 में से 3 गुण मिलते हैं।

❖ गण · 1 / 6

Rohan देव गण के और Ananya राक्षस गण के हैं (जन्म नक्षत्र से)। गण स्वभाव की तुलना करता है: देव सौम्य, मनुष्य संतुलित, राक्षस तीव्र। इस जोड़ी को 6 में से 1 गुण मिलते हैं।

❖ भकूट · 0 / 7

दोनों ओर से गिनने पर चंद्र राशियाँ 12 और 2 राशि दूर हैं। यह 2/12 संबंध है, जिसे परंपरा भकूट दोष कहती है। भकूट को 7 में से 0 गुण मिलते हैं।

❖ नाड़ी · 8 / 8

Rohan की नाड़ी अंत्य और Ananya की आदि है। अलग नाड़ियों को पूरे गुण मिलते हैं। नाड़ी को 8 में से 8 गुण मिलते हैं।

दोनों पक्षों की मांगलिक जाँच

दोनों पक्षों की मांगलिक जाँच

> यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: “दोनों पक्षों की मांगलिक जाँच” आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

हर कुंडली में मंगल को तीन संदर्भ-बिंदुओं से गिना जाता है: लग्न, चंद्र और शुक्र। जब मंगल इनमें से किसी से 1, 2, 4, 7, 8 या 12वें स्थान पर हो, तो परंपरा कुंडली को मांगलिक कहती है, और कई परिहार भी बताती है।

व्यक्ति	किससे गिना	मंगल का भाव	मांगलिक
Ananya	लग्न	एकादश	नहीं
Ananya	चंद्र	सप्तम	हाँ
Ananya	शुक्र	दशम	नहीं
Rohan	लग्न	पंचम	नहीं
Rohan	चंद्र	द्वादश	हाँ
Rohan	शुक्र	प्रथम	हाँ

Ananya: मंगल मिथुन राशि में, एकादश भाव में है (शत्रु राशि)। चंद्र से गिनने पर मंगल मांगलिक नियम में आता है। उपस्थित पारंपरिक परिहार: गुरु की मंगल पर दृष्टि।

Rohan: मंगल धनु राशि में, पंचम भाव में है (मित्र राशि)। चंद्र और शुक्र से गिनने पर मंगल मांगलिक नियम में आता है।

दोनों कुंडलियाँ मांगलिक हैं या कोई नहीं, जिसे परंपरा संतुलित मानती है।

> मांगलिक स्थिति केवल एक पारंपरिक वर्गीकरण है। यह किसी संबंध के परिणाम की भविष्यवाणी नहीं करती, और किसी अनुष्ठान या ख़रीद की आवश्यकता नहीं है।

भाव-आच्छादन: Ananya के ग्रह Rohan की कुंडली में

भाव-आच्छादन: Ananya के ग्रह Rohan की कुंडली में

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "भाव-आच्छादन: Ananya के ग्रह Rohan की कुंडली में" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

Ananya के हर ग्रह को Rohan की कुंडली में रखा गया है, भाव Rohan के लग्न से गिने गए हैं। भाव बताता है कि Ananya का वह ग्रह Rohan के जीवन के किस क्षेत्र को छूता है।

ग्रह	राशि	Rohan का भाव	जीवन-क्षेत्र
सूर्य	सिंह	प्रथम भाव	स्वयं और स्वास्थ्य
चंद्र	धनु	पंचम भाव	संतान और बुद्धि
मंगल	मिथुन	एकादश भाव	लाभ और नेटवर्क
बुध	सिंह	प्रथम भाव	स्वयं और स्वास्थ्य
गुरु	तुला	तृतीय भाव	पराक्रम और भाई-बहन
शुक्र	कन्या	द्वितीय भाव	धन और परिवार
शनि	कुंभ	सप्तम भाव	विवाह और साझेदार
राहु	तुला	तृतीय भाव	पराक्रम और भाई-बहन
केतु	मेष	नवम भाव	भाग्य और गुरु

सिंह में Ananya का सूर्य Rohan के प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में पड़ता है। सूर्य गर्मजोशी, अधिकार और दृश्यता लाता है। केंद्र के संपर्क रोज़मर्रा के जीवन में महसूस होते हैं, इसलिए Rohan इस प्रभाव को जल्दी और बार-बार देखते हैं।

धनु में Ananya का चंद्र Rohan के पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में पड़ता है। चंद्र देखभाल और भावनात्मक तालमेल लाता है। त्रिकोण के संपर्क स्वाभाविक और सौभाग्यशाली लगते हैं; यह प्रायः सहज जुड़ाव होता है। यह मित्रता के लिए सबसे महत्वपूर्ण भावों में से एक है, इसलिए इस संपर्क का वज़न अधिक है। नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से यहाँ चंद्र दोनों कुंडलियों के बीच सबसे सहायक संपर्कों में है।

मिथुन में Ananya का मंगल Rohan के एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में पड़ता है। मंगल ऊर्जा, प्रेरणा और कभी-कभी घर्षण लाता है। उपचय के संपर्क समय के साथ सुधरते हैं; जितना आप इस पर काम करें, यह जुड़ाव उतना बढ़ता है।

सिंह में Ananya का बुध Rohan के प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में पड़ता है। बुध बातचीत, हास्य और विचार लाता है। नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से यहाँ बुध दोनों कुंडलियों के बीच सबसे सहायक संपर्कों में है।

तुला में Ananya का गुरु Rohan के तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में पड़ता है। गुरु प्रोत्साहन, ज्ञान और विकास लाता है।

कन्या में Ananya का शुक्र Rohan के द्वितीय भाव (धन और परिवार) में पड़ता है। शुक्र स्नेह, आनंद और सामंजस्य लाता है। द्वितीय भाव इसे साझा संसाधनों, वाणी और पारिवारिक मूल्यों से जोड़ता है।

कुंभ में Ananya का शनि Rohan के सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में पड़ता है। शनि प्रतिबद्धता, ढाँचा और धैर्य की परीक्षा लाता है।

तुला में Ananya का राहु Rohan के तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में पड़ता है। राहु आकर्षण, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागत खिंचाव लाता है।

मेष में Ananya का केतु Rohan के नवम भाव (भाग्य और गुरु) में पड़ता है। केतु वैराग्य और पुरानी पहचान का भाव लाता है।

भाव-आच्छादन: Rohan के ग्रह Ananya की कुंडली में

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "भाव-आच्छादन: Rohan के ग्रह Ananya की कुंडली में" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

Rohan के हर ग्रह को Ananya की कुंडली में रखा गया है, भाव Ananya के लग्न से गिने गए हैं। भाव बताता है कि Rohan का वह ग्रह Ananya के जीवन के किस क्षेत्र को छूता है।

ग्रह	राशि	Ananya का भाव	जीवन-क्षेत्र
सूर्य	मकर	षष्ठ भाव	सेवा और बाधाएँ
चंद्र	मकर	षष्ठ भाव	सेवा और बाधाएँ
मंगल	धनु	पंचम भाव	संतान और बुद्धि
बुध	मकर	षष्ठ भाव	सेवा और बाधाएँ
गुरु	सिंह	प्रथम भाव	स्वयं और स्वास्थ्य
शुक्र	धनु	पंचम भाव	संतान और बुद्धि
शनि	मकर	षष्ठ भाव	सेवा और बाधाएँ
राहु	धनु	पंचम भाव	संतान और बुद्धि
केतु	मिथुन	एकादश भाव	लाभ और नेटवर्क

मकर में Rohan का सूर्य Ananya के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में पड़ता है। इस भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह होने से सूर्य धैर्य और स्पष्ट संवाद माँगता है।

मकर में Rohan का चंद्र Ananya के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में पड़ता है।

धनु में Rohan का मंगल Ananya के पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में पड़ता है।

मकर में Rohan का बुध Ananya के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में पड़ता है। बुध बातचीत, हास्य और विचार लाता है।

सिंह में Rohan का गुरु Ananya के प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में पड़ता है। गुरु प्रोत्साहन, ज्ञान और विकास लाता है। केंद्र के संपर्क रोज़मर्रा के जीवन में महसूस होते हैं, इसलिए Ananya इस प्रभाव को जल्दी और बार-बार देखते हैं। नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से यहाँ गुरु दोनों कुंडलियों के बीच सबसे सहायक संपर्कों में है।

धनु में Rohan का शुक्र Ananya के पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में पड़ता है। शुक्र स्नेह, आनंद और सामंजस्य लाता है। नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से यहाँ शुक्र दोनों कुंडलियों के बीच सबसे सहायक संपर्कों में है।

मकर में Rohan का शनि Ananya के षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में पड़ता है। इस भाव में नैसर्गिक पाप ग्रह होने से शनि धैर्य और स्पष्ट संवाद माँगता है।

धनु में Rohan का राहु Ananya के पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में पड़ता है।

मिथुन में Rohan का केतु Ananya के एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में पड़ता है।

दोनों कुंडलियों के बीच ग्रह-संपर्क

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "दोनों कुंडलियों के बीच ग्रह-संपर्क" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

वैदिक ज्योतिष में दो कुंडलियों के ग्रह युति (एक ही राशि) और दृष्टि से एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं: हर ग्रह अपने से सातवीं राशि को देखता है; मंगल चौथी और आठवीं को भी, गुरु और राहु पाँचवीं और नौवीं को, शनि तीसरी और दसवीं को। सारणी हर व्यक्ति के ग्रहों से दूसरे के लग्न और मुख्य ग्रहों तक के सभी ऐसे संपर्क दिखाती है।

से	संपर्क	तक	स्वभाव
Ananya: सूर्य	युति	Rohan: लग्न	जीवंत
Ananya: सूर्य	युति	Rohan: गुरु	जीवंत
Ananya: चंद्र	युति	Rohan: मंगल	स्नेहपूर्ण
Ananya: चंद्र	युति	Rohan: शुक्र	स्नेहपूर्ण
Ananya: मंगल	दृष्टि (8वीं)	Rohan: सूर्य	तीव्र
Ananya: मंगल	दृष्टि (8वीं)	Rohan: चंद्र	तीव्र
Ananya: मंगल	दृष्टि (7वीं)	Rohan: मंगल	तीव्र
Ananya: मंगल	दृष्टि (7वीं)	Rohan: शुक्र	तीव्र
Ananya: मंगल	दृष्टि (8वीं)	Rohan: शनि	तीव्र
Ananya: बुध	युति	Rohan: लग्न	जीवंत
Ananya: बुध	युति	Rohan: गुरु	जीवंत
Ananya: शनि	दृष्टि (7वीं)	Rohan: लग्न	तीव्र
Ananya: शनि	दृष्टि (7वीं)	Rohan: गुरु	तीव्र
Rohan: मंगल	युति	Ananya: चंद्र	तीव्र
Rohan: मंगल	दृष्टि (7वीं)	Ananya: मंगल	तीव्र
Rohan: गुरु	युति	Ananya: लग्न	स्नेहपूर्ण
Rohan: गुरु	युति	Ananya: सूर्य	स्नेहपूर्ण
Rohan: गुरु	दृष्टि (5वीं)	Ananya: चंद्र	स्नेहपूर्ण
Rohan: गुरु	दृष्टि (7वीं)	Ananya: शनि	स्नेहपूर्ण
Rohan: शुक्र	युति	Ananya: चंद्र	स्नेहपूर्ण
Rohan: शुक्र	दृष्टि (7वीं)	Ananya: मंगल	स्नेहपूर्ण
Rohan: शनि	दृष्टि (10वीं)	Ananya: गुरु	तीव्र
Rohan: राहु	दृष्टि (9वीं)	Ananya: लग्न	तीव्र
Rohan: राहु	दृष्टि (9वीं)	Ananya: सूर्य	तीव्र
Rohan: राहु	युति	Ananya: चंद्र	तीव्र
Rohan: राहु	दृष्टि (7वीं)	Ananya: मंगल	तीव्र

कुल 26 संपर्क हैं: 8 स्नेहपूर्ण (गुरु, शुक्र या चंद्र), 4 जीवंत (सूर्य या बुध) और 14 तीव्र (मंगल, शनि या राहु)। तीन सबसे निजी बिंदुओं, यानी लग्न, चंद्र और शुक्र पर, 4 स्नेहपूर्ण और 6 तीव्र संपर्क हैं। निजी बिंदुओं पर तीव्र संपर्क स्नेहपूर्ण संपर्कों से अधिक हैं: प्रबल आकर्षण या प्रेरणा है, पर घर्षण को भी सचेत रूप से सँभालना होगा।

❖ Ananya → Rohan

Ananya का सूर्य युति द्वारा Rohan के लग्न तक पहुँचता है: गर्मजोशी, अधिकार और दृश्यता Rohan के शरीर और आत्म-बोध से मिलता है।

Ananya का चंद्र युति द्वारा Rohan के शुक्र तक पहुँचता है: देखभाल और भावनात्मक तालमेल Rohan के स्नेह और आनंद से मिलता है।

Ananya का मंगल दृष्टि (8वीं) द्वारा Rohan के सूर्य तक पहुँचता है: ऊर्जा, प्रेरणा और कभी-कभी घर्षण Rohan के आत्मविश्वास और उद्देश्य से मिलता है।

Ananya का मंगल दृष्टि (8वीं) द्वारा Rohan के चंद्र तक पहुँचता है: ऊर्जा, प्रेरणा और कभी-कभी घर्षण Rohan के भावनाओं और सुविधा की ज़रूरत से मिलता है।

Ananya का मंगल दृष्टि (7वीं) द्वारा Rohan के शुक्र तक पहुँचता है: ऊर्जा, प्रेरणा और कभी-कभी घर्षण Rohan के स्नेह और आनंद से मिलता है।

Ananya का बुध युति द्वारा Rohan के लग्न तक पहुँचता है: बातचीत, हास्य और विचार Rohan के शरीर और आत्म-बोध से मिलता है।

Ananya का शनि दृष्टि (7वीं) द्वारा Rohan के लग्न तक पहुँचता है: प्रतिबद्धता, ढाँचा और धैर्य की परीक्षा Rohan के शरीर और आत्म-बोध से मिलता है।

❖ Rohan → Ananya

Rohan का मंगल युति द्वारा Ananya के चंद्र तक पहुँचता है: ऊर्जा, प्रेरणा और कभी-कभी घर्षण Ananya के भावनाओं और सुविधा की ज़रूरत से मिलता है।

Rohan का गुरु युति द्वारा Ananya के लग्न तक पहुँचता है: प्रोत्साहन, ज्ञान और विकास Ananya के शरीर और आत्म-बोध से मिलता है।

Rohan का गुरु युति द्वारा Ananya के सूर्य तक पहुँचता है: प्रोत्साहन, ज्ञान और विकास Ananya के आत्मविश्वास और उद्देश्य से मिलता है।

Rohan का गुरु दृष्टि (5वीं) द्वारा Ananya के चंद्र तक पहुँचता है: प्रोत्साहन, ज्ञान और विकास Ananya के भावनाओं और सुविधा की ज़रूरत से मिलता है।

Rohan का शुक्र युति द्वारा Ananya के चंद्र तक पहुँचता है: स्नेह, आनंद और सामंजस्य Ananya के भावनाओं और सुविधा की ज़रूरत से मिलता है।

Rohan का राहु दृष्टि (9वीं) द्वारा Ananya के लग्न तक पहुँचता है: आकर्षण, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागत खिंचाव Ananya के शरीर और आत्म-बोध से मिलता है।

Rohan का राहु दृष्टि (9वीं) द्वारा Ananya के सूर्य तक पहुँचता है: आकर्षण, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागत खिंचाव Ananya के आत्मविश्वास और उद्देश्य से मिलता है।

Rohan का राहु युति द्वारा Ananya के चंद्र तक पहुँचता है: आकर्षण, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागत खिंचाव Ananya के भावनाओं और सुविधा की ज़रूरत से मिलता है।

दशा-मेल: दोनों समय-रेखाएँ साथ

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "दशा-मेल: दोनों समय-रेखाएँ साथ" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

सारणी अगले 12 वर्षों तक दोनों जीवनों का साथ-साथ अनुसरण करती है। जब भी किसी की अंतर्दशा बदलती है, नई पंक्ति शुरू होती है। हर अंतर्दशा को इस मित्रता के लिए आँका गया है: उसका स्वामी महत्वपूर्ण भावों (एकादश भाव, तृतीय भाव, पंचम भाव और सप्तम भाव) का स्वामी है या उनमें बैठा है, क्या वह मुख्य कारक (बुध और चंद्र) है, उसकी गरिमा, और वह महादशा-स्वामी के साथ कैसे काम करता है।

अवधि	Ananya	स्वर (Ananya)	Rohan	स्वर (Rohan)	साथ में
अक्टूबर 2026 – मई 2027	चंद्र / गुरु	मिश्रित	गुरु / बुध	मिश्रित	मिश्रित
मई 2027 – जनवरी 2028	चंद्र / गुरु	मिश्रित	गुरु / केतु	मिश्रित	मिश्रित
जनवरी 2028 – अप्रैल 2028	चंद्र / शनि	सहायक	गुरु / केतु	मिश्रित	सहायक
अप्रैल 2028 – अगस्त 2029	चंद्र / शनि	सहायक	गुरु / शुक्र	मिश्रित	सहायक
अगस्त 2029 – दिसंबर 2030	चंद्र / बुध	सहायक	गुरु / शुक्र	मिश्रित	सहायक
जनवरी 2031 – अगस्त 2031	चंद्र / केतु	मिश्रित	गुरु / सूर्य	परिश्रम-साध्य	सावधानी
अगस्त 2031 – अक्टूबर 2031	चंद्र / शुक्र	मिश्रित	गुरु / सूर्य	परिश्रम-साध्य	सावधानी
अक्टूबर 2031 – फ़रवरी 2033	चंद्र / शुक्र	मिश्रित	गुरु / चंद्र	मिश्रित	मिश्रित
फ़रवरी 2033 – अप्रैल 2033	चंद्र / शुक्र	मिश्रित	गुरु / मंगल	सहायक	सहायक
अप्रैल 2033 – अक्टूबर 2033	चंद्र / सूर्य	सहायक	गुरु / मंगल	सहायक	प्रबल
अक्टूबर 2033 – जनवरी 2034	मंगल / मंगल	सहायक	गुरु / मंगल	सहायक	प्रबल
जनवरी 2034 – मार्च 2034	मंगल / मंगल	सहायक	गुरु / राहु	सहायक	प्रबल
मार्च 2034 – मार्च 2035	मंगल / राहु	सहायक	गुरु / राहु	सहायक	प्रबल
मार्च 2035 – मार्च 2036	मंगल / गुरु	सहायक	गुरु / राहु	सहायक	प्रबल
मार्च 2036 – जून 2036	मंगल / शनि	सहायक	गुरु / राहु	सहायक	प्रबल
जून 2036 – अप्रैल 2037	मंगल / शनि	सहायक	शनि / शनि	सहायक	प्रबल
अप्रैल 2037 – अप्रैल 2038	मंगल / बुध	मिश्रित	शनि / शनि	सहायक	सहायक
अप्रैल 2038 – सितंबर 2038	मंगल / केतु	मिश्रित	शनि / शनि	सहायक	सहायक
सितंबर 2038 – अक्टूबर 2038	मंगल / शुक्र	मिश्रित	शनि / शनि	सहायक	सहायक

सबसे प्रबल संयुक्त समय: अप्रैल 2033 – अक्टूबर 2033, अक्टूबर 2033 – जनवरी 2034, जनवरी 2034 – मार्च 2034, मार्च 2034 – मार्च 2035, मार्च 2035 – मार्च 2036, मार्च 2036 – जून 2036 और जून 2036 – अप्रैल 2037। इन अवधियों में दोनों की समय-रेखाएँ एक साथ मित्रता के अनुकूल हैं।

साथ में अतिरिक्त सावधानी की अवधियाँ: जनवरी 2031 – अगस्त 2031 और अगस्त 2031 – अक्टूबर 2031।

साझा स्वामी: मंगल (अक्टूबर 2033 – जनवरी 2034), राहु (मार्च 2034 – मार्च 2035) और शनि (जून 2036 – अप्रैल 2037)। जब दोनों एक ही ग्रह की दशा में हों, उसके विषय साथ में महसूस होते हैं।

दोनों चंद्रमाओं से गोचर: अगले 24 महीने

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "दोनों चंद्रमाओं से गोचर: अगले 24 महीने" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

गुरु और शनि को हर व्यक्ति के चंद्र से गिना गया है। गुरु चंद्र से 2, 5, 7, 9 और 11वें स्थान पर पारंपरिक रूप से सहायक है; शनि 3, 6 और 11वें पर। साढ़े साती (चंद्र से 12, 1 या 2 में शनि) और ढैया (4 या 8 में) चिह्नित हैं।

मास	गुरु	Ananya से	Rohan से	शनि	Ananya से	Rohan से	टिप्पणी
अक्टूबर 2026	कर्क	अष्टम	सप्तम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
नवंबर 2026	सिंह	नवम	अष्टम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
दिसंबर 2026	सिंह	नवम	अष्टम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
जनवरी 2027	सिंह	नवम	अष्टम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
फ़रवरी 2027	कर्क	अष्टम	सप्तम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
मार्च 2027	कर्क	अष्टम	सप्तम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
अप्रैल 2027	कर्क	अष्टम	सप्तम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
मई 2027	कर्क	अष्टम	सप्तम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
जून 2027	कर्क	अष्टम	सप्तम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
जुलाई 2027	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
अगस्त 2027	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
सितंबर 2027	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
अक्टूबर 2027	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
नवंबर 2027	सिंह	नवम	अष्टम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
दिसंबर 2027	कन्या	दशम	नवम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
जनवरी 2028	कन्या	दशम	नवम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
फ़रवरी 2028	कन्या	दशम	नवम	मीन	चतुर्थ	तृतीय	ढैया: Ananya
मार्च 2028	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
अप्रैल 2028	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
मई 2028	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
जून 2028	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
जुलाई 2028	सिंह	नवम	अष्टम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
अगस्त 2028	कन्या	दशम	नवम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan
सितंबर 2028	कन्या	दशम	नवम	मेष	पंचम	चतुर्थ	ढैया: Rohan

अगले 24 महीनों में गुरु एक साथ दोनों चंद्रमाओं से अनुकूल नहीं है।

इस अवधि के कुछ भाग में Ananya साढ़े साती या ढैया में हैं: धैर्य और स्थिर दिनचर्या का समय, जब दूसरे का सहारा मायने रखता है।

इस अवधि के कुछ भाग में Rohan साढ़े साती या ढैया में हैं: धैर्य और स्थिर दिनचर्या का समय, जब दूसरे का सहारा मायने रखता है।

Ananya: जन्म विवरण और पंचांग

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: “Ananya: जन्म विवरण और पंचांग” आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

सूर्योदय	सूर्यास्त
06:00	19:01

अयनांश (लाहिरी)	अक्षांश / देशांतर	समय-क्षेत्र
23°47′	26.912, 75.787	Asia/Kolkata

ऋतु	अयन
वर्षा	दक्षिणायन

❖ आपके जन्म-क्षण के पाँच अंग

पंचांग ("पाँच अंग") उस क्षण की गुणवत्ता दर्ज करता है: तिथि (चांद्र दिवस), वार, नक्षत्र (चंद्र का तारा), योग (सूर्य–चंद्र का संयोजन) और करण (आधी तिथि)। पारंपरिक परिवार इन्हें हर जन्म पत्रिका के शीर्ष पर लिखते हैं।

❖ तिथि: एकादशी (11)

चंद्र सूर्य से 127.1° आगे था, शुक्ल पक्ष की 30 में से 11वीं तिथि में, और तिथि का लगभग 40% भाग शेष था। परंपरा इस तिथि को इन गुणों से जोड़ती है: भक्ति, उपवास और आध्यात्मिक पुण्य।

❖ वार: बुधवार

आपका जन्म बुधवार को हुआ, जिसका स्वामी बुध है। बुधवार का जन्म बुद्धि, विनोद और व्यापारिक कौशल से जोड़ा जाता है।

❖ नित्य योग: विष्कुंभ

सूर्य और चंद्र के भोगांशों का योग 27 में से 1वाँ योग देता है, जिसे परंपरा में सहारा और बाधाओं को पार करने की क्षमता से जोड़ा जाता है।

❖ करण: विष्टि (भद्रा)

हर तिथि में दो करण होते हैं। आपके करण का पारंपरिक स्वभाव है: तीव्र; परंपरा आरंभ में सावधानी की सलाह देती है।

❖ चांद्र मास: श्रावण

अमांत पंचांग के अनुसार आपका जन्म श्रावण मास में, विक्रम संवत 2051 (शक 1916) में, वर्षा ऋतु और दक्षिणायन में हुआ।

❖ अवकहड़ा चक्र

ये जन्म–नक्षत्र के पारंपरिक गुण हैं, जिनका उपयोग नामकरण और विवाह–मिलान में होता है।

विषय	मान
लग्न	सिंह

विषय	मान
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
योनि	श्वान
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
नामाक्षर	भा
पाया	रजत पाया

Ananya: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: “Ananya: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण” आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

हर ग्रह को उसकी राशि, नक्षत्र और पद, भाव, स्वामित्व, दृष्टि, युति, गति, अस्तता, अवस्था और बल से पढ़ा गया है। नीचे के अनुच्छेद केवल आपकी कुंडली में उपस्थित कारकों से बने हैं।

❖ सूर्य: प्रथम भाव · सिंह

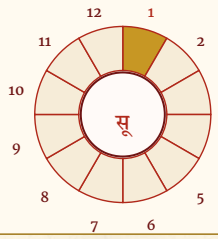

सूर्य: प्रथम भाव · सिंह
0°11′ · सिंह
मघा · 1
स्वराशि

सूर्य: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

सूर्य आपकी मूल पहचान, प्राण-शक्ति, पिता-तुल्य व्यक्तियों और अधिकार से आपके संबंध का कारक है। यह सिंह राशि में 0°11′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। स्वराशि सिंह में सूर्य गरिमामय और आत्मविश्वासी है, सार्वजनिकता और ज़िम्मेदारी में सहज। सूर्य स्वयं इस राशि का स्वामी है। यह अपने मूलत्रिकोण क्षेत्र में भी है, जहाँ यह विशेष उद्देश्य से कार्य करता है।

इसका नक्षत्र मघा है, जिसके देवता पितर (पूर्वज) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: विरासत का सम्मान; उदारता। 1वाँ पद मेष नवांश में पड़ता है, जो इसे धर्म (उद्देश्य और सिद्धांत) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके प्रथम भाव में है। प्रथम भाव (लग्न) शरीर, स्वास्थ्य, स्वभाव और जीवन को देखने का ढंग है; यह हर दूसरे भाव को प्रभावित करता है। यह आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का स्वामी है और इन विषयों को प्रथम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर सूर्य आपके लग्न के लिए कारक-शुभ (functional benefic) है।

सूर्य की दृष्टि आपके सप्तम भाव पर है, जो वहाँ स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह लाती है। इसकी दृष्टि शनि पर पड़ती है। इस पर शनि और केतु की दृष्टि है (शनि: विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा; केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

सूर्य की बुध के साथ युति है (4.2° की दूरी)। सूर्य-बुध युति पहचान और बुद्धि को जोड़ती है; मुखर, प्रशासनिक और स्पष्ट राय रखने वाला स्वभाव।

सूर्य बाल अवस्था में है: इसके फल धीरे-धीरे आते हैं और बाद में परिपक्व होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 1वाँ स्थान (8.05 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 19.9/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

सूर्य प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में एक केन्द्र स्थिति है। सिंह में, चन्द्र के नक्षत्र मघा (पाद 1) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपकी मूल पहचान एक दिखाई देने वाले रूप में आता है। वास्तविक फल दशा और आपके चुनावों पर निर्भर रहता है।

षड्बल (8.05 रूप) और विंशोपक (19.9) से सूर्य इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। सूर्य की दशा को आपकी मूल पहचान पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

सूर्य मघा में, प्रथम भाव में, जीवन भर आपकी मूल पहचान को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ते हैं। बाद की सूर्य दशाएँ उस संबंध को फिर देखने के उपयोगी क्षण हैं, निश्चित फल मानकर नहीं।

❖ चंद्र: पंचम भाव · धनु

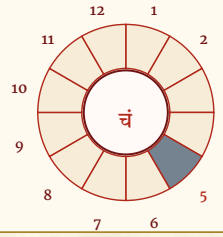

चंद्र: पंचम भाव · धनु

7°19′ · धनु

मूल · 3

सम राशि

चंद्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

चंद्र आपके मन, भावनाओं, माता, घरेलू जीवन और संतोष की क्षमता का कारक है। यह धनु राशि में 7°19′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी। राशि-स्वामी गुरु, चंद्र के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र मूल है, जिसके देवता निर्ऋति (विलय की देवी) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: शोध-क्षमता; जड़ तक पहुँचना। 3वाँ पद मिथुन नवांश में पड़ता है, जो इसे काम (इच्छा, संबंध और आनंद) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके पंचम भाव में है। पंचम भाव बुद्धि, सृजन, संतान, प्रेम, मंत्र और पूर्व-पुण्य से जुड़ा है। यह आपके द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) का स्वामी है और इन विषयों को पंचम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर चंद्र आपके लग्न के लिए सम है; इसके फल स्थिति से तय होते हैं।

चंद्र की दृष्टि आपके एकादश भाव पर है, जो वहाँ संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशीलता लाती है। इसकी दृष्टि मंगल पर पड़ती है। इस पर मंगल और केतु की दृष्टि है (मंगल: ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव; केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

चंद्र कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 5वाँ स्थान (5.71 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 11.0/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

चंद्र पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में एक त्रिकोण स्थिति है। धनु में, मूल पाद 3 के साथ, परंपरा अक्सर आपके मन को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

षड्बल (5.71 रूप) और विंशोपक (11.0) से चंद्र को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। चंद्र की दशा में आपके मन के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

कुंडली चंद्र (आपके मन) को पंचम भाव में रखती है, इसलिए संतान और बुद्धि वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2026 की चंद्र दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

❖ मंगल: एकादश भाव · मिथुन

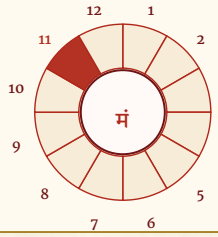

मंगल: एकादश भाव · मिथुन

6°24′ · मिथुन

मृगशिरा · 4

शत्रु राशि

मंगल: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

मंगल आपकी प्रेरणा, साहस, शारीरिक ऊर्जा, भाई-बहनों और प्रतिस्पर्धा की रुचि का कारक है। यह मिथुन राशि में 6°24′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी। राशि-स्वामी बुध, मंगल का नैसर्गिक शत्रु है, इसलिए इसे कुछ घर्षण के बीच काम करना पड़ता है।

इसका नक्षत्र मृगशिरा है, जिसके देवता सोम (चंद्रमा का अमृत) और स्वामी मंगल हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: जिज्ञासा; कोमलता और संवेदनशीलता। 4वाँ पद वृश्चिक नवांश में पड़ता है, जो इसे मोक्ष (मुक्ति, अंतर्दृष्टि और आंतरिक जीवन) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके एकादश भाव में है। एकादश भाव आय, लाभ, बड़े भाई-बहन, मित्र, नेटवर्क और इच्छा-पूर्ति से जुड़ा है। यह आपके चतुर्थ भाव (घर और माता) और नवम भाव (भाग्य और गुरु) का स्वामी है और इन विषयों को एकादश भाव में ले आता है। केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी होने से मंगल आपके लग्न के लिए योगकारक है, कुंडली के सबसे सहायक ग्रहों में से एक।

मंगल की दृष्टि आपके द्वितीय भाव, पंचम भाव और षष्ठ भाव पर है, जो वहाँ ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव लाती है। इसकी दृष्टि चंद्र और शुक्र पर पड़ती है। इस पर चंद्र, गुरु और राहु की दृष्टि है (चंद्र: संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशीलता; गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

मंगल कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 7वाँ स्थान (4.07 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 11.6/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

मंगल एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में उपचय स्थिति है। मिथुन में, मृगशिरा पाद 4 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपकी प्रेरणा समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

षड्बल (4.07 रूप) और विंशोपक (11.6) से मंगल इस कुंडली में हल्के समर्थित हैं। इनकी दशा में आपकी प्रेरणा के बारे में योजनाएँ सरल रखना, और सबल ग्रहों से सहयोग लेना, सामान्य सलाह है; इसे निश्चित झटका न मानें।

मंगल को यहाँ एक कार्य-मानचित्र की तरह पढ़ें: आपकी प्रेरणा का लाभ और नेटवर्क के माध्यम से व्यक्त होना, एकादश भाव में मिथुन से। लगभग 2033 की अवधि को наблюдि और चुनाव के लिए उपयोग करें, भविष्यवाणी के रूप में नहीं।

❖ बुध: प्रथम भाव · सिंह

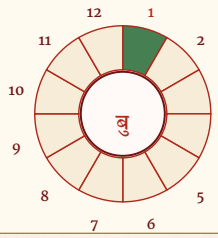

बुध: प्रथम भाव · सिंह

4°23′ · सिंह

मघा · 2

मित्र राशि

बुध: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

बुध आपकी सोच, वाणी, सीखने की शैली, व्यापार और हास्य-बोध का कारक है। यह सिंह राशि में 4°23′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। राशि-स्वामी सूर्य, बुध का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र मघा है, जिसके देवता पितर (पूर्वज) और स्वामी केतु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: उदारता; महत्वाकांक्षा। 2वाँ पद वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसे अर्थ (संसाधन और उपलब्धि) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके प्रथम भाव में है। यह आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) और एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) का स्वामी है और इन विषयों को प्रथम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर बुध आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

बुध की दृष्टि आपके सप्तम भाव पर है, जो वहाँ विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण लाती है। इसकी दृष्टि शनि पर पड़ती है।

बुध की सूर्य के साथ युति है (4.2° की दूरी)।

बुध अस्त है, सूर्य से 4.2° पर। अस्त बुध बहुत सामान्य है; बुद्धि अहं की सेवा करती है, और सुनने का अभ्यास चाहिए। बुध बाल अवस्था में है: इसके फल धीरे-धीरे आते हैं और बाद में परिपक्व होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 2वाँ स्थान (6.44 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 13.7/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

बुध प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में एक केन्द्र स्थिति है। सिंह में, चन्द्र के नक्षत्र मघा (पाद 2) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपकी सोच एक दिखाई देने वाले रूप में आता है।

षड्बल (6.44 रूप) और विंशोपक (13.7) से बुध इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। बुध की दशा को आपकी सोच पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

कुंडली बुध (आपकी सोच) को प्रथम भाव में रखती है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2093 की बुध दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

❖ गुरु: तृतीय भाव · तुला

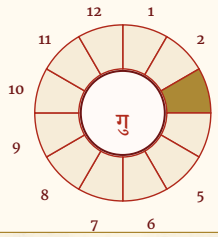

गुरु: तृतीय भाव · तुला

13°58′ · तुला

स्वाति · 3

शत्रु राशि

गुरु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

गुरु आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ का कारक है। यह तुला राशि में 13°58′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान। राशि-स्वामी शुक्र, गुरु का नैसर्गिक शत्रु है, इसलिए इसे कुछ घर्षण के बीच काम करना पड़ता है।

इसका नक्षत्र स्वाति है, जिसके देवता वायु (पवन) और स्वामी राहु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: लचीलापन; स्वतंत्रता। 3वाँ पद कुंभ नवांश में पड़ता है, जो इसे काम (इच्छा, संबंध और आनंद) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके तृतीय भाव में है। तृतीय भाव साहस, प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, संवाद-कौशल और शौक से जुड़ा है। यह आपके पंचम भाव (संतान और बुद्धि) और अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) का स्वामी है और इन विषयों को तृतीय भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर गुरु आपके लग्न के लिए कारक-शुभ (functional benefic) है।

गुरु की दृष्टि आपके सप्तम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है, जो वहाँ संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श लाती है। इसकी दृष्टि मंगल, शनि और केतु पर पड़ती है। इस पर केतु की दृष्टि है (केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

गुरु की राहु के साथ युति है (11.3° की दूरी)। गुरु-राहु युति (गुरु-चांडाल) परंपरा पर प्रश्न करती है; अपरंपरागत विश्वास और गुरु, तथा नैतिक स्पष्टता की आवश्यकता।

गुरु युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 6वाँ स्थान (5.03 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 9.9/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

गुरु तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में उपचय स्थिति है। तुला में, स्वाति पाद 3 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपके ज्ञान समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

षड्बल (5.03 रूप) और विंशोपक (9.9) से गुरु को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। गुरु की दशा में आपके ज्ञान के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

इस कुंडली में गुरु सामान्यतः आपके ज्ञान के कारक हैं, और आपके तृतीय भाव में बैठे हैं, इसलिए यह विषय सबसे स्पष्ट पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से महसूस होता है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं। जब गुरु की दशा चले (अगली बार लगभग 2058), तब इस क्षेत्र को ध्यान से देखना और सहायक आदतें चुनना उपयोगी रहता है।

❖ शुक्र: द्वितीय भाव · कन्या

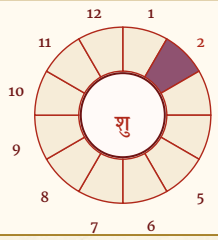

शुक्र: द्वितीय भाव · कन्या

16°00′ · कन्या

हस्त · 2

नीच

शुक्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

शुक्र आपके स्नेह, आनंद, कला, सुख-सुविधा, साझेदारी और रुचि का कारक है। यह कन्या राशि में 16°00′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति कन्या की सूक्ष्मता के साथ: विश्लेषणात्मक, विनम्र, सहायक और अधूरे कामों का आलोचक। कन्या में नीच का शुक्र प्रेम और सौंदर्य का विश्लेषण करता है; मानदंड ऊँचे होते हैं और स्नेह सेवा के रूप में प्रकट होता है। राशि-स्वामी बुध, शुक्र का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र हस्त है, जिसके देवता सविता (सृजन-शक्ति रूपी सूर्य) और स्वामी चंद्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: विनोद-प्रियता; साधन-संपन्नता। नक्षत्र स्वामी चंद्र इस ग्रह का नैसर्गिक शत्रु है।

यह आपके द्वितीय भाव में है। द्वितीय भाव संचित धन, परिवार, वाणी, खान-पान और प्रारंभिक शिक्षा से जुड़ा है। यह आपके तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) और दशम भाव (करियर और पद) का स्वामी है और इन विषयों को द्वितीय भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर शुक्र आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

शुक्र की दृष्टि आपके अष्टम भाव पर है, जो वहाँ शालीनता, आनंद और सामंजस्य लाती है। इस पर मंगल की दृष्टि है (मंगल: ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव)।

शुक्र युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 4वाँ स्थान (5.71 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 13.7/20, और अपनी राशि में 3 अष्टकवर्ग बिंदु।

शुक्र द्वितीय भाव (धन और परिवार) में उस भाव में हैं जिसे परंपरा दबाव और मुक्ति से भी जोड़ती है। कन्या में, हस्त पाद 2 के साथ, उपयोगी पाठ यह है कि आपके स्नेह और धन और परिवार को साथ देखें, और दशा तिथियों को समीक्षा का समय मानें, गारंटी नहीं।

षड्बल (5.71 रूप) और विंशोपक (13.7) से शुक्र को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। शुक्र की दशा में आपके स्नेह के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

शुक्र हस्त में, द्वितीय भाव में, जीवन भर आपके स्नेह को धन और परिवार से जोड़ते हैं। बाद की शुक्र दशाएँ उस संबंध को फिर देखने के उपयोगी क्षण हैं, निश्चित फल मानकर नहीं।

❖ शनि: सप्तम भाव · कुंभ

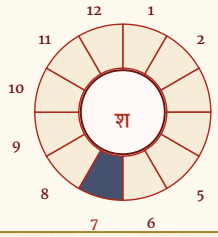

शनि: सप्तम भाव · कुंभ

16°23′ · कुंभ

शतभिषा · 3

स्वराशि

शनि: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

शनि आपके अनुशासन, सहनशक्ति, कर्म-निष्ठा, भय और दीर्घकालिक कर्म का कारक है। यह कुंभ राशि में 16°23′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ। स्वराशि में शनि स्थिर और ज़िम्मेदार है, धैर्यपूर्ण दीर्घकालिक परिश्रम का फल देता है। शनि स्वयं इस राशि का स्वामी है।

इसका नक्षत्र शतभिषा है, जिसके देवता वरुण (ब्रह्मांडीय जल और व्यवस्था के अधिपति) और स्वामी राहु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: दार्शनिक मन; शोध और विश्लेषण।

यह आपके सप्तम भाव में है। सप्तम भाव विवाह, व्यावसायिक साझेदार, अनुबंध, जनता और काम के लिए विदेश-यात्रा से जुड़ा है। यह आपके षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) और सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) का स्वामी है और इन विषयों को सप्तम भाव में ले आता है। स्वामित्व के आधार पर शनि आपके लग्न के लिए कारक-पाप (functional malefic) है, इसलिए इसकी दशाओं में सावधानी उचित है।

शनि की दृष्टि आपके प्रथम भाव, चतुर्थ भाव और नवम भाव पर है, जो वहाँ विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा लाती है। इसकी दृष्टि सूर्य, बुध और केतु पर पड़ती है। इस पर सूर्य, बुध, गुरु और राहु की दृष्टि है (सूर्य: स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह; बुध: विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण; गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

वक्री शनि कर्तव्य को भीतर ग्रहण करता है; कठोर आंतरिक आलोचक और अतीत की ज़िम्मेदारियाँ। शनि युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 3वाँ स्थान (6.26 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 15.3/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु। शनि वर्गोत्तम है (D1 और D9 में एक ही राशि), जो इसके फलों को स्थिर करता है।

शनि सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) में एक केन्द्र स्थिति है। कुंभ में, चन्द्र के नक्षत्र शतभिषा (पाद 3) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपके अनुशासन एक दिखाई देने वाले रूप में आता है।

षड्बल (6.26 रूप) और विंशोपक (15.3) से शनि इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। शनि की दशा को आपके अनुशासन पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

शनि को यहाँ एक कार्य-मानचित्र की तरह पढ़ें: आपके अनुशासन का विवाह और साझेदार के माध्यम से व्यक्त होना, सप्तम भाव में कुंभ से। लगभग 2074 की अवधि को наблюдि और चुनाव के लिए उपयोग करें, भविष्यवाणी के रूप में नहीं।

❖ राहु: तृतीय भाव · तुला

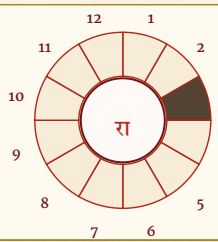

राहु: तृतीय भाव · तुला

25°14′ · तुला

विशाखा · 2

छाया ग्रह

राहु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

राहु आपकी सांसारिक भूख, महत्वाकांक्षा और नए व विदेशी के प्रति आकर्षण का कारक है। यह तुला राशि में 25°14′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान। छाया ग्रह होने से राहु अपने राशि-स्वामी शुक्र के फल देता है, जो आपके द्वितीय भाव (नीच) में है।

इसका नक्षत्र विशाखा है, जिसके देवता इंद्र और अग्नि और स्वामी गुरु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: दृढ़ विश्वास; प्रेरित करने की क्षमता।

यह आपके तृतीय भाव में है।

राहु की दृष्टि आपके सप्तम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है, जो वहाँ जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता लाती है।

राहु की गुरु के साथ युति है (11.3° की दूरी)।

राहु तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) में उपचय स्थिति है। तुला में, विशाखा पाद 2 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपकी सांसारिक भूख समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

क्योंकि राहु तुला में हैं और आपकी सांसारिक भूख के विषय से जुड़े हैं, उनकी अगली दशा (लगभग 2040) पराक्रम और भाई-बहन की समीक्षा का स्वाभाविक समय है। तृतीय भाव वह स्थान है जहाँ यह कुंडली में दिखता है। यहाँ कोई निश्चित फल नहीं है।

❖ केतु: नवम भाव · मेष

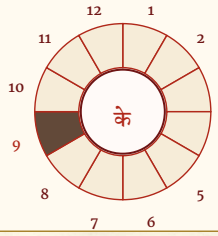

केतु: नवम भाव · मेष

25°14′ · मेष

भरणी · 4

छाया ग्रह

केतु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

केतु आपकी विरक्ति, पूर्व-कौशल, अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक खोज का कारक है। यह मेष राशि में 25°14′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मेष की सीधी शैली में: शीघ्र आरंभ, प्रतिस्पर्धी और स्पष्टवादिता की हद तक ईमानदार। छाया ग्रह होने से केतु अपने राशि-स्वामी मंगल के फल देता है, जो आपके एकादश भाव (शत्रु राशि) में है।

इसका नक्षत्र भरणी है, जिसके देवता यम (धर्म और मृत्यु के अधिपति) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: सहनशक्ति; नैतिक साहस।

यह आपके नवम भाव में है। नवम भाव भाग्य, पिता, गुरुजन, धर्म, उच्च शिक्षा और लंबी यात्राओं से जुड़ा है।

केतु की दृष्टि आपके प्रथम भाव, तृतीय भाव और पंचम भाव पर है, जो वहाँ विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़ लाती है। इसकी दृष्टि सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु और राहु पर पड़ती है। इस पर गुरु, शनि और राहु की दृष्टि है (गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; शनि: विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

केतु नवम भाव (भाग्य और गुरु) में एक त्रिकोण स्थिति है। मेष में, भरणी पाद 4 के साथ, परंपरा अक्सर आपकी विरक्ति को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

नवम भाव वह भाव है जिसके माध्यम से इस कुंडली में केतु (आपकी विरक्ति) को पढ़ा जाता है। बाद की केतु दशा भाग्य और गुरु का जायजा लेने का पारंपरिक समय है, परिणाम बाँधने वाली तिथि नहीं।

Ananya: भाव-दर-भाव विश्लेषण

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Ananya: भाव-दर-भाव विश्लेषण" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

हर भाव को उसकी राशि, उसके स्वामी और उसकी स्थिति, भाव में स्थित ग्रहों, उस पर दृष्टियों, उसके नैसर्गिक कारक और उसके अष्टकवर्ग अंक से पढ़ा गया है।

भाव	क्षेत्र	राशि	स्वामी	स्वामी स्थित	ग्रह	सर्वा.
1	स्वयं और स्वास्थ्य	सिंह	सूर्य	प्रथम	सूर्य, बुध	29
2	धन और परिवार	कन्या	बुध	प्रथम	शुक्र	24
3	पराक्रम और भाई-बहन	तुला	शुक्र	द्वितीय	गुरु, राहु	32
4	घर और माता	वृश्चिक	मंगल	एकादश	-	22
5	संतान और बुद्धि	धनु	गुरु	तृतीय	चंद्र	26
6	सेवा और बाधाएँ	मकर	शनि	सप्तम	-	29
7	विवाह और साझेदार	कुंभ	शनि	सप्तम	शनि	25
8	रूपांतरण और विरासत	मीन	गुरु	तृतीय	-	25
9	भाग्य और गुरु	मेष	मंगल	एकादश	केतु	28
10	करियर और पद	वृषभ	शुक्र	द्वितीय	-	35
11	लाभ और नेटवर्क	मिथुन	बुध	प्रथम	मंगल	36
12	व्यय और मोक्ष	कर्क	चंद्र	पंचम	-	26

❖ प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

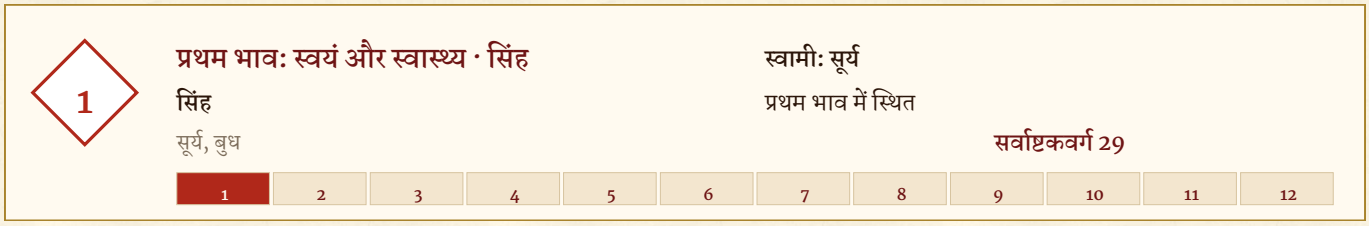

प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

आपका प्रथम भाव सिंह राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक (मुख्य विषय: नेतृत्व, सृजन, गरिमा)।

इसका स्वामी सूर्य इसी भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (स्वराशि) में। भावेश स्वयं इसी भाव में बैठा है, जो इसके विषयों की रक्षा करता और उन्हें बल देता है।

प्रथम भाव में ग्रह: सूर्य और बुध। सूर्य (स्वराशि) स्वयं और स्वास्थ्य में आपकी मूल पहचान का प्रभाव लाता है। बुध (मित्र राशि) स्वयं और स्वास्थ्य में आपकी सोच का प्रभाव लाता है।

प्रथम भाव पर शनि (सप्तम भाव से) और केतु (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा शनि और केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक सूर्य आपके प्रथम भाव (स्वराशि) में है। 29 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका नवम भाव है।

प्रथम भाव सिंह में शरीर, स्वभाव और पहले प्रभाव का भाव है। स्वामी सूर्य (स्वराशि) प्रथम भाव में हैं और अष्टकवर्ग 29 है। यह बताता है कि प्राण और आत्म-प्रस्तुति कैसे समर्थित हैं, कोई निश्चित चरित्र नहीं। स्थित ग्रह: सूर्य और बुध।

प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो प्रथम भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। सिंह पर 29 बिंदु हैं। वे तिथियाँ ध्यान का समय हैं, निर्णय नहीं।

❖ द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

2

द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

कन्या

शुक्र

स्वामी: बुध

प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 24

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

आपका द्वितीय भाव कन्या राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कन्या की सूक्ष्मता के साथ: विश्लेषणात्मक, विनम्र, सहायक और अधूरे कामों का आलोचक (मुख्य विषय: कौशल, सेवा, स्वास्थ्य)।

इसका स्वामी बुध प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो धन और परिवार को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है। केंद्र या त्रिकोण में स्थित भावेश इस भाव के विषयों को मज़बूत, सहयोगी क्षेत्र में ले जाता है। भावेश अपने भाव से बारहवें स्थान पर है, जो इन विषयों पर ऊर्जा या संसाधन खर्च होने का पारंपरिक संकेत है। भावेश अस्त है, इसलिए ये विषय चुपचाप या किसी और की छाया में चलते हैं।

द्वितीय भाव में ग्रह: शुक्र। शुक्र (नीच) धन और परिवार में आपके स्नेह का प्रभाव लाता है।

द्वितीय भाव पर मंगल (एकादश भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक गुरु आपके तृतीय भाव (शत्रु राशि) में है। 24 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका दशम भाव है।

द्वितीय भाव कन्या में परिवार के संसाधन, वाणी और प्रारंभिक बचत के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी बुध (मित्र राशि) प्रथम भाव में हैं, राशि पर 24 बिंदु हैं, स्थित ग्रह शुक्र। इस स्वामी की दशा को धन की आदतों और पारिवारिक बातचीत की समीक्षा का समय मानें, लाभ या हानि का वादा नहीं।

द्वितीय भाव कन्या में, स्वामी बुध प्रथम भाव में, धन और परिवार का कार्य-चित्र हैं। जब उस स्वामी की दशा चले, इस पृष्ठ पर लौटें, और इसे जाँच-सूची की तरह उपयोग करें, भविष्यवाणी की तरह नहीं।

❖ तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला

3

तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला

तुला

गुरु, राहु

स्वामी: शुक्र

द्वितीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 32

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला

आपका तृतीय भाव तुला राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, तुला के संतुलन के साथ: कूटनीतिक, न्यायप्रिय, सौंदर्यबोधी और साझेदारी-प्रधान (मुख्य विषय: संतुलन, साझेदारी, सौंदर्य)।

इसका स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, कन्या राशि (नीच) में, जो पराक्रम और भाई-बहन को धन और परिवार से जोड़ता है।

तृतीय भाव में ग्रह: गुरु और राहु। गुरु (शत्रु राशि) पराक्रम और भाई-बहन में आपके ज्ञान का प्रभाव लाता है। राहु (छाया ग्रह) पराक्रम और भाई-बहन में आपकी सांसारिक भूख का प्रभाव लाता है।

तृतीय भाव पर केतु (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक मंगल आपके एकादश भाव (शत्रु राशि) में है। 32 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका एकादश भाव है।

तृतीय भाव तुला में प्रयास, भाई-बहन और छोटी यात्रा का भाव है। स्वामी शुक्र (नीच) द्वितीय भाव में, 32 बिंदु, स्थित ग्रह गुरु और राहु। परंपरा यहाँ साहस और दैनिक पहल देखती है। ये गुण अवधि के उपयोग पर निर्भर हैं, किसी गारंटी पर नहीं।

तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो द्वितीय भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। तुला पर 32 बिंदु हैं।

❖ चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक

4

चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक

वृश्चिक

–

स्वामी: मंगल

एकादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 22

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक

आपका चतुर्थ भाव वृश्चिक राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, वृश्चिक की गहराई के साथ: गोपनीय, खोजी, निष्ठावान और देर से क्षमा करने वाला (मुख्य विषय: गहराई, शोध, रूपांतरण)। चतुर्थ भाव माता, घर, वाहन, भूमि, मन की शांति और आधारभूत शिक्षा से जुड़ा है।

इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, मिथुन राशि (शत्रु राशि) में, जो घर और माता को लाभ और नेटवर्क से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से आठवें स्थान पर है, इसलिए ये विषय उथल-पुथल और नवीनीकरण के दौर से गुज़रते हैं।

चतुर्थ भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश मंगल से आते हैं।

चतुर्थ भाव पर शनि (सप्तम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा शनि से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक चंद्र आपके पंचम भाव (सम राशि) में है। 22 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका द्वादश भाव है।

चतुर्थ भाव वृश्चिक में घर, माता और भीतरी सहजता का भाव है। स्वामी मंगल (शत्रु राशि) एकादश भाव में हैं, राशि पर 22 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं। इस स्वामी की दशा घर और भावनात्मक नींव पर ध्यान देने का पारंपरिक समय है, वादा नहीं।

क्योंकि चतुर्थ भाव के स्वामी एकादश भाव में हैं, घर और माता समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। वृश्चिक पर 22 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

❖ पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

5

पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

धनु

चंद्र

स्वामी: गुरु

तृतीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 26

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

आपका पंचम भाव धनु राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी (मुख्य विषय: आस्था, शिक्षा, यात्रा)।

इसका स्वामी गुरु तृतीय भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, तुला राशि (शत्रु राशि) में, जो संतान और बुद्धि को पराक्रम और भाई-बहन से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से ग्यारहवें स्थान पर है, जो परंपरा में इन विषयों में लाभ का सहायक है।

पंचम भाव में ग्रह: चंद्र। चंद्र (सम राशि) संतान और बुद्धि में आपके मन का प्रभाव लाता है।

पंचम भाव पर मंगल (एकादश भाव से) और केतु (नवम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल और केतु से आती है।

26 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका प्रथम भाव है।

पंचम भाव धनु में सृजन, संतान, विद्या और कुंडली की बुद्धि के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी गुरु (शत्रु राशि) तृतीय भाव में हैं, 26 बिंदु और स्थित ग्रह चंद्र। संबंधित दशाओं में इस भाव को अध्ययन और अभिव्यक्ति का क्षेत्र मानें, विशिष्ट घटनाओं का पूर्वानुमान नहीं।

पंचम भाव (संतान और बुद्धि) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो तृतीय भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। धनु पर 26 बिंदु हैं।

❖ षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

6

षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

मकर

–

स्वामी: शनि

सप्तम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 29

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

आपका षष्ठ भाव मकर राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी (मुख्य विषय: कर्तव्य, ढाँचा, प्रतिष्ठा)। षष्ठ भाव स्वास्थ्य की दिनचर्या, सेवा, प्रतियोगिता, ऋण, विवाद और बाधाओं पर विजय से जुड़ा है।

इसका स्वामी शनि सप्तम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, कुंभ राशि (स्वराशि) में, जो सेवा और बाधाएँ को विवाह और साझेदार से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से दूसरे स्थान पर है, जो परंपरा में इन विषयों की वृद्धि और पोषण का संकेत है। भावेश वक्री है, इसलिए इन विषयों पर समय-समय पर लौटना और उन्हें नए सिरे से गढ़ना होता है।

षष्ठ भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश शनि से आते हैं।

षष्ठ भाव पर मंगल (एकादश भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल से आती है।

चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका द्वितीय भाव है।

षष्ठ भाव मकर में कार्य, ऋण, स्पर्धा और स्वास्थ्य-दिनचर्या का भाव है। स्वामी शनि (स्वराशि) सप्तम भाव में, 29 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। सामान्य सलाह है कि जब यह भाव सक्रिय हो, आदतें और विवाद संभालें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

क्योंकि षष्ठ भाव के स्वामी सप्तम भाव में हैं, सेवा और बाधाएँ समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। मकर पर 29 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

❖ सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

7

सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

कुंभ

शनि

स्वामी: शनि

सप्तम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 25

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

आपका सप्तम भाव कुंभ राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कुंभ की स्वतंत्रता के साथ: आदर्शवादी, अपरंपरागत, मानवतावादी और तटस्थ (मुख्य विषय: नेटवर्क, आदर्श, नवाचार)।

इसका स्वामी शनि इसी भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, कुंभ राशि (स्वराशि) में।

सप्तम भाव में ग्रह: शनि। शनि (स्वराशि) विवाह और साझेदार में आपके अनुशासन का प्रभाव लाता है।

सप्तम भाव पर सूर्य (प्रथम भाव से), बुध (प्रथम भाव से), गुरु (तृतीय भाव से) और राहु (तृतीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग बुध और गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा सूर्य और राहु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक शुक्र आपके द्वितीय भाव (नीच) में है। 25 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका तृतीय भाव है।

सप्तम भाव कुंभ में साझेदारी, समझौते और सार्वजनिक "अन्य" का भाव है। स्वामी शनि (स्वराशि) सप्तम भाव में हैं, राशि पर 25 बिंदु हैं, स्थित ग्रह शनि। इस स्वामी की दशा समझौतों और निकट संबंधों की समीक्षा का उपयोगी समय है, विवाह या विच्छेद की गारंटी वाली तिथि नहीं।

सप्तम भाव को विवाह और साझेदार के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि कुंभ, स्वामी शनि सप्तम भाव में, 25 बिंदु। यह मानचित्र संबंधित दशाओं में चिंतन के लिए है, परिणाम बाँधने के लिए नहीं।

❖ अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन

8

अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन

मीन

–

स्वामी: गुरु

तृतीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 25

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन

आपका अष्टम भाव मीन राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मीन की संवेदनशीलता के साथ: कल्पनाशील, करुणामय, आध्यात्मिक और भावों को सहज ग्रहण करने वाला (मुख्य विषय: समर्पण, कल्पना, मुक्ति)। अष्टम भाव आयु, अचानक घटनाओं, विरासत, संयुक्त धन, शोध और गूढ़ विद्या से जुड़ा है।

इसका स्वामी गुरु तृतीय भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, तुला राशि (शत्रु राशि) में, जो रूपांतरण और विरासत को पराक्रम और भाई-बहन से जोड़ता है।

अष्टम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश गुरु से आते हैं।

अष्टम भाव पर शुक्र (द्वितीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग शुक्र से मिलता है।

इसका नैसर्गिक कारक शनि आपके सप्तम भाव (स्वराशि) में है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका चतुर्थ भाव है।

अष्टम भाव मीन में साझा संसाधन, शोध और जीवन के गहरे परिवर्तनों के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी गुरु (शत्रु राशि) तृतीय भाव में हैं, 25 बिंदु और स्थित ग्रह कोई नहीं। इसकी दशाओं को सावधानीपूर्ण योजना और ईमानदार जायजे का समय मानें, संकट की भविष्यवाणी नहीं।

क्योंकि अष्टम भाव के स्वामी तृतीय भाव में हैं, रूपांतरण और विरासत समय में उस दूसरे भाव से जुड़ता है। मीन पर 25 बिंदु सहयोग या प्रयास का संकेत देते हैं। यहाँ कोई वादा नहीं है।

❖ नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष

9

नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष

मेष

केतु

स्वामी: मंगल

एकादश भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 28

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष

आपका नवम भाव मेष राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मेष की सीधी शैली में: शीघ्र आरंभ, प्रतिस्पर्धी और स्पष्टवादिता की हद तक ईमानदार (मुख्य विषय: पहल, साहस, गति)।

इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में है, उपचय भाव, जहाँ फल समय के साथ लगातार सुधरते हैं, मिथुन राशि (शत्रु राशि) में, जो भाग्य और गुरु को लाभ और नेटवर्क से जोड़ता है।

नवम भाव में ग्रह: केतु। केतु (छाया ग्रह) भाग्य और गुरु में आपकी विरक्ति का प्रभाव लाता है।

नवम भाव पर गुरु (तृतीय भाव से), शनि (सप्तम भाव से) और राहु (तृतीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा शनि और राहु से आती है।

28 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका पंचम भाव है।

नवम भाव मेष में धर्म, उच्च अध्ययन, अर्थपूर्ण यात्रा और पिता या मार्गदर्शक का भाव है। स्वामी मंगल (शत्रु राशि) एकादश भाव में, 28 बिंदु, स्थित ग्रह केतु। परंपरा यहाँ दिशा का बोध देखती है। इस स्वामी की दशा उस दिशा को फिर देखने का समय है, वादा किया आशीर्वाद नहीं।

नवम भाव पारंपरिक रूप से भाग्य और गुरु के बारे में है। स्वामी एकादश भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 28 है। कुंडली सहयोग और प्रयास का मिश्रण बताती है, कोई निश्चित फल नहीं। दशा अध्यायों से देखें कि यह भाव कब अधिक सक्रिय है, और उन तिथियों को चिंतन का समय मानें, गारंटी नहीं।

❖ दशम भाव: करियर और पद · वृषभ

10

दशम भाव: करियर और पद · वृषभ

वृषभ

–

स्वामी: शुक्र

द्वितीय भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 35

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

दशम भाव: करियर और पद · वृषभ

आपका दशम भाव वृषभ राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, वृषभ की स्थिरता के साथ: धैर्यवान, सौंदर्य-प्रेमी, निष्ठावान और जल्दबाज़ी से दूर (मुख्य विषय: स्थिरता, सुख, मूल्य)। दशम भाव करियर, पद, अधिकार, सार्वजनिक प्रतिष्ठा और संसार में कर्म से जुड़ा है।

इसका स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में है, द्वितीय भाव, संसाधन और वाणी का भाव, कन्या राशि (नीच) में, जो करियर और पद को धन और परिवार से जोड़ता है।

दशम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश शुक्र से आते हैं।

इसका नैसर्गिक कारक बुध आपके प्रथम भाव (मित्र राशि) में है। 35 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका षष्ठ भाव है।

दशम भाव वृषभ में लोक में कार्य, स्थिति और सार्वजनिक दायित्व का भाव है। स्वामी शुक्र (नीच) द्वितीय भाव में हैं, राशि पर 35 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं। इस स्वामी की दशा को करियर दिशा और प्रतिष्ठा की समीक्षा के लिए उपयोग करें, किसी तिथि को पदोन्नति या झटके की गारंटी न मानें।

दशम भाव वृषभ में, स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में, करियर और पद का कार्य-चित्र हैं।

❖ एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन

11

एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन

मिथुन

मंगल

स्वामी: बुध

प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 36

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन

आपका एकादश भाव मिथुन राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी (मुख्य विषय: संवाद, अध्ययन, व्यापार)।

इसका स्वामी बुध प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो लाभ और नेटवर्क को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है।

एकादश भाव में ग्रह: मंगल। मंगल (शत्रु राशि) लाभ और नेटवर्क में आपकी प्रेरणा का प्रभाव लाता है।

एकादश भाव पर चंद्र (पंचम भाव से), गुरु (तृतीय भाव से) और राहु (तृतीय भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग चंद्र और गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

36 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं। चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका सप्तम भाव है।

एकादश भाव मिथुन में लाभ, सहयोगी और लंबे लक्ष्यों के लिए पढ़ा जाता है। स्वामी बुध (मित्र राशि) प्रथम भाव में हैं, 36 बिंदु और स्थित ग्रह मंगल। इस स्वामी की दशा मित्रता और लक्ष्यों का जायजा लेने का पारंपरिक समय है, किसी विशेष लाभ का पूर्वानुमान नहीं।

एकादश भाव को लाभ और नेटवर्क के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि मिथुन, स्वामी बुध प्रथम भाव में, 36 बिंदु।

❖ द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

12

द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

कर्क

–

स्वामी: चंद्र

पंचम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 26

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

आपका द्वादश भाव कर्क राशि में पड़ता है; इसके विषयों के प्रति दृष्टिकोण, कर्क की भावुकता के साथ: रक्षक, अंतर्ज्ञानी, घर और स्मृतियों से जुड़ा (मुख्य विषय: देखभाल, जड़ें, भावना)। द्वादश भाव व्यय, निद्रा, विदेश, एकांत, दान और आध्यात्मिक मोक्ष से जुड़ा है।

इसका स्वामी चंद्र पंचम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, धनु राशि (सम राशि) में, जो व्यय और मोक्ष को संतान और बुद्धि से जोड़ता है। भावेश अपने भाव से छठे स्थान पर है, इसलिए इन विषयों में प्रतियोगिता या समस्या-समाधान जुड़ा रहता है।

द्वादश भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश चंद्र से आते हैं।

चंद्र से गिनने पर यह राशि आपका अष्टम भाव है।

द्वादश भाव कर्क में एकांत, विदेश, निद्रा और छोड़ने का भाव है। स्वामी चंद्र (सम राशि) पंचम भाव में, 26 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। सामान्य सलाह है कि जब यह भाव सक्रिय हो, विश्राम, व्यय और एकांत पर ध्यान दें, इसे निश्चित हानि न मानें।

द्वादश भाव पारंपरिक रूप से व्यय और मोक्ष के बारे में है। स्वामी पंचम भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 26 है।

Ananya: ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग

> यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Ananya: ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

षड्बल ग्रहों के बल को छह प्रकार से मापता है। यह रिपोर्ट उच्च बल, सप्तवर्गज बल (सात वर्गों में गरिमा), ओज-युग्म बल, केंद्रादि बल, दिग्बल, पक्ष बल, अनुमानित चेष्टा बल और नैसर्गिक बल की गणना विरूपों में करती है (60 विरूप = 1 रूप)। कुछ काल-आधारित घटक और दृग्बल छोड़े गए हैं, इसलिए योग को शास्त्रीय न्यूनतम से नहीं, अपने ग्रहों की आपसी तुलना के रूप में पढ़ें।

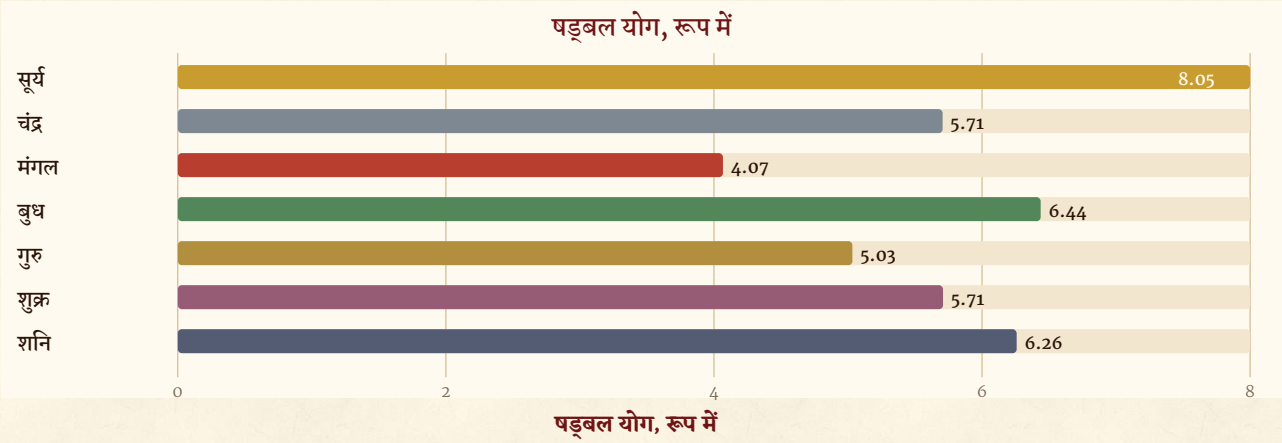

षड्बल योग रूप में दिखाए गए हैं। ऊँचा स्तंभ इस कुंडली में उस ग्रह को शास्त्रीय दृष्टि से अधिक समर्थित बताता है।

ग्रह	उच्च	सप्तवर्गज	ओज	केंद्र	दिक्	पक्ष	चेष्टा	नैसर्गिक	योग	रूप
सूर्य	23	225	30	60	37	18	30	60	483	8.05
चंद्र	11	68	0	30	55	85	42	51	342	5.71
मंगल	17	77	15	30	55	18	15	17	244	4.07
बुध	46	128	15	60	54	42	15	26	386	6.44
गुरु	27	96	30	15	43	42	15	34	302	5.03

ग्रह	उच्च	सप्तवर्गज	ओज	केंद्र	दिक्	पक्ष	चेष्टा	नैसर्गिक	योग	रूप
शुक्र	4	126	30	30	38	42	30	43	342	5.71
शनि	21	120	30	60	58	18	60	9	376	6.26

इन मापों से आपके सबसे बलवान ग्रह सूर्य और बुध हैं, इसलिए आपकी मूल पहचान एक भरोसेमंद संसाधन है। सबसे कम सहयोग गुरु और मंगल को है, इसलिए आपकी प्रेरणा से जुड़े विषयों में अतिरिक्त ध्यान और धैर्य फल देता है।

दिग्बल शनि का सबसे अधिक और सूर्य का सबसे कम है। दिग्बल बताता है कि क्षितिज और मध्याह्न-रेखा के सापेक्ष ग्रह कितनी अच्छी स्थिति में है।

❖ अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग हर ग्रह को हर राशि में अधिकतम 8 शुभ बिंदु देता है, जो सात ग्रहों और लग्न से आते हैं। अंतिम पंक्ति (सर्वाष्टकवर्ग) इनका योग है: औसत लगभग 28 प्रति राशि, कुल सदा 337।

ग्रह	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	3	5	5	3	4	4	4	3	3	3	6	5	48
चंद्र	3	6	6	4	3	2	6	3	4	4	4	4	49
मंगल	2	4	4	3	4	3	5	1	4	4	3	2	39
बुध	4	6	4	5	4	6	4	3	5	6	2	5	54
गुरु	7	5	7	4	5	4	4	4	4	7	3	2	56
शुक्र	6	4	6	4	4	3	6	5	5	3	3	3	52
शनि	3	5	4	3	5	2	3	3	1	2	4	4	39
सर्वाष्टकवर्ग	28	35	36	26	29	24	32	22	26	29	25	25	337

अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	tot
सूर्य	3	5	5	3	4	4	4	3	3	3	6	5	48
चंद्र	3	6	6	4	3	2	6	3	4	4	4	4	49
मंगल	2	4	4	3	4	3	5	1	4	4	3	2	39
बुध	4	6	4	5	4	6	4	3	5	6	2	5	54
गुरु	7	5	7	4	5	4	4	4	4	7	3	2	56
शुक्र	6	4	6	4	4	3	6	5	5	3	3	3	52
शनि	3	5	4	3	5	2	3	3	1	2	4	4	39
सर्वाष्टकवर्ग	28	35	36	26	29	24	32	22	26	29	25	25	337

अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

गहरे कोष्ठकों में अधिक अष्टकवर्ग बिंदु हैं (0 से 8)। अंतिम स्तंभ पंक्ति का योग है। यह समर्थन का मानचित्र है, पूर्वानुमान नहीं।

आपकी सबसे समर्थित राशियाँ मिथुन (एकादश भाव, 36 बिंदु) और वृषभ (दशम भाव, 35) हैं, इसलिए लाभ और नेटवर्क को स्थिर सहयोग मिलता है। वृश्चिक (चतुर्थ भाव, 22) सबसे कम समर्थित है, इसलिए घर और माता में धैर्य चाहिए, विशेषकर जब धीमे ग्रह वहाँ से गोचर करें।

पुरुषार्थ के अनुसार: धर्म भाव (1, 5, 9) का योग 83, अर्थ भाव (2, 6, 10) 88, काम भाव (3, 7, 11) 93 और मोक्ष भाव (4, 8, 12) 73। ज़ोर काम: संबंध, इच्छा और उद्यम पर है।

आपके लाभ भाव (एकादश) में 36 बिंदु और व्यय भाव (द्वादश) में 26 बिंदु हैं। परंपरा में द्वादश से अधिक बिंदु एकादश में होना बचत के अनुकूल माना जाता है।

सूर्य: अपनी जन्म-राशि सिंह में 4 बिंदु (औसत); कुल 48, सबसे अच्छी राशि कुंभ।

चंद्र: अपनी जन्म-राशि धनु में 4 बिंदु (औसत); कुल 49, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

मंगल: अपनी जन्म-राशि मिथुन में 4 बिंदु (औसत); कुल 39, सबसे अच्छी राशि तुला।

बुध: अपनी जन्म-राशि सिंह में 4 बिंदु (औसत); कुल 54, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

गुरु: अपनी जन्म-राशि तुला में 4 बिंदु (औसत); कुल 56, सबसे अच्छी राशि मेष।

शुक्र: अपनी जन्म-राशि कन्या में 3 बिंदु (औसत से कम); कुल 52, सबसे अच्छी राशि मेष।

शनि: अपनी जन्म-राशि कुंभ में 4 बिंदु (औसत); कुल 39, सबसे अच्छी राशि वृषभ।

Ananya: आपकी कुंडली के योग और दोष

> यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Ananya: आपकी कुंडली के योग और दोष" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

योग ग्रहों के परिभाषित संयोजन हैं; दोष पारंपरिक पीड़ा-संयोजन हैं। हर एक के साथ आपकी कुंडली में मिली सटीक स्थिति दी गई है। योग वह संभावना दिखाता है जो मुख्यतः उसे बनाने वाले ग्रहों की दशाओं में फलती है।

संयोजन	प्रकार
बुधादित्य योग	योग
शश योग (पंच महापुरुष)	योग
केमद्रुम (पारंपरिक टिप्पणी)	दोष / टिप्पणी
वेशि योग	योग
अमला योग	योग
राजयोग	योग
योगकारक	योग
धन योग	योग
धन योग	योग
नीचभंग जाँच	योग
गुरु-चांडाल योग (पारंपरिक)	दोष / टिप्पणी
मांगलिक (कुज) स्थिति	दोष / टिप्पणी

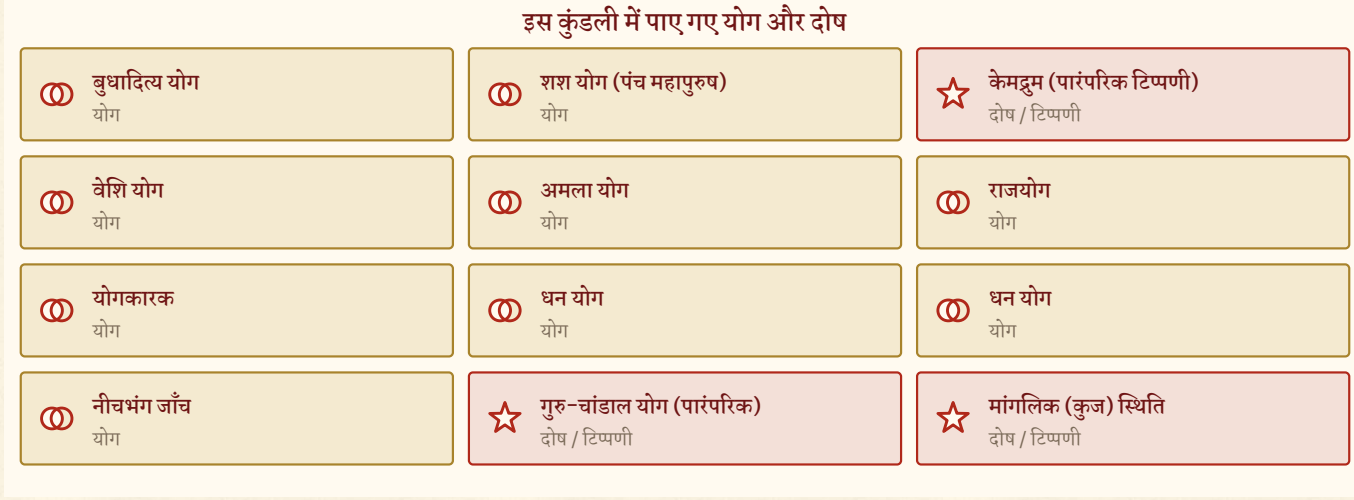

इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

प्रत्येक कार्ड एक नामित योग है जो वास्तव में इस जन्म कुंडली में है। सोने की किनारी वाले कार्ड सहायक योग हैं; लाल किनारी वाले दोष हैं जो सावधानी माँगते हैं। नामित योग एक पारंपरिक पैटर्न है, फल की गारंटी नहीं। नीचे के नोट प्रत्येक को इस कुंडली के संदर्भ में समझाते हैं।

❖ उपस्थित योग

❖ बुधादित्य योग

सूर्य और बुध एक ही राशि में हैं।

बुद्धि, स्पष्ट वाणी और प्रशासनिक क्षमता। यह बहुत सामान्य है; बुध के अस्त न होने पर अधिक प्रबल।

यहाँ बुध अस्त है, इसलिए यह योग शांत, आंतरिक रूप में कार्य करता है।

❖ शश योग (पंच महापुरुष)

शनि सप्तम भाव में स्वराशि है, जो एक केंद्र है।

अनुशासन, संगठन और सहनशक्ति से बना अधिकार; समूहों का नेतृत्व।

❖ वेशि योग

सूर्य से दूसरे भाव में शुक्र।

संतुलित दृष्टिकोण, सत्यनिष्ठा और स्थिर प्रयास।

❖ अमला योग

लग्न या चंद्र से दशम भाव में शुक्र।

स्वच्छ प्रतिष्ठा और व्यावसायिक जीवन में नैतिक आचरण।

❖ राजयोग

शनि (सप्तम भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) परस्पर दृष्टि से जुड़े हैं।

पद, मान्यता और नेतृत्व की क्षमता, विशेषकर इन ग्रहों की दशाओं में।

इन ग्रहों की दशाएँ जीवन में बहुत बाद में आती हैं, इसलिए इस योग को किसी घटना की बजाय धीरे-धीरे परिपक्व होने वाले गुण के रूप में पढ़ें।

❖ योगकारक

मंगल केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है (चतुर्थ और नवम)।

ऐसा एकल ग्रह जो स्वयं राजयोग की क्षमता रखता है; इसकी दशाएँ परंपरा में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

इसकी महादशा एक मुख्य अवधि है: मंगल (2033–2040)।

❖ धन योग

बुध (द्वितीय भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) एक साथ हैं।

इन भावों के विषयों से धन-संचय की क्षमता।

❖ धन योग

बुध (एकादश भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) एक साथ हैं।

इन भावों के विषयों से धन-संचय की क्षमता।

❖ नीचभंग जाँच

शुक्र नीच का है।

नीचता भंग करने वाले कारक: बुध (राशि-स्वामी) लग्न से केंद्र में है।

❖ दोष और पारंपरिक टिप्पणियाँ

❖ केमद्रुम (पारंपरिक टिप्पणी)

चंद्र से दूसरे, बारहवें या साथ में सूर्य और राहु-केतु के अतिरिक्त कोई ग्रह नहीं है।

शास्त्रों में इसे असहाय महसूस करने के दौर से जोड़ा गया है। यह सामान्य है और प्रायः भंग होता है; भरोसेमंद सहयोग-संबंध बनाएँ।

परिहार: चंद्र से केंद्र में मंगल और शुक्र इसे नरम करता है।

❖ गुरु-चांडाल योग (पारंपरिक)

गुरु राहु के साथ एक ही राशि में है।

अपरंपरागत विश्वास या गुरु; नैतिकता और अच्छा परामर्श पास रखें।

❖ मांगलिक (कुज) स्थिति

मंगल चंद्र से मांगलिक भाव में है।

यह केवल पारंपरिक विवाह-मिलान का कारक है; लगभग आधी कुंडलियाँ किसी न किसी नियम से इसमें आती हैं। परिहार: 1 पारंपरिक परिहार उपस्थित, मांगलिक खंड में सूचीबद्ध।

> योग और दोष पारंपरिक संभावनाओं और प्रवृत्तियों का वर्णन करते हैं। इनमें से कोई भी गारंटी या दंड नहीं है, और किसी को "ठीक" करने के लिए कोई अनुष्ठान या ख़रीद आवश्यक नहीं।

Ananya: D9 · नवांश

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Ananya: D9 · नवांश" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

❖ D9 (नवांश) का फल: विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल

D9 का लग्न तुला है; इसका स्वामी शुक्र इस कुंडली के अष्टम भाव में वृषभ राशि (स्वराशि) में है। D9 में, जिसे परंपरा विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी चंद्र हैं, नवम भाव में मिथुन में (मित्र राशि)। यह स्थिति इस वर्ग-कुंडली के विषय को सहारा या तनाव कैसे देती है, इसका पहला संकेत मानी जाती है। D9 में बलवान (उच्च या स्वराशि): सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि, जो विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल में सहायक है। D9 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: सूर्य।

ग्रह	राशि	भाव	बल
सूर्य	मेष	सप्तम भाव	उच्च
चंद्र	मिथुन	नवम भाव	मित्र राशि
मंगल	वृश्चिक	द्वितीय भाव	स्वराशि
बुध	वृषभ	अष्टम भाव	मित्र राशि
गुरु	कुंभ	पंचम भाव	सम राशि
शुक्र	वृषभ	अष्टम भाव	स्वराशि
शनि	कुंभ	पंचम भाव	स्वराशि
राहु	वृषभ	अष्टम भाव	छाया ग्रह
केतु	वृश्चिक	द्वितीय भाव	छाया ग्रह

D9 में सूर्य (आपकी मूल पहचान) मेष में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा उच्च। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के क्षेत्र में विवाह और साझेदार को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D9 में मंगल (आपकी प्रेरणा) वृश्चिक में द्वितीय भाव में हैं, गरिमा स्वराशि। इस वर्ग में द्वितीय भाव पारंपरिक रूप से धन और परिवार से जुड़ा है; इसे विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के आसपास दबाव या मुक्ति के बिंदु की तरह पढ़ें, निर्णय की तरह नहीं।

D9 में गुरु (आपके ज्ञान) कुंभ में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा सम राशि। त्रिकोणीय स्थिति को अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए शांत सहयोग की तरह पढ़ा जाता है।

D9 में शनि (आपके अनुशासन) कुंभ में पंचम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा स्वराशि।

ऊपर का D9 पाठ विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल का पारंपरिक दृष्टि से वर्णन है। यह जन्म कुंडली का स्थान नहीं लेता, और घटनाओं की गारंटी नहीं देता। इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

Ananya: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल

Ananya: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल

> यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Ananya: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

आपका विंशोत्तरी क्रम केतु से आरंभ होता है, जो आपके जन्म-नक्षत्र मूल का स्वामी है; जन्म के समय उस दशा के 3.2 वर्ष शेष थे। वर्तमान अवधि को रेखांकित किया गया है।

विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

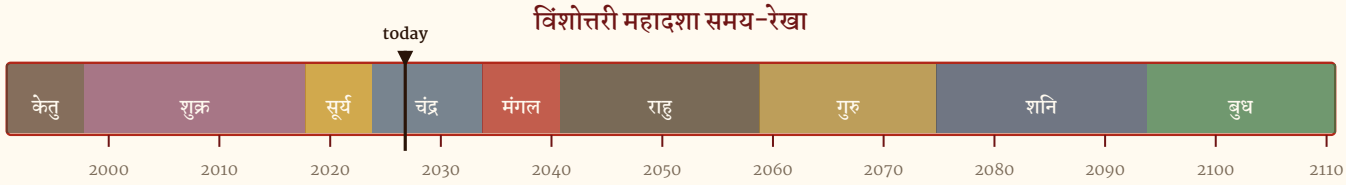

विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

प्रत्येक खंड जन्म से एक महादशा है। चिह्न आज की तिथि है। इसे पारंपरिक समय का मानचित्र मानें, घटनाओं की गारंटी नहीं।

महादशा	से	तक	वर्ष	स्वामी स्थित
केतु	14 अक्टूबर 1990	13 अक्टूबर 1997	7.0	नवम भाव
शुक्र	13 अक्टूबर 1997	13 अक्टूबर 2017	20.0	द्वितीय भाव
सूर्य	13 अक्टूबर 2017	14 अक्टूबर 2023	6.0	प्रथम भाव
चंद्र	**14 अक्टूबर 2023**	**13 अक्टूबर 2033**	**10.0**	**पंचम भाव**
मंगल	13 अक्टूबर 2033	13 अक्टूबर 2040	7.0	एकादश भाव
राहु	13 अक्टूबर 2040	13 अक्टूबर 2058	18.0	तृतीय भाव
गुरु	13 अक्टूबर 2058	13 अक्टूबर 2074	16.0	तृतीय भाव
शनि	13 अक्टूबर 2074	13 अक्टूबर 2093	19.0	सप्तम भाव

वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

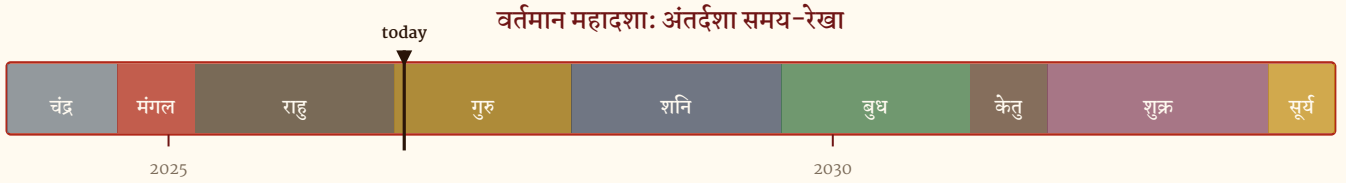

वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

यह पट्टी उसी महादशा को उसकी अंतर्दशाओं में बाँट कर दिखाती है, और चिह्नित भाग वह अंतर्दशा है जो अभी चल रही है।

❖ चंद्र महादशा · 2023–2033

2023 से 2033 तक चंद्र महादशा आपके मन, भावनाओं, माता, घरेलू जीवन और संतोष की क्षमता को अग्रभूमि में लाती है।

चंद्र आपके पंचम भाव में धनु राशि में है और सम राशि में है, इसलिए संतान और बुद्धि पर ज़ोर रहता है।

द्वादश भाव का स्वामी होने से यह व्यय और मोक्ष को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में चंद्र का 7 में से 5वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

❖ मंगल महादशा · 2033–2040

2033 से 2040 तक मंगल महादशा आपकी प्रेरणा, साहस, शारीरिक ऊर्जा, भाई-बहनों और प्रतिस्पर्धा की रुचि को अग्रभूमि में लाती है।

मंगल आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में है और शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए, इसलिए लाभ और नेटवर्क पर ज़ोर रहता है।

चतुर्थ भाव और नवम भाव का स्वामी होने से यह घर और माता; भाग्य और गुरु को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में मंगल का 7 में से 7वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

मंगल से जुड़े योग: योगकारक; परंपरा के अनुसार ये इसी अवधि में फलते हैं।

❖ राहु महादशा · 2040–2058

2040 से 2058 तक राहु महादशा आपकी सांसारिक भूख, महत्वाकांक्षा और नए व विदेशी के प्रति आकर्षण को अग्रभूमि में लाती है।

राहु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में है और छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी शुक्र के माध्यम से कार्य करता है, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन पर ज़ोर रहता है।

❖ गुरु महादशा · 2058–2074

2058 से 2074 तक गुरु महादशा आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ को अग्रभूमि में लाती है।

गुरु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में है और शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन पर ज़ोर रहता है।

पंचम भाव और अष्टम भाव का स्वामी होने से यह संतान और बुद्धि; रूपांतरण और विरासत को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में गुरु का 7 में से 6वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

❖ अगले 20 वर्षों की अंतर्दशाएँ, एक-एक कर

हर अंतर्दशा महादशा-स्वामी और अंतर्दशा-स्वामी को जोड़ती है। फल में उनकी मित्रता, आपसी दूरी, अंतर्दशा-स्वामी का भाव और बल, उसके स्वामित्व वाले भाव, और अवधि के मध्य में गुरु व शनि का गोचर देखा गया है।

अवधि	से	तक
चंद्र / गुरु	**13 सितंबर 2026**	**13 जनवरी 2028**
चंद्र / शनि	13 जनवरी 2028	13 अगस्त 2029
चंद्र / बुध	13 अगस्त 2029	13 जनवरी 2031
चंद्र / केतु	13 जनवरी 2031	14 अगस्त 2031
चंद्र / शुक्र	14 अगस्त 2031	14 अप्रैल 2033
चंद्र / सूर्य	14 अप्रैल 2033	13 अक्टूबर 2033
मंगल / मंगल	13 अक्टूबर 2033	11 मार्च 2034
मंगल / राहु	11 मार्च 2034	30 मार्च 2035
मंगल / गुरु	30 मार्च 2035	5 मार्च 2036
मंगल / शनि	5 मार्च 2036	14 अप्रैल 2037
मंगल / बुध	14 अप्रैल 2037	11 अप्रैल 2038

अवधि	से	तक
मंगल / केतु	11 अप्रैल 2038	7 सितंबर 2038
मंगल / शुक्र	7 सितंबर 2038	7 नवंबर 2039
मंगल / सूर्य	7 नवंबर 2039	14 मार्च 2040
मंगल / चंद्र	14 मार्च 2040	13 अक्टूबर 2040
राहु / राहु	13 अक्टूबर 2040	26 जून 2043
राहु / गुरु	26 जून 2043	19 नवंबर 2045
राहु / शनि	19 नवंबर 2045	25 सितंबर 2048

❖ चंद्र / गुरु · सितंबर 2026 – जनवरी 2028

चंद्र और गुरु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर गुरु की स्थिति से तय होता है। गुरु, चंद्र से 11 राशि दूर है। गुरु आपके तृतीय भाव में है, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन आगे आते हैं; यह शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए। गुरु संतान और बुद्धि; रूपांतरण और विरासत का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके अष्टम भाव में (मिश्रित) और शनि चतुर्थ भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। गुरु स्वाति में, पाद 3, तृतीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से पढ़ा जाता है। यह स्थिति-पाठ है, उप-अवधि में किसी विशेष घटना का पूर्वानुमान नहीं। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: सीखें, सिखाएँ, मार्गदर्शक खोजें और दीर्घकालिक वृद्धि में निवेश करें।

❖ चंद्र / शनि · जनवरी 2028 – अगस्त 2029

चंद्र और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, चंद्र से 3 राशि दूर है। शनि आपके सप्तम भाव में है, इसलिए विवाह और साझेदार आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है। शनि सेवा और बाधाएँ; विवाह और साझेदार का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके दशम भाव में (मिश्रित) और शनि पंचम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। शनि शतभिषा में, पाद 3, सप्तम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः विवाह और साझेदार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: स्थिर कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहें और दायित्वों को सरल करें।

❖ चंद्र / बुध · अगस्त 2029 – जनवरी 2031

चंद्र और बुध नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। बुध, चंद्र से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। बुध आपके प्रथम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य आगे आते हैं; यह मित्र राशि में है। बुध धन और परिवार; लाभ और नेटवर्क का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वादश भाव में (मिश्रित) और शनि षष्ठ भाव में (सहायक) गोचर करता है। बुध मघा में, पाद 2, प्रथम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: अध्ययन, लेखन, वार्ता और व्यवस्था करें।

❖ चंद्र / केतु · जनवरी 2031 – अगस्त 2031

चंद्र और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, चंद्र से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। केतु आपके नवम भाव में है, इसलिए भाग्य और गुरु आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी मंगल के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके प्रथम भाव में (मिश्रित) और शनि षष्ठ भाव में (सहायक) गोचर करता है। केतु भरणी में, पाद 4, नवम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः भाग्य और गुरु के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: पुराने काम पूरे करें, शोध करें और भीतर की ओर मुड़ें।

❖ चंद्र / शुक्र · अगस्त 2031 – अप्रैल 2033

चंद्र और शुक्र एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शुक्र की स्थिति से तय होता है। शुक्र, चंद्र से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। शुक्र आपके द्वितीय भाव में है, इसलिए धन और परिवार आगे आते हैं; यह नीच का है, इसलिए इसके फल प्रयास के बाद आते हैं। शुक्र पराक्रम और भाई-बहन; करियर और पद का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वितीय भाव में (सहायक)

और शनि सप्तम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। शुक्र हस्त में, पाद 2, द्वितीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः धन और परिवार के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: संबंधों, सुख-सुविधा और रचनात्मक कार्य को पोषित करें।

❖ चंद्र / सूर्य · अप्रैल 2033 – अक्टूबर 2033

चंद्र और सूर्य नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। सूर्य, चंद्र से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। सूर्य आपके प्रथम भाव में है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है। सूर्य स्वयं और स्वास्थ्य का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके तृतीय भाव में (मिश्रित) और शनि सप्तम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। सूर्य मघा में, पाद 1, प्रथम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः स्वयं और स्वास्थ्य के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: ज़िम्मेदारी लें और दिखने वाली भूमिकाओं में आगे आएँ।

❖ मंगल / मंगल · अक्टूबर 2033 – मार्च 2034

यह महादशा की पहली अंतर्दशा है, जब मंगल के विषय अपने शुद्धतम रूप में आते हैं। मंगल आपके एकादश भाव में है, इसलिए लाभ और नेटवर्क आगे आते हैं; यह शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए। मंगल घर और माता; भाग्य और गुरु का भी स्वामी है। मंगल मृगशिरा में, पाद 4, एकादश भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः लाभ और नेटवर्क के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: ऊर्जा को निर्णायक, शारीरिक या तकनीकी कार्य में लगाएँ।

❖ मंगल / राहु · मार्च 2034 – मार्च 2035

मंगल और राहु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर राहु की स्थिति से तय होता है। राहु, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। राहु आपके तृतीय भाव में है, इसलिए पराक्रम और भाई-बहन आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी शुक्र के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके चतुर्थ भाव में (मिश्रित) और शनि अष्टम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। राहु विशाखा में, पाद 2, तृतीय भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः पराक्रम और भाई-बहन के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: तथ्यों की सावधानी से जाँच करते हुए नए क्षेत्र खोजें।

❖ मंगल / गुरु · मार्च 2035 – मार्च 2036

मंगल और गुरु नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। गुरु, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके पंचम भाव में (सहायक) और शनि अष्टम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ मंगल / शनि · मार्च 2036 – अप्रैल 2037

मंगल और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, मंगल से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके सप्तम भाव में (सहायक) और शनि नवम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ मंगल / बुध · अप्रैल 2037 – अप्रैल 2038

मंगल और बुध नैसर्गिक शत्रु हैं, इसलिए दोनों ग्रहों के विषयों में कुछ खिंचाव की अपेक्षा रखें। बुध, मंगल से 3 राशि दूर है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके अष्टम भाव में (मिश्रित) और शनि नवम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ मंगल / केतु · अप्रैल 2038 – सितंबर 2038

मंगल और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, मंगल से 11 राशि दूर है।

❖ मंगल / शुक्र · सितंबर 2038 – नवंबर 2039

मंगल और शुक्र एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शुक्र की स्थिति से तय होता है। शुक्र, मंगल से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है।

❖ मंगल / सूर्य · नवंबर 2039 – मार्च 2040

मंगल और सूर्य नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। सूर्य, मंगल से 3 राशि दूर है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके दशम भाव में (मिश्रित) और शनि दशम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ मंगल / चंद्र · मार्च 2040 – अक्टूबर 2040

मंगल और चंद्र नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। चंद्र, मंगल से केंद्र में है, जो ठोस कार्य में सहायक है। चंद्र आपके पंचम भाव में है, इसलिए संतान और बुद्धि आगे आते हैं; यह सम राशि में है। चंद्र व्यय और मोक्ष का भी स्वामी है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके नवम भाव में (सहायक) और शनि दशम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। चंद्र मूल में, पाद 3, पंचम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः संतान और बुद्धि के माध्यम से पढ़ा जाता है। अवधि का सर्वोत्तम उपयोग: विश्राम और परिवार के समय की रक्षा करें और अंतर्ज्ञान पर चलें।

❖ राहु / राहु · अक्टूबर 2040 – जून 2043

यह महादशा की पहली अंतर्दशा है, जब राहु के विषय अपने शुद्धतम रूप में आते हैं। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वादश भाव में (मिश्रित) और शनि एकादश भाव में (सहायक) गोचर करता है।

❖ राहु / गुरु · जून 2043 – नवंबर 2045

राहु और गुरु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर गुरु की स्थिति से तय होता है। गुरु और राहु एक ही राशि में हैं। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वितीय भाव में (सहायक) और शनि द्वादश भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ राहु / शनि · नवंबर 2045 – सितंबर 2048

राहु और शनि एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर शनि की स्थिति से तय होता है। शनि, राहु से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके पंचम भाव में (सहायक) और शनि प्रथम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ चंद्र / गुरु के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

प्रत्यंतर	से	तक	केंद्र-विषय
गुरु	13 सितंबर 2026	17 नवंबर 2026	तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन
शनि	17 नवंबर 2026	2 फ़रवरी 2027	सप्तम भाव: विवाह और साझेदार
बुध	2 फ़रवरी 2027	12 अप्रैल 2027	प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य
केतु	12 अप्रैल 2027	11 मई 2027	नवम भाव: भाग्य और गुरु
शुक्र	11 मई 2027	31 जुलाई 2027	द्वितीय भाव: धन और परिवार
सूर्य	31 जुलाई 2027	24 अगस्त 2027	प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य
चंद्र	24 अगस्त 2027	4 अक्टूबर 2027	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
मंगल	4 अक्टूबर 2027	1 नवंबर 2027	एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क
राहु	1 नवंबर 2027	13 जनवरी 2028	तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन

❖ चंद्र / शनि के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

प्रत्यंतर	से	तक	केंद्र-विषय
शनि	13 जनवरी 2028	14 अप्रैल 2028	सप्तम भाव: विवाह और साझेदार
बुध	14 अप्रैल 2028	5 जुलाई 2028	प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य
केतु	5 जुलाई 2028	7 अगस्त 2028	नवम भाव: भाग्य और गुरु
शुक्र	7 अगस्त 2028	12 नवंबर 2028	द्वितीय भाव: धन और परिवार

प्रत्यंतर	से	तक	केंद्र-विषय
सूर्य	12 नवंबर 2028	11 दिसंबर 2028	प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य
चंद्र	11 दिसंबर 2028	28 जनवरी 2029	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
मंगल	28 जनवरी 2029	3 मार्च 2029	एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क
राहु	3 मार्च 2029	28 मई 2029	तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन
गुरु	28 मई 2029	13 अगस्त 2029	तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन

Ananya: जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Ananya: जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

पारंपरिक जन्म पत्रिका में जीवन की हर महादशा उसकी नौ अंतर्दशाओं सहित लिखी जाती है। नीचे हर अंतर्दशा का आकलन आपकी अपनी कुंडली से किया गया है: उसका स्वामी महादशा-स्वामी का नैसर्गिक मित्र है या शत्रु, दोनों एक-दूसरे से कितनी दूरी पर हैं (केंद्र और त्रिकोण की दूरी सहायक, छठी, आठवीं और बारहवीं दूरी कठिन), और अंतर्दशा-स्वामी की अपनी गरिमा। सहायक अवधियाँ नए काम शुरू करने के लिए अच्छी हैं; परिश्रम-साध्य अवधियों में धैर्य, तैयारी और नियमितता फल देती है। चालू अंतर्दशा रेखांकित है।

❖ केतु महादशा · 17 अगस्त 1994 – 13 अक्टूबर 1997 (आयु 0–3)

केतु आपके नवम भाव में मेष राशि में (छाया ग्रह) है। यहाँ कोई अंतर्दशा स्पष्ट रूप से सहायक नहीं आती, इसलिए समय से अधिक निरंतर प्रयास का महत्व है। यहाँ कोई अंतर्दशा स्पष्ट रूप से कठिन नहीं है।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
राहु	17 अगस्त 1994	2 अक्टूबर 1994	तृतीय भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
गुरु	2 अक्टूबर 1994	7 सितंबर 1995	तृतीय भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
शनि	7 सितंबर 1995	16 अक्टूबर 1996	सप्तम भाव	एकादश	सम	मिश्रित
बुध	16 अक्टूबर 1996	13 अक्टूबर 1997	प्रथम भाव	पंचम	सम	मिश्रित

❖ शुक्र महादशा · 13 अक्टूबर 1997 – 13 अक्टूबर 2017 (आयु 3–23)

शुक्र आपके द्वितीय भाव में कन्या राशि में (नीच) है। यह तृतीय और दशम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: सूर्य और केतु।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
शुक्र	13 अक्टूबर 1997	12 फ़रवरी 2001	द्वितीय भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
सूर्य	12 फ़रवरी 2001	12 फ़रवरी 2002	प्रथम भाव	द्वादश	शत्रु	परिश्रम-साध्य
चंद्र	12 फ़रवरी 2002	14 अक्टूबर 2003	पंचम भाव	चतुर्थ	शत्रु	मिश्रित
मंगल	14 अक्टूबर 2003	13 दिसंबर 2004	एकादश भाव	दशम	सम	मिश्रित
राहु	13 दिसंबर 2004	14 दिसंबर 2007	तृतीय भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
गुरु	14 दिसंबर 2007	14 अगस्त 2010	तृतीय भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
शनि	14 अगस्त 2010	13 अक्टूबर 2013	सप्तम भाव	षष्ठ	मित्र	मिश्रित

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
बुध	13 अक्टूबर 2013	13 अगस्त 2016	प्रथम भाव	द्वादश	मित्र	मिश्रित
केतु	13 अगस्त 2016	13 अक्टूबर 2017	नवम भाव	अष्टम	सम	परिश्रम-साध्य

❖ सूर्य महादशा · 13 अक्टूबर 2017 – 14 अक्टूबर 2023 (आयु 23–29)

सूर्य आपके प्रथम भाव में सिंह राशि में (स्वराशि) है। यह प्रथम भाव का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: चंद्र। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शुक्र।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
सूर्य	13 अक्टूबर 2017	31 जनवरी 2018	प्रथम भाव	प्रथम	स्वयं की	सहायक
चंद्र	31 जनवरी 2018	2 अगस्त 2018	पंचम भाव	पंचम	मित्र	सहायक
मंगल	2 अगस्त 2018	7 दिसंबर 2018	एकादश भाव	एकादश	मित्र	मिश्रित
राहु	7 दिसंबर 2018	1 नवंबर 2019	तृतीय भाव	तृतीय	सम	मिश्रित
गुरु	1 नवंबर 2019	19 अगस्त 2020	तृतीय भाव	तृतीय	मित्र	मिश्रित
शनि	19 अगस्त 2020	1 अगस्त 2021	सप्तम भाव	सप्तम	शत्रु	मिश्रित
बुध	1 अगस्त 2021	8 जून 2022	प्रथम भाव	प्रथम	सम	मिश्रित
केतु	8 जून 2022	14 अक्टूबर 2022	नवम भाव	नवम	सम	मिश्रित
शुक्र	14 अक्टूबर 2022	14 अक्टूबर 2023	द्वितीय भाव	द्वितीय	शत्रु	परिश्रम-साध्य

❖ चंद्र महादशा · 14 अक्टूबर 2023 – 13 अक्टूबर 2033 (आयु 29–39)

चंद्र आपके पंचम भाव में धनु राशि में (सम राशि) है। यह द्वादश भाव का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध और सूर्य।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
चंद्र	14 अक्टूबर 2023	13 अगस्त 2024	पंचम भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
मंगल	13 अगस्त 2024	14 मार्च 2025	एकादश भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
राहु	14 मार्च 2025	13 सितंबर 2026	तृतीय भाव	एकादश	सम	मिश्रित
गुरु	**13 सितंबर 2026**	**13 जनवरी 2028**	**तृतीय भाव**	**एकादश**	**सम**	**मिश्रित**
शनि	13 जनवरी 2028	13 अगस्त 2029	सप्तम भाव	तृतीय	सम	मिश्रित
बुध	13 अगस्त 2029	13 जनवरी 2031	प्रथम भाव	नवम	मित्र	सहायक
केतु	13 जनवरी 2031	14 अगस्त 2031	नवम भाव	पंचम	सम	मिश्रित
शुक्र	14 अगस्त 2031	14 अप्रैल 2033	द्वितीय भाव	दशम	सम	मिश्रित
सूर्य	14 अप्रैल 2033	13 अक्टूबर 2033	प्रथम भाव	नवम	मित्र	सहायक

❖ मंगल महादशा · 13 अक्टूबर 2033 – 13 अक्टूबर 2040 (आयु 39–46)

मंगल आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में (शत्रु राशि) है। यह चतुर्थ और नवम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: गुरु, शनि, सूर्य और चंद्र। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
मंगल	13 अक्टूबर 2033	11 मार्च 2034	एकादश भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
राहु	11 मार्च 2034	30 मार्च 2035	तृतीय भाव	पंचम	सम	मिश्रित
गुरु	30 मार्च 2035	5 मार्च 2036	तृतीय भाव	पंचम	मित्र	सहायक
शनि	5 मार्च 2036	14 अप्रैल 2037	सप्तम भाव	नवम	सम	सहायक
बुध	14 अप्रैल 2037	11 अप्रैल 2038	प्रथम भाव	तृतीय	शत्रु	परिश्रम-साध्य

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
केतु	11 अप्रैल 2038	7 सितंबर 2038	नवम भाव	एकादश	सम	मिश्रित
शुक्र	7 सितंबर 2038	7 नवंबर 2039	द्वितीय भाव	चतुर्थ	सम	मिश्रित
सूर्य	7 नवंबर 2039	14 मार्च 2040	प्रथम भाव	तृतीय	मित्र	सहायक
चंद्र	14 मार्च 2040	13 अक्टूबर 2040	पंचम भाव	सप्तम	मित्र	सहायक

❖ राहु महादशा · 13 अक्टूबर 2040 – 13 अक्टूबर 2058 (आयु 46–64)

राहु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में (छाया ग्रह) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शुक्र।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
राहु	13 अक्टूबर 2040	26 जून 2043	तृतीय भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
गुरु	26 जून 2043	19 नवंबर 2045	तृतीय भाव	प्रथम	सम	मिश्रित
शनि	19 नवंबर 2045	25 सितंबर 2048	सप्तम भाव	पंचम	सम	सहायक
बुध	25 सितंबर 2048	14 अप्रैल 2051	प्रथम भाव	एकादश	सम	मिश्रित
केतु	14 अप्रैल 2051	1 मई 2052	नवम भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
शुक्र	1 मई 2052	2 मई 2055	द्वितीय भाव	द्वादश	सम	परिश्रम-साध्य
सूर्य	2 मई 2055	26 मार्च 2056	प्रथम भाव	एकादश	सम	मिश्रित
चंद्र	26 मार्च 2056	25 सितंबर 2057	पंचम भाव	तृतीय	सम	मिश्रित
मंगल	25 सितंबर 2057	13 अक्टूबर 2058	एकादश भाव	नवम	सम	मिश्रित

❖ गुरु महादशा · 13 अक्टूबर 2058 – 13 अक्टूबर 2074 (आयु 64–80)

गुरु आपके तृतीय भाव में तुला राशि में (शत्रु राशि) है। यह पंचम और अष्टम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि, सूर्य और मंगल। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध और शुक्र।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
गुरु	13 अक्टूबर 2058	30 नवंबर 2060	तृतीय भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
शनि	30 नवंबर 2060	14 जून 2063	सप्तम भाव	पंचम	सम	सहायक
बुध	14 जून 2063	19 सितंबर 2065	प्रथम भाव	एकादश	शत्रु	परिश्रम-साध्य
केतु	19 सितंबर 2065	26 अगस्त 2066	नवम भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
शुक्र	26 अगस्त 2066	25 अप्रैल 2069	द्वितीय भाव	द्वादश	शत्रु	परिश्रम-साध्य
सूर्य	25 अप्रैल 2069	12 फ़रवरी 2070	प्रथम भाव	एकादश	मित्र	सहायक
चंद्र	12 फ़रवरी 2070	14 जून 2071	पंचम भाव	तृतीय	मित्र	मिश्रित
मंगल	14 जून 2071	20 मई 2072	एकादश भाव	नवम	मित्र	सहायक
राहु	20 मई 2072	13 अक्टूबर 2074	तृतीय भाव	प्रथम	सम	मिश्रित

❖ शनि महादशा · 13 अक्टूबर 2074 – 3 अक्टूबर 2084 (आयु 80–90)

शनि आपके सप्तम भाव में कुंभ राशि में (स्वराशि) है। यह षष्ठ और सप्तम भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: शुक्र।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
शनि	13 अक्टूबर 2074	16 अक्टूबर 2077	सप्तम भाव	प्रथम	स्वयं की	सहायक
बुध	16 अक्टूबर 2077	25 जून 2080	प्रथम भाव	सप्तम	मित्र	सहायक
केतु	25 जून 2080	4 अगस्त 2081	नवम भाव	तृतीय	सम	मिश्रित
शुक्र	4 अगस्त 2081	3 अक्टूबर 2084	द्वितीय भाव	अष्टम	मित्र	परिश्रम-साध्य

Rohan: जन्म विवरण और पंचांग

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: जन्म विवरण और पंचांग" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

सूर्योदय	सूर्यास्त
07:08	18:28

अयनांश (लाहिरी)	अक्षांश / देशांतर	समय-क्षेत्र
23°45′	18.520, 73.857	Asia/Kolkata

ऋतु	अयन
शिशिर	उत्तरायण

❖ आपके जन्म-क्षण के पाँच अंग

❖ तिथि: अमावस्या

चंद्र सूर्य से 358.5° आगे था, कृष्ण पक्ष की 30 में से 30वीं तिथि में, और तिथि का लगभग 12% भाग शेष था। परंपरा इस तिथि को इन गुणों से जोड़ती है: आत्मचिंतन, पितर और शांत शक्ति।

❖ वार: सोमवार

आपका जन्म सोमवार को हुआ, जिसका स्वामी चंद्र है। सोमवार का जन्म संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशील, कल्पनाशील मन से जोड़ा जाता है।

❖ नित्य योग: व्यतीपात

सूर्य और चंद्र के भोगांशों का योग 27 में से 17वाँ योग देता है, जिसे परंपरा में अचानक मोड़ जो विवेक माँगते हैं से जोड़ा जाता है।

❖ करण: नाग

हर तिथि में दो करण होते हैं। आपके करण का पारंपरिक स्वभाव है: दृढ़ और निजी।

❖ चांद्र मास: पौष

अमांत पंचांग के अनुसार आपका जन्म पौष मास में, विक्रम संवत 2048 (शक 1913) में, शिशिर ऋतु और उत्तरायण में हुआ।

❖ अवकहड़ा चक्र

विषय	मान
लग्न	सिंह
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
योनि	वानर

विषय	मान
गण	देव
नाड़ी	अंत्य
नक्षत्र स्वामी	चंद्र
राशि स्वामी	शनि
नामाक्षर	खे
पाया	स्वर्ण पाया

Rohan: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण

Rohan: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: ग्रह-दर-ग्रह विश्लेषण" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

❖ सूर्य: षष्ठ भाव · मकर

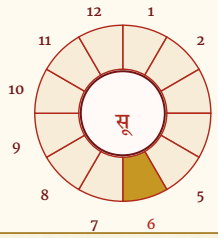

सूर्य: षष्ठ भाव · मकर

20°19′ · मकर

श्रवण · 4

शत्रु राशि

सूर्य: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह मकर राशि में 20°19′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी। राशि-स्वामी शनि, सूर्य का नैसर्गिक शत्रु है, इसलिए इसे कुछ घर्षण के बीच काम करना पड़ता है।

इसका नक्षत्र श्रवण है, जिसके देवता विष्णु (पालनकर्ता) और स्वामी चंद्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: ध्यान से सुनना; ज्ञान और विद्या। नक्षत्र स्वामी चंद्र इस ग्रह का नैसर्गिक मित्र है। 4वाँ पद कर्क नवांश में पड़ता है, जो इसे मोक्ष (मुक्ति, अंतर्दृष्टि और आंतरिक जीवन) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके षष्ठ भाव में है। यह आपके प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का स्वामी है और इन विषयों को षष्ठ भाव में ले आता है।

सूर्य की दृष्टि आपके द्वादश भाव पर है, जो वहाँ स्पष्टता, स्वाभिमान और मान्यता की चाह लाती है। सूर्य पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए यह अपनी शर्तों पर कार्य करता है।

सूर्य की चंद्र के साथ युति है (1.5° की दूरी)। सूर्य और चंद्र साथ (अमावस्या-प्रकार का जन्म) इच्छा-शक्ति और भावना को जोड़ते हैं; ध्यान प्रबल रहता है, पर विश्राम और भावनात्मक अभिव्यक्ति पर ध्यान दें। सूर्य की शनि के साथ युति है (4.3° की दूरी)। सूर्य-शनि युति दो पारंपरिक विरोधियों को जोड़ती है; धीरे बनने वाला अधिकार, कम आयु में ज़िम्मेदारी और पिता के प्रति जटिल भावनाएँ। सूर्य की बुध के साथ युति है (6.2° की दूरी)।

सूर्य कुमार अवस्था में है: यह आंशिक पर बढ़ते हुए फल देता है। बल: षड्बल में 7 में से 2वाँ स्थान (4.96 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 9.8/20, और अपनी राशि में 5 अष्टकवर्ग बिंदु।

सूर्य षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में एक अधिक माँग वाले भाव में हैं। मकर में, श्रवण पाद 4 के साथ, सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में आपकी मूल पहचान और सेवा और बाधाएँ पर अतिरिक्त ध्यान दें, निश्चित कष्ट न मानें।

षड्बल (4.96 रूप) और विंशोपक (9.8) से सूर्य को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। सूर्य की दशा में आपकी मूल पहचान के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

कुंडली सूर्य (आपकी मूल पहचान) को षष्ठ भाव में रखती है, इसलिए सेवा और बाधाएँ वह भाव है जिसके माध्यम से इस ग्रह को पढ़ा जाता है। लगभग 2099 की सूर्य दशा जाँच का पारंपरिक समय है, कोई तिथि नहीं जिस पर कुछ घटित होना ही है।

❖ चंद्र: षष्ठ भाव · मकर

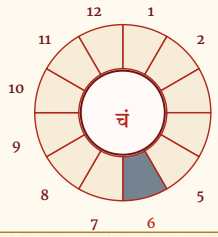

चंद्र: षष्ठ भाव · मकर

18°51′ · मकर

श्रवण · 3

सम राशि

चंद्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह मकर राशि में 18°51′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी। राशि-स्वामी शनि, चंद्र के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र श्रवण है, जिसके देवता विष्णु (पालनकर्ता) और स्वामी चंद्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: परामर्श-कौशल; ध्यान से सुनना।

यह आपके षष्ठ भाव में है। यह आपके द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) का स्वामी है और इन विषयों को षष्ठ भाव में ले आता है।

चंद्र की दृष्टि आपके द्वादश भाव पर है, जो वहाँ संवेदनशीलता, देखभाल और परिवर्तनशीलता लाती है। चंद्र पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए यह अपनी शर्तों पर कार्य करता है।

चंद्र की सूर्य के साथ युति है (1.5° की दूरी)। चंद्र की शनि के साथ युति है (2.8° की दूरी)। चंद्र-शनि युति भावनात्मक गंभीरता और सहनशक्ति देती है; आयु और दिनचर्या के साथ संतोष बढ़ता है। चंद्र की बुध के साथ युति है (4.8° की दूरी)। चंद्र-बुध युति मन को तेज़ और विनोदी बनाती है; अच्छी स्मृति और संवाद, पर अधिक सोचने की प्रवृत्ति।

चंद्र अस्त है, सूर्य से 1.5° पर। सूर्य के निकट चंद्र (अंधेरी रात का जन्म) भावनाओं को निजी और केंद्रित बनाता है। बल: षड्बल में 7 में से 5वाँ स्थान (4.06 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 11.6/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

चंद्र षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में एक अधिक माँग वाले भाव में हैं। मकर में, श्रवण पाद 3 के साथ, सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में आपके मन और सेवा और बाधाएँ पर अतिरिक्त ध्यान दें, निश्चित कष्ट न मानें।

षड्बल (4.06 रूप) और विंशोपक (11.6) से चंद्र इस कुंडली में हल्के समर्थित हैं। इनकी दशा में आपके मन के बारे में योजनाएँ सरल रखना, और सबल ग्रहों से सहयोग लेना, सामान्य सलाह है; इसे निश्चित झटका न मानें।

चंद्र श्रवण में, षष्ठ भाव में, जीवन भर आपके मन को सेवा और बाधाएँ से जोड़ते हैं। बाद की चंद्र दशाएँ उस संबंध को फिर देखने के उपयोगी क्षण हैं, निश्चित फल मानकर नहीं।

❖ मंगल: पंचम भाव · धनु

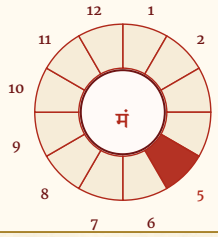

मंगल: पंचम भाव · धनु

25°11′ · धनु

पूर्वाषाढ़ा · 4

मित्र राशि

मंगल: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह धनु राशि में 25°11′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी। राशि-स्वामी गुरु, मंगल का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा है, जिसके देवता आपः (जल देवता) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: आत्मविश्वास; प्रभावशाली वाणी। नक्षत्र स्वामी शुक्र इस ग्रह का नैसर्गिक सम है।

यह आपके पंचम भाव में है। यह आपके चतुर्थ भाव (घर और माता) और नवम भाव (भाग्य और गुरु) का स्वामी है और इन विषयों को पंचम भाव में ले आता है।

मंगल की दृष्टि आपके अष्टम भाव, एकादश भाव और द्वादश भाव पर है, जो वहाँ ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव लाती है। इसकी दृष्टि केतु पर पड़ती है। इस पर गुरु और केतु की दृष्टि है (गुरु: संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श; केतु: विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़)।

मंगल की शुक्र के साथ युति है (7.4° की दूरी)। मंगल-शुक्र युति आवेग और आकर्षण को जोड़ती है; रचनात्मक और रोमांटिक तीव्रता जिसे संतुलन चाहिए। मंगल की राहु के साथ युति है (10.9° की दूरी)। मंगल-राहु युति (अंगारक) ऊर्जा और जोखिम-प्रवृत्ति बढ़ाती है; इसे खेल, तकनीक या साहसी परियोजनाओं में लगाएँ।

मंगल मृत अवस्था में है: इसके फल सक्रिय करने के लिए सचेत प्रयास चाहिए। बल: षड्बल में 7 में से 4वाँ स्थान (4.64 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 14.3/20, और अपनी राशि में 1 अष्टकवर्ग बिंदु।

मंगल पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में एक त्रिकोण स्थिति है। धनु में, पूर्वाषाढ़ा पाद 4 के साथ, परंपरा अक्सर आपकी प्रेरणा को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

षड्बल (4.64 रूप) और विंशोपक (14.3) से मंगल को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। मंगल की दशा में आपकी प्रेरणा के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

क्योंकि मंगल धनु में पंचम भाव में हैं, आपकी प्रेरणा को पारंपरिक रूप से संतान और बुद्धि के माध्यम से तब पढ़ा जाता है जब बाद में मंगल की दशा लौटती है। उन तिथियों को समीक्षा का समय मानें, गारंटी नहीं।

❖ बुध: षष्ठ भाव · मकर

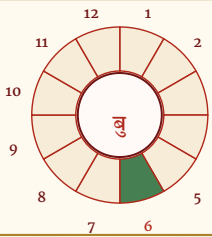

बुध: षष्ठ भाव · मकर

14°06′ · मकर

श्रवण · 2

सम राशि

बुध: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह मकर राशि में 14°06′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी। राशि-स्वामी शनि, बुध के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र श्रवण है, जिसके देवता विष्णु (पालनकर्ता) और स्वामी चंद्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: संपर्क बनाना; परामर्श-कौशल।

यह आपके षष्ठ भाव में है। यह आपके द्वितीय भाव (धन और परिवार) और एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) का स्वामी है और इन विषयों को षष्ठ भाव में ले आता है।

बुध की दृष्टि आपके द्वादश भाव पर है, जो वहाँ विचारशीलता, संवाद और विश्लेषण लाती है। बुध पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए यह अपनी शर्तों पर कार्य करता है।

बुध की शनि के साथ युति है (2.0° की दूरी)। बुध-शनि युति व्यवस्थित, गंभीर मन देती है जो शोध, लेखा और ढाँचे के लिए उपयुक्त है। बुध की चंद्र के साथ युति है (4.8° की दूरी)। बुध की सूर्य के साथ युति है (6.2° की दूरी)।

बुध अस्त है, सूर्य से 6.2° पर। बुध युवा अवस्था में है: यह अपने फल देने की पूर्ण क्षमता में है। बल: षड्बल में 7 में से 7वाँ स्थान (3.00 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 12.2/20, और अपनी राशि में 6 अष्टकवर्ग बिंदु।

बुध षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में एक अधिक माँग वाले भाव में हैं। मकर में, श्रवण पाद 2 के साथ, सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में आपकी सोच और सेवा और बाधाएँ पर अतिरिक्त ध्यान दें, निश्चित कष्ट न मानें।

षड्बल (3.00 रूप) और विंशोपक (12.2) से बुध इस कुंडली में हल्के समर्थित हैं। इनकी दशा में आपकी सोच के बारे में योजनाएँ सरल रखना, और सबल ग्रहों से सहयोग लेना, सामान्य सलाह है; इसे निश्चित झटका न मानें।

क्योंकि बुध मकर में हैं और आपकी सोच के विषय से जुड़े हैं, उनकी अगली दशा (लगभग 2055) सेवा और बाधाएँ की समीक्षा का स्वाभाविक समय है। षष्ठ भाव वह स्थान है जहाँ यह कुंडली में दिखता है। यहाँ कोई निश्चित फल नहीं है।

❖ गुरु: प्रथम भाव · सिंह

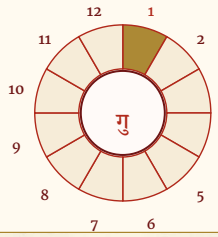

गुरु: प्रथम भाव · सिंह

19°00′ · सिंह

पूर्वा फाल्गुनी · 2

मित्र राशि

गुरु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह सिंह राशि में 19°00′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति सिंह की गरिमा के साथ: स्वाभिमानी, उदार, प्रभावशाली और नेतृत्व को उत्सुक। राशि-स्वामी सूर्य, गुरु का नैसर्गिक मित्र है, इसलिए इसे सहयोग मिलता है।

इसका नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी है, जिसके देवता भग (सौभाग्य और आनंद के देवता) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: उदारता; सामाजिक सहजता। नक्षत्र स्वामी शुक्र इस ग्रह का नैसर्गिक शत्रु है। 2वाँ पद कन्या नवांश में पड़ता है, जो इसे अर्थ (संसाधन और उपलब्धि) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके प्रथम भाव में है। यह आपके पंचम भाव (संतान और बुद्धि) और अष्टम भाव (रूपांतरण और विरासत) का स्वामी है और इन विषयों को प्रथम भाव में ले आता है।

गुरु की दृष्टि आपके पंचम भाव, सप्तम भाव और नवम भाव पर है, जो वहाँ संरक्षण, वृद्धि और अच्छा परामर्श लाती है। इसकी दृष्टि मंगल, शुक्र और राहु पर पड़ती है। इस पर राहु की दृष्टि है (राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

वक्री गुरु विरासत में मिले विश्वासों पर प्रश्न करता है और निजी दर्शन बनाता है। गुरु वृद्ध अवस्था में है: इसके फल विवेकपूर्ण पर धीमे और शांत होते हैं। बल: षड्बल में 7 में से 1वाँ स्थान (6.90 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 11.3/20, और अपनी राशि में 4 अष्टकवर्ग बिंदु।

गुरु प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) में एक केन्द्र स्थिति है। सिंह में, चन्द्र के नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी (पाद 2) के साथ, सामान्य पाठ यह है कि आपके ज्ञान एक दिखाई देने वाले रूप में आता है।

षड्बल (6.90 रूप) और विंशोपक (11.3) से गुरु इस कुंडली में बेहतर समर्थित ग्रहों में हैं। गुरु की दशा को आपके ज्ञान पर ध्यान देने का व्यावहारिक समय माना जाता है, फिर भी कोई वादा नहीं।

इस गुरु पाठ का व्यावहारिक उपयोग यह है कि गुरु की दशा में (अगली बार लगभग 2026) स्वयं और स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यह ग्रह आपके ज्ञान के कारक हैं और आपके प्रथम भाव में सिंह में हैं। तिथियाँ ध्यान का समय हैं, गारंटीकृत घटना नहीं।

❖ शुक्र: पंचम भाव · धनु

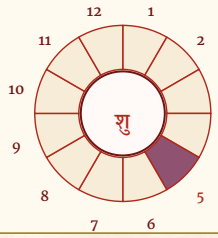

शुक्र: पंचम भाव · धनु

17°44′ · धनु

पूर्वाषाढ़ा · 2

सम राशि

शुक्र: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह धनु राशि में 17°44′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी। राशि-स्वामी गुरु, शुक्र के प्रति सम है, इसलिए फल कुंडली के अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं।

इसका नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा है, जिसके देवता आपः (जल देवता) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: लचीलापन; परिष्कृत रुचि।

यह आपके पंचम भाव में है। यह आपके तृतीय भाव (पराक्रम और भाई-बहन) और दशम भाव (करियर और पद) का स्वामी है और इन विषयों को पंचम भाव में ले आता है।

शुक्र की दृष्टि आपके एकादश भाव पर है, जो वहाँ शालीनता, आनंद और सामंजस्य लाती है। इसकी दृष्टि केतु पर पड़ती है।

शुक्र की राहु के साथ युति है (3.5° की दूरी)। शुक्र-राहु युति प्रेम और कला में असामान्य या विदेशी के प्रति आकर्षण और इच्छा को तीव्र करती है। शुक्र की मंगल के साथ युति है (7.4° की दूरी)।

बल: षड्बल में 7 में से 6वाँ स्थान (3.98 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 9.4/20, और अपनी राशि में 5 अष्टकवर्ग बिंदु।

शुक्र पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में एक त्रिकोण स्थिति है। धनु में, पूर्वाषाढ़ा पाद 2 के साथ, परंपरा अक्सर आपके स्नेह को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

षड्बल (3.98 रूप) और विंशोपक (9.4) से शुक्र इस कुंडली में हल्के समर्थित हैं। इनकी दशा में आपके स्नेह के बारे में योजनाएँ सरल रखना, और सबल ग्रहों से सहयोग लेना, सामान्य सलाह है; इसे निश्चित झटका न मानें।

इस कुंडली में शुक्र सामान्यतः आपके स्नेह के कारक हैं, और आपके पंचम भाव में बैठे हैं, इसलिए यह विषय सबसे स्पष्ट संतान और बुद्धि के माध्यम से महसूस होता है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं। जब शुक्र की दशा चले (अगली बार लगभग 2079), तब इस क्षेत्र को ध्यान से देखना और सहायक आदतें चुनना उपयोगी रहता है।

❖ शनि: षष्ठ भाव · मकर

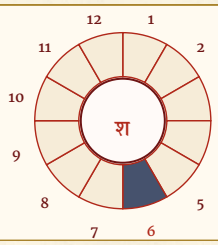

शनि: षष्ठ भाव · मकर

16°03′ · मकर

श्रवण · 2

स्वराशि

शनि: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह मकर राशि में 16°03′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मकर की महत्वाकांक्षा के साथ: अनुशासित, व्यावहारिक, सतर्क और दूरदर्शी। शनि स्वयं इस राशि का स्वामी है।

यह आपके षष्ठ भाव में है। यह आपके षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) और सप्तम भाव (विवाह और साझेदार) का स्वामी है और इन विषयों को षष्ठ भाव में ले आता है।

शनि की दृष्टि आपके तृतीय भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव पर है, जो वहाँ विलंब, गंभीरता और स्थायी ढाँचा लाती है। शनि पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है, इसलिए यह अपनी शर्तों पर कार्य करता है।

शनि की बुध के साथ युति है (2.0° की दूरी)। शनि की चंद्र के साथ युति है (2.8° की दूरी)। शनि की सूर्य के साथ युति है (4.3° की दूरी)।

शनि अस्त है, सूर्य से 4.3° पर। अस्त शनि कर्तव्य और पहचान में खींचतान लाता है; अधिकारियों के प्रति धैर्य सहायक है। बल: षड्बल में 7 में से 3वाँ स्थान (4.66 रूप, सांकेतिक), विंशोपक 14.1/20, और अपनी राशि में 3 अष्टकवर्ग बिंदु।

शनि षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) में एक अधिक माँग वाले भाव में हैं। मकर में, श्रवण पाद 2 के साथ, सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में आपके अनुशासन और सेवा और बाधाएँ पर अतिरिक्त ध्यान दें, निश्चित कष्ट न मानें।

षड्बल (4.66 रूप) और विंशोपक (14.1) से शनि को इस कुंडली में मिश्रित समर्थन है। शनि की दशा में आपके अनुशासन के आसपास प्रयास और धैर्य दोनों की आवश्यकता रहती है।

क्योंकि शनि मकर में हैं और आपके अनुशासन के विषय से जुड़े हैं, उनकी अगली दशा (लगभग 2036) सेवा और बाधाएँ की समीक्षा का स्वाभाविक समय है। यहाँ कोई निश्चित फल नहीं है।

❖ राहु: पंचम भाव · धनु

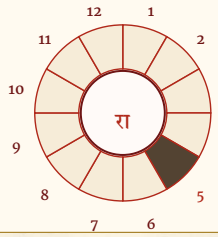

राहु: पंचम भाव · धनु

14°16′ · धनु

पूर्वाषाढ़ा · 1

छाया ग्रह

राहु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह धनु राशि में 14°16′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति धनु के आशावाद के साथ: सिद्धांतवादी, दार्शनिक, खरा और स्वतंत्रता-प्रेमी। छाया ग्रह होने से राहु अपने राशि-स्वामी गुरु के फल देता है, जो आपके प्रथम भाव (मित्र राशि) में है।

इसका नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा है, जिसके देवता आप: (जल देवता) और स्वामी शुक्र हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: प्रभावशाली वाणी; लचीलापन। 1वाँ पद सिंह नवांश में पड़ता है, जो इसे धर्म (उद्देश्य और सिद्धांत) की ओर उन्मुख करता है।

यह आपके पंचम भाव में है।

राहु की दृष्टि आपके प्रथम भाव, नवम भाव और एकादश भाव पर है, जो वहाँ जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता लाती है। इसकी दृष्टि गुरु और केतु पर पड़ती है।

राहु की शुक्र के साथ युति है (3.5° की दूरी)। राहु की मंगल के साथ युति है (10.9° की दूरी)।

राहु पंचम भाव (संतान और बुद्धि) में एक त्रिकोण स्थिति है। धनु में, पूर्वाषाढ़ा पाद 1 के साथ, परंपरा अक्सर आपकी सांसारिक भूख को शोरभरी घटना से अधिक शांत सहयोग की तरह पढ़ती है। इसे प्रवृत्ति मानें, वादा नहीं।

इस राहु स्थिति को आपकी सांसारिक भूख का संतान और बुद्धि के माध्यम से स्थायी मानचित्र मानें, पंचम भाव में धनु से। बाद की राहु दशाएँ वही मानचित्र फिर दिखाती हैं; वे यह नहीं तय करतीं कि क्या होना ही है।

❖ केतु: एकादश भाव · मिथुन

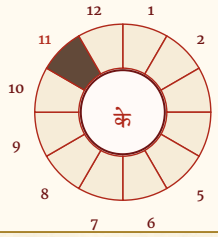

केतु: एकादश भाव · मिथुन
14°16′ · मिथुन
आर्द्रा · 3
छाया ग्रह

केतु: राशि, भाव और नक्षत्र एक दृष्टि में

यह मिथुन राशि में 14°16′ पर है; इसकी अभिव्यक्ति मिथुन की जिज्ञासा के साथ: बातूनी, लचीला, चंचल और बहुमुखी। छाया ग्रह होने से केतु अपने राशि-स्वामी बुध के फल देता है, जो आपके षष्ठ भाव (सम राशि) में है।

इसका नक्षत्र आर्द्रा है, जिसके देवता रुद्र (शिव का प्रचंड रूप) और स्वामी राहु हैं; यहाँ इस नक्षत्र के ये गुण दिखते हैं: तकनीकी और शोध-कौशल; बौद्धिक तीव्रता।

यह आपके एकादश भाव में है।

केतु की दृष्टि आपके तृतीय भाव, पंचम भाव और सप्तम भाव पर है, जो वहाँ विरक्ति, अंतर्दृष्टि और अचानक मोड़ लाती है। इस पर मंगल, शुक्र और राहु की दृष्टि है (मंगल: ऊर्जा, तत्परता और कभी-कभी टकराव; शुक्र: शालीनता, आनंद और सामंजस्य; राहु: जुनून, महत्वाकांक्षा और अपरंपरागतता)।

केतु एकादश भाव (लाभ और नेटवर्क) में उपचय स्थिति है। मिथुन में, आर्द्रा पाद 3 के साथ, शास्त्र अक्सर कहते हैं कि आपकी विरक्ति समय और स्थिर प्रयास से बढ़ सकता है, विशेषकर बाद की दशाओं में।

इस केतु पाठ का व्यावहारिक उपयोग यह है कि केतु की दशा में (अगली बार लगभग 2072) लाभ और नेटवर्क पर ध्यान दें। यह ग्रह आपकी विरक्ति के कारक हैं और आपके एकादश भाव में मिथुन में हैं।

Rohan: भाव-दर-भाव विश्लेषण

Rohan: भाव-दर-भाव विश्लेषण

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: “Rohan: भाव-दर-भाव विश्लेषण” आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

भाव	क्षेत्र	राशि	स्वामी	स्वामी स्थित	ग्रह	सर्वा.
1	स्वयं और स्वास्थ्य	सिंह	सूर्य	षष्ठ	गुरु	28
2	धन और परिवार	कन्या	बुध	षष्ठ	-	27
3	पराक्रम और भाई-बहन	तुला	शुक्र	पंचम	-	36
4	घर और माता	वृश्चिक	मंगल	पंचम	-	39
5	संतान और बुद्धि	धनु	गुरु	प्रथम	मंगल, शुक्र, राहु	18
6	सेवा और बाधाएँ	मकर	शनि	षष्ठ	सूर्य, चंद्र, बुध, शनि	29
7	विवाह और साझेदार	कुंभ	शनि	षष्ठ	-	18
8	रूपांतरण और विरासत	मीन	गुरु	प्रथम	-	30
9	भाग्य और गुरु	मेष	मंगल	पंचम	-	22

भाव	क्षेत्र	राशि	स्वामी	स्वामी स्थित	ग्रह	सर्वा.
10	करियर और पद	वृषभ	शुक्र	पंचम	–	31
11	लाभ और नेटवर्क	मिथुन	बुध	षष्ठ	केतु	37
12	व्यय और मोक्ष	कर्क	चंद्र	षष्ठ	–	22

❖ प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

1

प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

सिंह

गुरु

स्वामी: सूर्य

षष्ठ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 28

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य · सिंह

इसका स्वामी सूर्य षष्ठ भाव में है, दु:स्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मकर राशि (शत्रु राशि) में, जो स्वयं और स्वास्थ्य को सेवा और बाधाएँ से जोड़ता है। दु:स्थान में स्थित भावेश इन विषयों को बाधाओं, सेवा या रूपांतरण से होकर ले जाता है; फल अर्जित होते हैं, सहज नहीं मिलते।

प्रथम भाव में ग्रह: गुरु। गुरु (मित्र राशि) स्वयं और स्वास्थ्य में आपके ज्ञान का प्रभाव लाता है।

प्रथम भाव पर राहु (पंचम भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक सूर्य आपके षष्ठ भाव (शत्रु राशि) में है।

स्वामी सूर्य (शत्रु राशि) षष्ठ भाव में हैं और अष्टकवर्ग 28 है। स्थित ग्रह: गुरु।

प्रथम भाव (स्वयं और स्वास्थ्य) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो षष्ठ भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। सिंह पर 28 बिंदु हैं।

❖ द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

2

द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

कन्या

–

स्वामी: बुध

षष्ठ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 27

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

द्वितीय भाव: धन और परिवार · कन्या

इसका स्वामी बुध षष्ठ भाव में है, दु:स्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मकर राशि (सम राशि) में, जो धन और परिवार को सेवा और बाधाएँ से जोड़ता है।

द्वितीय भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यत: भावेश बुध से आते हैं।

इसका नैसर्गिक कारक गुरु आपके प्रथम भाव (मित्र राशि) में है। 27 बिंदुओं के साथ (लगभग औसत 28) यह भाव सामान्य, संतुलित फल देता है।

स्वामी बुध (सम राशि) षष्ठ भाव में हैं, राशि पर 27 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं।

द्वितीय भाव कन्या में, स्वामी बुध षष्ठ भाव में, धन और परिवार का कार्य-चित्र हैं।

❖ तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला

3

तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला
तुला
–

स्वामी: शुक्र
पंचम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 36

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

तृतीय भाव: पराक्रम और भाई-बहन · तुला

इसका स्वामी शुक्र पंचम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, धनु राशि (सम राशि) में, जो पराक्रम और भाई-बहन को संतान और बुद्धि से जोड़ता है।

तृतीय भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश शुक्र से आते हैं।

तृतीय भाव पर शनि (षष्ठ भाव से) और केतु (एकादश भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा शनि और केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक मंगल आपके पंचम भाव (मित्र राशि) में है।

स्वामी शुक्र (सम राशि) पंचम भाव में, 36 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। परंपरा यहाँ साहस और दैनिक पहल देखती है।

तृतीय भाव को पराक्रम और भाई-बहन के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि तुला, स्वामी शुक्र पंचम भाव में, 36 बिंदु।

❖ चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक

4

चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक
वृश्चिक
–

स्वामी: मंगल
पंचम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 39

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

चतुर्थ भाव: घर और माता · वृश्चिक

इसका स्वामी मंगल पंचम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, धनु राशि (मित्र राशि) में, जो घर और माता को संतान और बुद्धि से जोड़ता है।

इसका नैसर्गिक कारक चंद्र आपके षष्ठ भाव (सम राशि) में है। 39 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं।

स्वामी मंगल (मित्र राशि) पंचम भाव में हैं, राशि पर 39 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं।

चतुर्थ भाव (घर और माता) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो पंचम भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। वृश्चिक पर 39 बिंदु हैं।

❖ पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

5

पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु
धनु
मंगल, शुक्र, राहु

स्वामी: गुरु
प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 18

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

पंचम भाव: संतान और बुद्धि · धनु

इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो संतान और बुद्धि को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है।

पंचम भाव में ग्रह: मंगल, शुक्र और राहु। मंगल (मित्र राशि) संतान और बुद्धि में आपकी प्रेरणा का प्रभाव लाता है। शुक्र (सम राशि) संतान और बुद्धि में आपके स्नेह का प्रभाव लाता है। राहु (छाया ग्रह) संतान और बुद्धि में आपकी सांसारिक भूख का प्रभाव लाता है।

पंचम भाव पर गुरु (प्रथम भाव से) और केतु (एकादश भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा केतु से आती है।

18 बिंदुओं के साथ (औसत से कम) यह भाव अधिक सचेत प्रयास चाहता है; इससे होकर महत्वपूर्ण गोचरों में धैर्य रखें।

स्वामी गुरु (मित्र राशि) प्रथम भाव में हैं, 18 बिंदु और स्थित ग्रह मंगल, शुक्र और राहु।

पंचम भाव को संतान और बुद्धि के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि धनु, स्वामी गुरु प्रथम भाव में, 18 बिंदु।

❖ षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

6

षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

मकर

सूर्य, चंद्र, बुध, शनि

स्वामी: शनि

षष्ठ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 29

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ · मकर

इसका स्वामी शनि इसी भाव में है, दु:स्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मकर राशि (स्वराशि) में।

षष्ठ भाव में ग्रह: सूर्य, चंद्र, बुध और शनि। सूर्य (शत्रु राशि) सेवा और बाधाएँ में आपकी मूल पहचान का प्रभाव लाता है। चंद्र (सम राशि) सेवा और बाधाएँ में आपके मन का प्रभाव लाता है। बुध (सम राशि) सेवा और बाधाएँ में आपकी सोच का प्रभाव लाता है। शनि (स्वराशि) सेवा और बाधाएँ में आपके अनुशासन का प्रभाव लाता है।

स्वामी शनि (स्वराशि) षष्ठ भाव में, 29 बिंदु, स्थित ग्रह सूर्य, चंद्र, बुध और शनि।

षष्ठ भाव (सेवा और बाधाएँ) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो षष्ठ भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। मकर पर 29 बिंदु हैं।

❖ सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

7

सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

कुंभ

–

स्वामी: शनि

षष्ठ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 18

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

सप्तम भाव: विवाह और साझेदार · कुंभ

इसका स्वामी शनि षष्ठ भाव में है, दु:स्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मकर राशि (स्वराशि) में, जो विवाह और साझेदार को सेवा और बाधाएँ से जोड़ता है।

सप्तम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यत: भावेश शनि से आते हैं।

सप्तम भाव पर गुरु (प्रथम भाव से) और केतु (एकादश भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा केतु से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक शुक्र आपके पंचम भाव (सम राशि) में है।

स्वामी शनि (स्वराशि) षष्ठ भाव में हैं, राशि पर 18 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं।

सप्तम भाव कुंभ में, स्वामी शनि षष्ठ भाव में, विवाह और साझेदार का कार्य-चित्र हैं।

❖ अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन

8

अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन
मीन
–

स्वामी: गुरु
प्रथम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 30

1	2	3	4	5	6	7	**8**	9	10	11	12

अष्टम भाव: रूपांतरण और विरासत · मीन

इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में है, केंद्र, कुंडली का स्तंभ जहाँ ग्रह स्पष्ट रूप से कार्य करते हैं, सिंह राशि (मित्र राशि) में, जो रूपांतरण और विरासत को स्वयं और स्वास्थ्य से जोड़ता है।

अष्टम भाव पर मंगल (पंचम भाव से) और शनि (षष्ठ भाव से) की दृष्टि है। दबाव या प्रेरणा मंगल और शनि से आती है।

इसका नैसर्गिक कारक शनि आपके षष्ठ भाव (स्वराशि) में है। 30 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं।

स्वामी गुरु (मित्र राशि) प्रथम भाव में हैं, 30 बिंदु और स्थित ग्रह कोई नहीं।

अष्टम भाव पारंपरिक रूप से रूपांतरण और विरासत के बारे में है। स्वामी प्रथम भाव में हैं और राशि पर अष्टकवर्ग 30 है।

❖ नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष

9

नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष
मेष
–

स्वामी: मंगल
पंचम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 22

1	2	3	4	5	6	7	8	**9**	10	11	12

नवम भाव: भाग्य और गुरु · मेष

इसका स्वामी मंगल पंचम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, धनु राशि (मित्र राशि) में, जो भाग्य और गुरु को संतान और बुद्धि से जोड़ता है।

नवम भाव रिक्त है, जो सामान्य बात है; इसके फल मुख्यतः भावेश मंगल से आते हैं।

नवम भाव पर गुरु (प्रथम भाव से) और राहु (पंचम भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग गुरु से मिलता है। दबाव या प्रेरणा राहु से आती है।

स्वामी मंगल (मित्र राशि) पंचम भाव में, 22 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं। परंपरा यहाँ दिशा का बोध देखती है।

नवम भाव को भाग्य और गुरु के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि मेष, स्वामी मंगल पंचम भाव में, 22 बिंदु।

❖ दशम भाव: करियर और पद · वृषभ

10

दशम भाव: करियर और पद · वृषभ
वृषभ
–

स्वामी: शुक्र
पंचम भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 31

1	2	3	4	5	6	7	8	9	**10**	11	12

दशम भाव: करियर और पद · वृषभ

इसका स्वामी शुक्र पंचम भाव में है, त्रिकोण, कृपा और पुण्य का भाव, धनु राशि (सम राशि) में, जो करियर और पद को संतान और बुद्धि से जोड़ता है।

इसका नैसर्गिक कारक बुध आपके षष्ठ भाव (सम राशि) में है। 31 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं।

स्वामी शुक्र (सम राशि) पंचम भाव में हैं, राशि पर 31 बिंदु हैं, स्थित ग्रह कोई नहीं।

दशम भाव (करियर और पद) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो पंचम भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। वृषभ पर 31 बिंदु हैं।

❖ एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन

11

एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन
मिथुन
केतु

स्वामी: बुध
षष्ठ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 37

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क · मिथुन

इसका स्वामी बुध षष्ठ भाव में है, दुःस्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मकर राशि (सम राशि) में, जो लाभ और नेटवर्क को सेवा और बाधाएँ से जोड़ता है।

एकादश भाव में ग्रह: केतु। केतु (छाया ग्रह) लाभ और नेटवर्क में आपकी विरक्ति का प्रभाव लाता है।

एकादश भाव पर मंगल (पंचम भाव से), शुक्र (पंचम भाव से) और राहु (पंचम भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग शुक्र से मिलता है। दबाव या प्रेरणा मंगल और राहु से आती है।

37 बिंदुओं के साथ (औसत 28 से अधिक) यह भाव अच्छी तरह समर्थित है; इससे होकर गोचर प्रायः अच्छे फल देते हैं।

स्वामी बुध (सम राशि) षष्ठ भाव में हैं, 37 बिंदु और स्थित ग्रह केतु।

एकादश भाव को लाभ और नेटवर्क के मानचित्र की तरह पढ़ें: राशि मिथुन, स्वामी बुध षष्ठ भाव में, 37 बिंदु।

❖ द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

12

द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क
कर्क
–

स्वामी: चंद्र
षष्ठ भाव में स्थित

सर्वाष्टकवर्ग 22

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

द्वादश भाव: व्यय और मोक्ष · कर्क

इसका स्वामी चंद्र षष्ठ भाव में है, दुःस्थान (6, 8 या 12), जहाँ फल प्रयास, परिवर्तन या त्याग से आते हैं, मकर राशि (सम राशि) में, जो व्यय और मोक्ष को सेवा और बाधाएँ से जोड़ता है। यह दुःस्थान का स्वामी दुःस्थान में है, शास्त्रीय विपरीत स्थिति जिसमें कठिनाइयाँ एक-दूसरे को काटती हैं।

द्वादश भाव पर सूर्य (षष्ठ भाव से), चंद्र (षष्ठ भाव से), मंगल (पंचम भाव से), बुध (षष्ठ भाव से) और शनि (षष्ठ भाव से) की दृष्टि है। शुभ सहयोग चंद्र और बुध से मिलता है। दबाव या प्रेरणा सूर्य, मंगल और शनि से आती है।

स्वामी चंद्र (सम राशि) षष्ठ भाव में, 22 बिंदु, स्थित ग्रह कोई नहीं।

द्वादश भाव (व्यय और मोक्ष) का व्यावहारिक पाठ यह है कि जब इसका स्वामी, जो षष्ठ भाव में है, दशा चलाए, तब इस भाव को देखें। कर्क पर 22 बिंदु हैं।

Rohan: ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: ग्रह-बल: षड्बल और अष्टकवर्ग" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

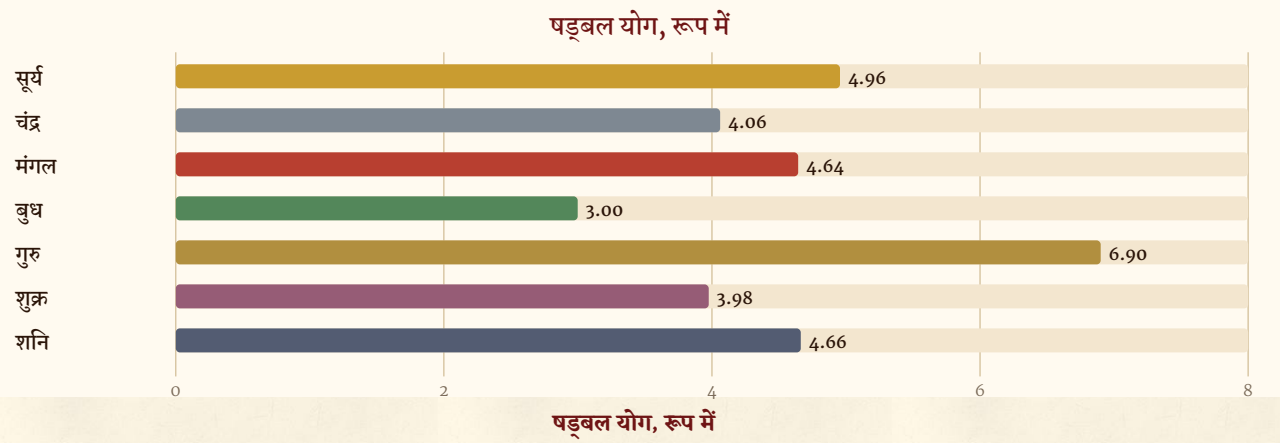

षड्बल योग रूप में दिखाए गए हैं।

ग्रह	उच्च	सप्तवर्गज	ओज	केंद्र	दिक्	पक्ष	चेष्टा	नैसर्गिक	योग	रूप
सूर्य	33	82	0	15	17	60	30	60	297	4.96
चंद्र	25	92	15	15	44	1	0	51	244	4.06
मंगल	49	84	15	30	8	60	15	17	279	4.64
बुध	20	88	0	15	15	0	15	26	180	3.00
गुरु	45	142	15	60	56	0	60	34	414	6.90
शुक्र	27	39	15	30	54	0	30	43	239	3.98
शनि	31	105	0	15	45	60	15	9	280	4.66

इन मापों से आपके सबसे बलवान ग्रह गुरु और सूर्य हैं, इसलिए आपके ज्ञान एक भरोसेमंद संसाधन है। सबसे कम सहयोग शुक्र और बुध को है, इसलिए आपकी सोच से जुड़े विषयों में अतिरिक्त ध्यान और धैर्य फल देता है।

दिग्बल गुरु का सबसे अधिक और मंगल का सबसे कम है।

❖ अष्टकवर्ग

ग्रह	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	3	3	6	4	3	4	6	6	3	5	2	3	48
चंद्र	3	5	6	4	5	2	6	5	0	4	3	6	49
मंगल	1	5	6	4	2	2	5	5	1	4	0	4	39
बुध	3	3	6	4	5	5	5	5	4	6	3	5	54
गुरु	4	6	5	3	4	7	5	5	3	5	5	4	56

ग्रह	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
शुक्र	6	5	3	1	6	5	4	6	5	2	3	6	52
शनि	2	4	5	2	3	2	5	7	2	3	2	2	39
सर्वाष्टकवर्ग	22	31	37	22	28	27	36	39	18	29	18	30	337

अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	tot
सूर्य	3	3	6	4	3	4	6	6	3	5	2	3	48
चंद्र	3	5	6	4	5	2	6	5	0	4	3	6	49
मंगल	1	5	6	4	2	2	5	5	1	4	0	4	39
बुध	3	3	6	4	5	5	5	5	4	6	3	5	54
गुरु	4	6	5	3	4	7	5	5	3	5	5	4	56
शुक्र	6	5	3	1	6	5	4	6	5	2	3	6	52
शनि	2	4	5	2	3	2	5	7	2	3	2	2	39
सर्वाष्टकवर्ग	22	31	37	22	28	27	36	39	18	29	18	30	337

अष्टकवर्ग बिंदु मानचित्र

अंतिम स्तंभ पंक्ति का योग है।

आपकी सबसे समर्थित राशियाँ वृश्चिक (चतुर्थ भाव, 39 बिंदु) और मिथुन (एकादश भाव, 37) हैं, इसलिए घर और माता को स्थिर सहयोग मिलता है। कुंभ (सप्तम भाव, 18) सबसे कम समर्थित है, इसलिए विवाह और साझेदार में धैर्य चाहिए, विशेषकर जब धीमे ग्रह वहाँ से गोचर करें।

पुरुषार्थ के अनुसार: धर्म भाव (1, 5, 9) का योग 68, अर्थ भाव (2, 6, 10) 87, काम भाव (3, 7, 11) 91 और मोक्ष भाव (4, 8, 12) 91। ज़ोर काम: संबंध, इच्छा और उद्यम पर है।

आपके लाभ भाव (एकादश) में 37 बिंदु और व्यय भाव (द्वादश) में 22 बिंदु हैं।

सूर्य: अपनी जन्म-राशि मकर में 5 बिंदु (प्रबल); कुल 48, सबसे अच्छी राशि मिथुन।

चंद्र: अपनी जन्म-राशि मकर में 4 बिंदु (औसत); कुल 49, सबसे अच्छी राशि मिथुन।

मंगल: अपनी जन्म-राशि धनु में 1 बिंदु (औसत से कम); कुल 39, सबसे अच्छी राशि मिथुन।

बुध: अपनी जन्म-राशि मकर में 6 बिंदु (प्रबल); कुल 54, सबसे अच्छी राशि मिथुन।

गुरु: अपनी जन्म-राशि सिंह में 4 बिंदु (औसत); कुल 56, सबसे अच्छी राशि कन्या।

शुक्र: अपनी जन्म-राशि धनु में 5 बिंदु (प्रबल); कुल 52, सबसे अच्छी राशि मेष।

शनि: अपनी जन्म-राशि मकर में 3 बिंदु (औसत से कम); कुल 39, सबसे अच्छी राशि वृश्चिक।

Rohan: आपकी कुंडली के योग और दोष

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: आपकी कुंडली के योग और दोष" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; वे हिस्से रखें जो आपके अपने बारे में पहले से जाने हुए से मेल खाते हैं।

संयोजन	प्रकार
बुधादित्य योग	योग
अनफा योग	योग
वाशि योग	योग
शकट योग	दोष / टिप्पणी
राजयोग	योग
राजयोग	योग
योगकारक	योग
धन योग	योग
धन योग	योग
हर्ष योग (विपरीत राजयोग)	योग
विमल योग (विपरीत राजयोग)	योग
अंगारक योग (पारंपरिक)	दोष / टिप्पणी
मांगलिक (कुज) स्थिति	दोष / टिप्पणी

इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

- बुधादित्य योग — योग
- अनफा योग — योग
- वाशि योग — योग
- शकट योग — दोष / टिप्पणी
- राजयोग — योग
- राजयोग — योग
- योगकारक — योग
- धन योग — योग
- धन योग — योग
- हर्ष योग (विपरीत राजयोग) — योग
- विमल योग (विपरीत राजयोग) — योग
- अंगारक योग (पारंपरिक) — दोष / टिप्पणी
- मांगलिक (कुज) स्थिति — दोष / टिप्पणी

इस कुंडली में पाए गए योग और दोष

❖ उपस्थित योग

❖ बुधादित्य योग

सूर्य और बुध एक ही राशि में हैं।

बुद्धि, स्पष्ट वाणी और प्रशासनिक क्षमता।

❖ अनफा योग

चंद्र से बारहवें भाव में मंगल और शुक्र।

अच्छा स्वास्थ्य, मधुर व्यवहार और सरल सुखों में संतोष।

❖ वाशि योग

सूर्य से बारहवें भाव में मंगल और शुक्र।

उदारता, कौशल और अधिकारियों से मान्यता।

❖ राजयोग

शनि (सप्तम भाव का स्वामी) और सूर्य (प्रथम भाव का स्वामी) युति से जुड़े हैं।

यह शनि और सूर्य की दशाओं में सबसे सक्रिय होता है: शनि (2036–2055)।

❖ राजयोग

शुक्र (दशम भाव का स्वामी) और मंगल (नवम भाव का स्वामी) युति से जुड़े हैं।

❖ धन योग

इन भावों के विषयों से धन-संचय की क्षमता।

धन के विषय बुध और सूर्य की दशाओं में उभरते हैं: बुध (2055–2072)।

❖ धन योग

इन भावों के विषयों से धन-संचय की क्षमता।

❖ हर्ष योग (विपरीत राजयोग)

षष्ठेश शनि षष्ठ भाव में है।

प्रतिद्वंद्वियों पर विजय, अच्छा स्वास्थ्य और कठिनाई से उभरती सफलता।

❖ विमल योग (विपरीत राजयोग)

द्वादशेश चंद्र षष्ठ भाव में है।

मितव्ययिता, स्वतंत्रता और सदाचार; व्यय अच्छे कामों में लगता है।

❖ दोष और पारंपरिक टिप्पणियाँ

❖ शकट योग

चंद्र गुरु से छठे, आठवें या बारहवें भाव में है।

भाग्य जो पहिये की तरह ऊपर-नीचे होता है; योजना से स्थिरता आती है। चंद्र के केंद्र में होने पर यह निर्बल होता है।

❖ अंगारक योग (पारंपरिक)

मंगल राहु के साथ एक ही राशि में है।

प्रबल ऊर्जा और आवेग; शारीरिक गतिविधि और धैर्य इसे अच्छी दिशा देते हैं।

❖ मांगलिक (कुज) स्थिति

मंगल चंद्र और शुक्र से मांगलिक भाव में है।

Rohan: D9 · नवांश

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: D9 · नवांश" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी क़रीबी व्यक्ति से बातचीत की शुरुआत बनाएँ।

❖ D9 (नवांश) का फल: विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल

D9 का लग्न धनु है; इसका स्वामी गुरु इस कुंडली के दशम भाव में कन्या राशि (शत्रु राशि) में है। D9 में, जिसे परंपरा विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के लिए पढ़ती है, दसवीं राशि के स्वामी बुध हैं, षष्ठ भाव में वृषभ में (मित्र राशि)। D9 में बलवान (उच्च या स्वराशि): मंगल, जो विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल में सहायक है। D9 में नीच: शुक्र; यहाँ इन विषयों में धैर्य चाहिए। D9 के केंद्रों में स्थित ग्रह इस क्षेत्र में सबसे प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं: चंद्र, गुरु और शुक्र।

ग्रह	राशि	भाव	बल
सूर्य	कर्क	अष्टम भाव	मित्र राशि
चंद्र	मिथुन	सप्तम भाव	मित्र राशि
मंगल	वृश्चिक	द्वादश भाव	स्वराशि
बुध	वृषभ	षष्ठ भाव	मित्र राशि
गुरु	कन्या	दशम भाव	शत्रु राशि
शुक्र	कन्या	दशम भाव	नीच
शनि	वृषभ	षष्ठ भाव	मित्र राशि
राहु	सिंह	नवम भाव	छाया ग्रह
केतु	कुंभ	तृतीय भाव	छाया ग्रह

D9 में चंद्र (आपके मन) मिथुन में सप्तम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा मित्र राशि। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D9 में मंगल (आपकी प्रेरणा) वृश्चिक में द्वादश भाव में हैं, जो इस वर्ग का अधिक माँग वाला भाव है, गरिमा स्वराशि। सामान्य सलाह है कि इस ग्रह की दशा में व्यय और मोक्ष और विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल पर अतिरिक्त ध्यान दें, इसे निश्चित कठिनाई न मानें।

D9 में शुक्र (आपके स्नेह) कन्या में दशम भाव में हैं, जो इस वर्ग का केन्द्र है, गरिमा नीच। यहाँ कोणीय स्थिति अक्सर विवाह, धर्म और हर ग्रह का आंतरिक बल के क्षेत्र में करियर और पद को दृश्य बनाती है। यह पारंपरिक पाठ है, वादा नहीं।

D9 में राहु (आपकी सांसारिक भूख) सिंह में नवम भाव में हैं, जो इस वर्ग का त्रिकोण है, गरिमा छाया ग्रह।

इसे दशा और गोचर अध्यायों के साथ पढ़ें।

Rohan: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: विंशोत्तरी दशा: अवधियाँ और फल" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसमें सुझाया एक व्यावहारिक क़दम चुनें और इसी महीने आज़माएँ।

आपका विंशोत्तरी क्रम चंद्र से आरंभ होता है, जो आपके जन्म-नक्षत्र श्रवण का स्वामी है; जन्म के समय उस दशा के 3.4 वर्ष शेष थे। वर्तमान अवधि को रेखांकित किया गया है।

विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

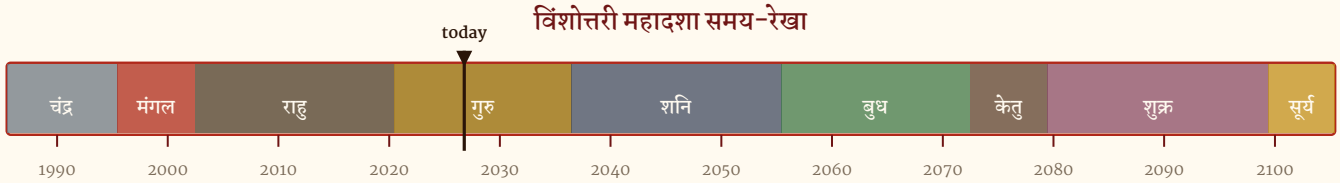

विंशोत्तरी महादशा समय-रेखा

प्रत्येक खंड जन्म से एक महादशा है। चिह्न आज की तिथि है।

महादशा	से	तक	वर्ष	स्वामी स्थित
चंद्र	15 जून 1985	15 जून 1995	10.0	षष्ठ भाव
मंगल	15 जून 1995	15 जून 2002	7.0	पंचम भाव
राहु	15 जून 2002	14 जून 2020	18.0	पंचम भाव
गुरु	**14 जून 2020**	**14 जून 2036**	**16.0**	**प्रथम भाव**
शनि	14 जून 2036	15 जून 2055	19.0	षष्ठ भाव
बुध	15 जून 2055	14 जून 2072	17.0	षष्ठ भाव
केतु	14 जून 2072	14 जून 2079	7.0	एकादश भाव
शुक्र	14 जून 2079	14 जून 2099	20.0	पंचम भाव

वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा



वर्तमान महादशा: अंतर्दशा समय-रेखा

❖ गुरु महादशा · 2020–2036

2020 से 2036 तक गुरु महादशा आपके ज्ञान, आस्था, गुरुजनों, संतान, धन और जीवन के अर्थ को अग्रभूमि में लाती है।

गुरु आपके प्रथम भाव में सिंह राशि में है और मित्र राशि में है, इसलिए स्वयं और स्वास्थ्य पर ज़ोर रहता है।

षड्बल में गुरु का 7 में से 1वाँ स्थान है और इसकी राशि में 4 बिंदु हैं।

❖ शनि महादशा · 2036–2055

2036 से 2055 तक शनि महादशा आपके अनुशासन, सहनशक्ति, कर्म-निष्ठा, भय और दीर्घकालिक कर्म को अग्रभूमि में लाती है।

शनि आपके षष्ठ भाव में मकर राशि में है और स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है, इसलिए सेवा और बाधाएँ पर ज़ोर रहता है।

षष्ठ भाव और सप्तम भाव का स्वामी होने से यह सेवा और बाधाएँ; विवाह और साझेदार को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में शनि का 7 में से 3वाँ स्थान है और इसकी राशि में 3 बिंदु हैं।

शनि से जुड़े योग: राजयोग और हर्ष योग (विपरीत राजयोग); परंपरा के अनुसार ये इसी अवधि में फलते हैं।

❖ बुध महादशा · 2055–2072

2055 से 2072 तक बुध महादशा आपकी सोच, वाणी, सीखने की शैली, व्यापार और हास्य-बोध को अग्रभूमि में लाती है।

बुध आपके षष्ठ भाव में मकर राशि में है और सम राशि में है, इसलिए सेवा और बाधाएँ पर ज़ोर रहता है।

द्वितीय भाव और एकादश भाव का स्वामी होने से यह धन और परिवार; लाभ और नेटवर्क को भी सक्रिय करता है।

षड्बल में बुध का 7 में से 7वाँ स्थान है और इसकी राशि में 6 बिंदु हैं।

बुध से जुड़े योग: धन योग; परंपरा के अनुसार ये इसी अवधि में फलते हैं।

❖ केतु महादशा · 2072–2079

2072 से 2079 तक केतु महादशा आपकी विरक्ति, पूर्व-कौशल, अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक खोज को अग्रभूमि में लाती है।

केतु आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में है और छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी बुध के माध्यम से कार्य करता है, इसलिए लाभ और नेटवर्क पर ज़ोर रहता है।

❖ अगले 20 वर्षों की अंतर्दशाएँ, एक-एक कर

अवधि	से	तक
गुरु / बुध	**13 फ़रवरी 2025**	**21 मई 2027**
गुरु / केतु	21 मई 2027	26 अप्रैल 2028
गुरु / शुक्र	26 अप्रैल 2028	26 दिसंबर 2030
गुरु / सूर्य	26 दिसंबर 2030	14 अक्टूबर 2031
गुरु / चंद्र	14 अक्टूबर 2031	12 फ़रवरी 2033
गुरु / मंगल	12 फ़रवरी 2033	19 जनवरी 2034
गुरु / राहु	19 जनवरी 2034	14 जून 2036
शनि / शनि	14 जून 2036	18 जून 2039
शनि / बुध	18 जून 2039	25 फ़रवरी 2042
शनि / केतु	25 फ़रवरी 2042	6 अप्रैल 2043
शनि / शुक्र	6 अप्रैल 2043	5 जून 2046
शनि / सूर्य	5 जून 2046	18 मई 2047

❖ गुरु / बुध · फ़रवरी 2025 – मई 2027

गुरु और बुध नैसर्गिक शत्रु हैं, इसलिए दोनों ग्रहों के विषयों में कुछ खिंचाव की अपेक्षा रखें। बुध और गुरु एक-दूसरे से छठे/आठवें हैं, परंपरा में चुनौतीपूर्ण कोण जो सावधानी का फल देता है। बुध आपके षष्ठ भाव में है, इसलिए सेवा और बाधाएँ आगे आते हैं; यह सम राशि में है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके षष्ठ भाव में (मिश्रित) और शनि तृतीय भाव में (सहायक) गोचर करता है। बुध श्रवण में, पाद 2, षष्ठ भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः सेवा और बाधाएँ के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ गुरु / केतु · मई 2027 – अप्रैल 2028

गुरु और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु, गुरु से 11 राशि दूर है। केतु आपके एकादश भाव में है, इसलिए लाभ और नेटवर्क आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी बुध के माध्यम से कार्य करता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके अष्टम भाव में (मिश्रित) और शनि तृतीय भाव में (सहायक) गोचर करता है। केतु आर्द्रा में, पाद 3, एकादश भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः लाभ और नेटवर्क के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ गुरु / शुक्र · अप्रैल 2028 – दिसंबर 2030

गुरु और शुक्र नैसर्गिक शत्रु हैं, इसलिए दोनों ग्रहों के विषयों में कुछ खिंचाव की अपेक्षा रखें। शुक्र, गुरु से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। शुक्र आपके पंचम भाव में है, इसलिए संतान और बुद्धि आगे आते हैं; यह सम राशि में है। शुक्र पूर्वाषाढ़ा में, पाद 2, पंचम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः संतान और बुद्धि के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ गुरु / सूर्य · दिसंबर 2030 – अक्टूबर 2031

गुरु और सूर्य नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। सूर्य और गुरु एक-दूसरे से छठे/आठवें हैं, परंपरा में चुनौतीपूर्ण कोण जो सावधानी का फल देता है। सूर्य आपके षष्ठ भाव में है, इसलिए सेवा और बाधाएँ आगे आते हैं; यह शत्रु राशि में है, इसलिए इसके फलों के लिए अधिक प्रयास चाहिए। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वादश भाव में (मिश्रित) और शनि पंचम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। सूर्य श्रवण में, पाद 4, षष्ठ भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः सेवा और बाधाएँ के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ गुरु / चंद्र · अक्टूबर 2031 – फ़रवरी 2033

गुरु और चंद्र नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। चंद्र और गुरु एक-दूसरे से छठे/आठवें हैं, परंपरा में चुनौतीपूर्ण कोण जो सावधानी का फल देता है। चंद्र आपके षष्ठ भाव में है, इसलिए सेवा और बाधाएँ आगे आते हैं; यह सम राशि में है। चंद्र व्यय और मोक्ष का भी स्वामी है। चंद्र श्रवण में, पाद 3, षष्ठ भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः सेवा और बाधाएँ के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ गुरु / मंगल · फ़रवरी 2033 – जनवरी 2034

गुरु और मंगल नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। मंगल, गुरु से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। मंगल आपके पंचम भाव में है, इसलिए संतान और बुद्धि आगे आते हैं; यह मित्र राशि में है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके द्वितीय भाव में (सहायक) और शनि षष्ठ भाव में (सहायक) गोचर करता है। मंगल पूर्वाषाढ़ा में, पाद 4, पंचम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः संतान और बुद्धि के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ गुरु / राहु · जनवरी 2034 – जून 2036

गुरु और राहु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर राहु की स्थिति से तय होता है। राहु, गुरु से त्रिकोण में है, एक सौहार्दपूर्ण संबंध। राहु आपके पंचम भाव में है, इसलिए संतान और बुद्धि आगे आते हैं; यह छाया ग्रह है जो अपने राशि-स्वामी गुरु के माध्यम से कार्य करता है। राहु पूर्वाषाढ़ा में, पाद 1, पंचम भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः संतान और बुद्धि के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ शनि / शनि · जून 2036 – जून 2039

यह महादशा की पहली अंतर्दशा है, जब शनि के विषय अपने शुद्धतम रूप में आते हैं। शनि आपके षष्ठ भाव में है, इसलिए सेवा और बाधाएँ आगे आते हैं; यह स्वराशि में है, इसलिए यह आत्मविश्वास से फल देता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके सप्तम भाव में (सहायक) और शनि अष्टम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है। शनि श्रवण में, पाद 2, षष्ठ भाव में हैं, इसलिए इस अंतर्दशा को सामान्यतः सेवा और बाधाएँ के माध्यम से पढ़ा जाता है।

❖ शनि / बुध · जून 2039 – फ़रवरी 2042

शनि और बुध नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। बुध और शनि एक ही राशि में हैं। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके नवम भाव में (सहायक) और शनि नवम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ शनि / केतु · फ़रवरी 2042 – अप्रैल 2043

शनि और केतु एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए अंतर्दशा का स्वर केतु की स्थिति से तय होता है। केतु और शनि एक-दूसरे से छठे/आठवें हैं, परंपरा में चुनौतीपूर्ण कोण जो सावधानी का फल देता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके एकादश भाव में (सहायक) और शनि दशम भाव में (परिश्रम-साध्य) गोचर करता है।

❖ शनि / शुक्र · अप्रैल 2043 – जून 2046

शनि और शुक्र नैसर्गिक मित्र हैं, इसलिए यह अंतर्दशा प्रायः सहज चलती है। शुक्र और शनि एक-दूसरे से दूसरे/बारहवें हैं, जो लाभ और व्यय को जोड़ता है। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके प्रथम भाव में (मिश्रित) और शनि एकादश भाव में (सहायक) गोचर करता है।

❖ शनि / सूर्य · जून 2046 – मई 2047

शनि और सूर्य नैसर्गिक शत्रु हैं, इसलिए दोनों ग्रहों के विषयों में कुछ खिंचाव की अपेक्षा रखें। सूर्य और शनि एक ही राशि में हैं। अवधि के मध्य में गुरु चंद्र से आपके तृतीय भाव में (मिश्रित) और शनि एकादश भाव में (सहायक) गोचर करता है।

❖ गुरु / बुध के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

प्रत्यंतर	से	तक	केंद्र-विषय
बुध	13 फ़रवरी 2025	10 जून 2025	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ
केतु	10 जून 2025	28 जुलाई 2025	एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क
शुक्र	28 जुलाई 2025	13 दिसंबर 2025	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
सूर्य	13 दिसंबर 2025	23 जनवरी 2026	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ
चंद्र	23 जनवरी 2026	2 अप्रैल 2026	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ
मंगल	2 अप्रैल 2026	21 मई 2026	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
राहु	21 मई 2026	22 सितंबर 2026	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
गुरु	**22 सितंबर 2026**	**10 जनवरी 2027**	**प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य**
शनि	10 जनवरी 2027	21 मई 2027	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ

❖ गुरु / केतु के भीतर प्रत्यंतर दशाएँ

प्रत्यंतर	से	तक	केंद्र-विषय
केतु	21 मई 2027	10 जून 2027	एकादश भाव: लाभ और नेटवर्क
शुक्र	10 जून 2027	6 अगस्त 2027	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
सूर्य	6 अगस्त 2027	23 अगस्त 2027	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ
चंद्र	23 अगस्त 2027	21 सितंबर 2027	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ

प्रत्यंतर	से	तक	केंद्र-विषय
मंगल	21 सितंबर 2027	10 अक्टूबर 2027	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
राहु	10 अक्टूबर 2027	1 दिसंबर 2027	पंचम भाव: संतान और बुद्धि
गुरु	1 दिसंबर 2027	15 जनवरी 2028	प्रथम भाव: स्वयं और स्वास्थ्य
शनि	15 जनवरी 2028	9 मार्च 2028	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ
बुध	9 मार्च 2028	26 अप्रैल 2028	षष्ठ भाव: सेवा और बाधाएँ

Rohan: जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ

यह आप दोनों से कैसे जुड़ता है: "Rohan: जीवन भर की विंशोत्तरी दशा: सभी महादशाएँ और अंतर्दशाएँ" आपके रिश्ते के एक और पहलू को देखता है; इसे किसी वर्तमान निर्णय को ध्यान में रखकर पढ़ें।

चालू अंतर्दशा रेखांकित है।

❖ चंद्र महादशा · 3 फ़रवरी 1992 – 15 जून 1995 (आयु 0–3)

चंद्र आपके षष्ठ भाव में मकर राशि में (सम राशि) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध और सूर्य। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: केतु और शुक्र।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
बुध	3 फ़रवरी 1992	14 सितंबर 1992	षष्ठ भाव	प्रथम	मित्र	सहायक
केतु	14 सितंबर 1992	15 अप्रैल 1993	एकादश भाव	षष्ठ	सम	परिश्रम-साध्य
शुक्र	15 अप्रैल 1993	14 दिसंबर 1994	पंचम भाव	द्वादश	सम	परिश्रम-साध्य
सूर्य	14 दिसंबर 1994	15 जून 1995	षष्ठ भाव	प्रथम	मित्र	सहायक

❖ मंगल महादशा · 15 जून 1995 – 15 जून 2002 (आयु 3–10)

मंगल आपके पंचम भाव में धनु राशि में (मित्र राशि) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: गुरु। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
मंगल	15 जून 1995	11 नवंबर 1995	पंचम भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
राहु	11 नवंबर 1995	29 नवंबर 1996	पंचम भाव	प्रथम	सम	मिश्रित
गुरु	29 नवंबर 1996	5 नवंबर 1997	प्रथम भाव	नवम	मित्र	सहायक
शनि	5 नवंबर 1997	14 दिसंबर 1998	षष्ठ भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
बुध	14 दिसंबर 1998	12 दिसंबर 1999	षष्ठ भाव	द्वितीय	शत्रु	परिश्रम-साध्य
केतु	12 दिसंबर 1999	9 मई 2000	एकादश भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
शुक्र	9 मई 2000	9 जुलाई 2001	पंचम भाव	प्रथम	सम	मिश्रित
सूर्य	9 जुलाई 2001	14 नवंबर 2001	षष्ठ भाव	द्वितीय	मित्र	मिश्रित
चंद्र	14 नवंबर 2001	15 जून 2002	षष्ठ भाव	द्वितीय	मित्र	मिश्रित

❖ राहु महादशा · 15 जून 2002 – 14 जून 2020 (आयु 10–28)

राहु आपके पंचम भाव में धनु राशि में (छाया ग्रह) है।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
राहु	15 जून 2002	25 फ़रवरी 2005	पंचम भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
गुरु	25 फ़रवरी 2005	21 जुलाई 2007	प्रथम भाव	नवम	सम	मिश्रित
शनि	21 जुलाई 2007	27 मई 2010	षष्ठ भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
बुध	27 मई 2010	14 दिसंबर 2012	षष्ठ भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
केतु	14 दिसंबर 2012	1 जनवरी 2014	एकादश भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
शुक्र	1 जनवरी 2014	1 जनवरी 2017	पंचम भाव	प्रथम	सम	मिश्रित
सूर्य	1 जनवरी 2017	26 नवंबर 2017	षष्ठ भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
चंद्र	26 नवंबर 2017	28 मई 2019	षष्ठ भाव	द्वितीय	सम	मिश्रित
मंगल	28 मई 2019	14 जून 2020	पंचम भाव	प्रथम	सम	मिश्रित

❖ गुरु महादशा · 14 जून 2020 – 14 जून 2036 (आयु 28–44)

गुरु आपके प्रथम भाव में सिंह राशि में (मित्र राशि) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: मंगल। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: बुध।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
गुरु	14 जून 2020	2 अगस्त 2022	प्रथम भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
शनि	2 अगस्त 2022	13 फ़रवरी 2025	षष्ठ भाव	षष्ठ	सम	मिश्रित
बुध	**13 फ़रवरी 2025**	**21 मई 2027**	**षष्ठ भाव**	**षष्ठ**	**शत्रु**	**परिश्रम-साध्य**
केतु	21 मई 2027	26 अप्रैल 2028	एकादश भाव	एकादश	सम	मिश्रित
शुक्र	26 अप्रैल 2028	26 दिसंबर 2030	पंचम भाव	पंचम	शत्रु	मिश्रित
सूर्य	26 दिसंबर 2030	14 अक्टूबर 2031	षष्ठ भाव	षष्ठ	मित्र	मिश्रित
चंद्र	14 अक्टूबर 2031	12 फ़रवरी 2033	षष्ठ भाव	षष्ठ	मित्र	मिश्रित
मंगल	12 फ़रवरी 2033	19 जनवरी 2034	पंचम भाव	पंचम	मित्र	सहायक
राहु	19 जनवरी 2034	14 जून 2036	पंचम भाव	पंचम	सम	मिश्रित

❖ शनि महादशा · 14 जून 2036 – 15 जून 2055 (आयु 44–63)

शनि आपके षष्ठ भाव में मकर राशि में (स्वराशि) है। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: केतु, मंगल, राहु और गुरु।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
शनि	14 जून 2036	18 जून 2039	षष्ठ भाव	प्रथम	स्वयं की	सहायक
बुध	18 जून 2039	25 फ़रवरी 2042	षष्ठ भाव	प्रथम	मित्र	सहायक
केतु	25 फ़रवरी 2042	6 अप्रैल 2043	एकादश भाव	षष्ठ	सम	परिश्रम-साध्य
शुक्र	6 अप्रैल 2043	5 जून 2046	पंचम भाव	द्वादश	मित्र	मिश्रित
सूर्य	5 जून 2046	18 मई 2047	षष्ठ भाव	प्रथम	शत्रु	मिश्रित
चंद्र	18 मई 2047	16 दिसंबर 2048	षष्ठ भाव	प्रथम	शत्रु	मिश्रित
मंगल	16 दिसंबर 2048	25 जनवरी 2050	पंचम भाव	द्वादश	शत्रु	परिश्रम-साध्य
राहु	25 जनवरी 2050	1 दिसंबर 2052	पंचम भाव	द्वादश	सम	परिश्रम-साध्य
गुरु	1 दिसंबर 2052	15 जून 2055	प्रथम भाव	अष्टम	सम	परिश्रम-साध्य

❖ बुध महादशा · 15 जून 2055 – 14 जून 2072 (आयु 63–80)

बुध आपके षष्ठ भाव में मकर राशि में (सम राशि) है। यह द्वितीय और एकादश भावों का स्वामी है, इसलिए पूरी अवधि की पृष्ठभूमि यही विषय बनाते हैं। सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: सूर्य और शनि।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
बुध	15 जून 2055	10 नवंबर 2057	षष्ठ भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
केतु	10 नवंबर 2057	7 नवंबर 2058	एकादश भाव	षष्ठ	सम	परिश्रम-साध्य
शुक्र	7 नवंबर 2058	7 सितंबर 2061	पंचम भाव	द्वादश	मित्र	मिश्रित
सूर्य	7 सितंबर 2061	15 जुलाई 2062	षष्ठ भाव	प्रथम	मित्र	सहायक
चंद्र	15 जुलाई 2062	14 दिसंबर 2063	षष्ठ भाव	प्रथम	शत्रु	मिश्रित
मंगल	14 दिसंबर 2063	10 दिसंबर 2064	पंचम भाव	द्वादश	सम	परिश्रम-साध्य
राहु	10 दिसंबर 2064	30 जून 2067	पंचम भाव	द्वादश	सम	परिश्रम-साध्य
गुरु	30 जून 2067	5 अक्टूबर 2069	प्रथम भाव	अष्टम	सम	परिश्रम-साध्य
शनि	5 अक्टूबर 2069	14 जून 2072	षष्ठ भाव	प्रथम	सम	सहायक

❖ केतु महादशा · 14 जून 2072 – 14 जून 2079 (आयु 80–87)

केतु आपके एकादश भाव में मिथुन राशि में (छाया ग्रह) है। सावधानी माँगने वाली अंतर्दशाएँ: सूर्य, चंद्र और बुध।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
केतु	14 जून 2072	10 नवंबर 2072	एकादश भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित
शुक्र	10 नवंबर 2072	10 जनवरी 2074	पंचम भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
सूर्य	10 जनवरी 2074	18 मई 2074	षष्ठ भाव	अष्टम	सम	परिश्रम-साध्य
चंद्र	18 मई 2074	17 दिसंबर 2074	षष्ठ भाव	अष्टम	सम	परिश्रम-साध्य
मंगल	17 दिसंबर 2074	15 मई 2075	पंचम भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
राहु	15 मई 2075	1 जून 2076	पंचम भाव	सप्तम	सम	मिश्रित
गुरु	1 जून 2076	8 मई 2077	प्रथम भाव	तृतीय	सम	मिश्रित
शनि	8 मई 2077	17 जून 2078	षष्ठ भाव	अष्टम	सम	मिश्रित
बुध	17 जून 2078	14 जून 2079	षष्ठ भाव	अष्टम	सम	परिश्रम-साध्य

❖ शुक्र महादशा · 14 जून 2079 – 14 अक्टूबर 2082 (आयु 87–90)

शुक्र आपके पंचम भाव में धनु राशि में (सम राशि) है।

अंतर्दशा	से	तक	स्थिति	महादशा-स्वामी से	संबंध	स्वर
शुक्र	14 जून 2079	14 अक्टूबर 2082	पंचम भाव	प्रथम	स्वयं की	मिश्रित

शब्दावली

इस रिपोर्ट में प्रयुक्त शब्द, संक्षेप में।

शब्द	अर्थ
लग्न	जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि; प्रथम भाव और सभी भावों का आरंभ-बिंदु।
राशि	30° का राशि-चक्र खंड। "आपकी राशि" प्रायः चंद्र राशि होती है।
नक्षत्र	13°20′ के 27 चंद्र-नक्षत्रों में से एक; जन्म-नक्षत्र चंद्र का नक्षत्र है।
पद (चरण)	नक्षत्र का चौथाई भाग (3°20′); हर पद एक नवांश राशि से जुड़ता है।
भाव	घर; जीवन के बारह क्षेत्रों में से एक।
भावेश	भाव की राशि का स्वामी ग्रह; इसकी स्थिति बताती है कि भाव के विषय कहाँ ले जाते हैं।
ग्रह	वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रह: सूर्य से शनि तक तथा राहु और केतु।
राहु-केतु	चंद्र के उत्तरी और दक्षिणी पात; बिना पिंड के छाया ग्रह, सदा आमने-सामने।
बल (गरिमा)	राशि में ग्रह की सहजता: उच्च, स्वराशि, मित्र, सम, शत्रु या नीच।
मूलत्रिकोण	ग्रह की स्वराशि का विशेष भाग जहाँ वह विशेष उद्देश्य से कार्य करता है।
वक्री	पृथ्वी से पीछे की ओर चलता दिखने वाला ग्रह।
अस्त	सूर्य के बहुत निकट ग्रह; इसके कारकत्व कम दिखाई देते हैं।
दृष्टि	ग्रह की भावों पर दृष्टि; सभी ग्रह सातवें को देखते हैं, मंगल, गुरु और शनि (और कई मतों में राहु-केतु) की विशेष दृष्टियाँ हैं।
युति	एक ही राशि में दो या अधिक ग्रह।
केंद्र	भाव 1, 4, 7, 10: कुंडली के स्तंभ।
त्रिकोण	भाव 1, 5, 9: कृपा और पुण्य के भाव।
दुःस्थान	भाव 6, 8, 12: बाधा, रूपांतरण और हानि के भाव।
उपचय	भाव 3, 6, 10, 11: समय और प्रयास से सुधरने वाले भाव।
वर्ग	विभाजन कुंडली जो जीवन के एक क्षेत्र को विस्तार से दिखाती है, जैसे विवाह के लिए D9 या करियर के लिए D10।
नवांश (D9)	नौवें भाग की कुंडली; D1 के बाद सबसे महत्वपूर्ण वर्ग।
दशमांश (D10)	दसवें भाग की कुंडली, करियर के लिए।
विंशोत्तरी दशा	जन्म के चंद्र-नक्षत्र पर आधारित 120 वर्षों का ग्रह-अवधि चक्र।
महादशा / अंतर्दशा / प्रत्यंतर	दशा-पद्धति की मुख्य अवधि, उप-अवधि और उप-उप-अवधि।
गोचर	ग्रहों की वर्तमान चाल, जिसे जन्म कुंडली के सापेक्ष, प्रायः चंद्र से, पढ़ा जाता है।
साढ़े साती	चंद्र से बारहवीं, पहली और दूसरी राशि में शनि का लगभग साढ़े सात वर्ष का गोचर।
अष्टकवर्ग	बिंदु-पद्धति जो बताती है कि हर राशि हर ग्रह के लिए कितनी सहायक है; योग सर्वाष्टकवर्ग कहलाता है।
बिंदु	अष्टकवर्ग का शुभ अंक।
षड्बल	ग्रहों का छह प्रकार का बल; यह रिपोर्ट इसका सांकेतिक आंशिक रूप दिखाती है।
विंशोपक	विभाजन कुंडलियों में ग्रह की गरिमा से बना 20-अंकीय बल।
योग	ग्रहों का परिभाषित संयोजन जो किसी संभावना का वर्णन करता है।

शब्द	अर्थ
दोष	पारंपरिक पीड़ा-संयोजन; वर्णनात्मक, कोई दंड नहीं।
तिथि	चंद्र दिवस; सूर्य से चंद्र की दूरी से मापी जाती है, हर चंद्र मास में 30।
करण	तिथि का आधा भाग।
नित्य योग	सूर्य और चंद्र के भोगांशों के योग से बने 27 योगों में से एक; पंचांग का अंग।
वार	सूर्योदय से गिना जाने वाला सप्ताह-दिवस।
अयनांश	सायन और निरयन राशि-चक्र का अंतर; यह रिपोर्ट लाहिरी अयनांश का उपयोग करती है।
चर कारक	अंशों के क्रम से जैमिनी कारक, आत्मकारक (आत्मा) से दारकारक (जीवनसाथी) तक।
आरूढ़	भाव की "छवि": उसके विषय संसार को कैसे दिखते हैं (स्वयं के लिए AL, विवाह के लिए UL)।
अवस्था	अंशों के अनुसार ग्रह की आयु-अवस्था, बाल से मृत तक।
विक्रम संवत / शक	पारंपरिक भारतीय संवत; वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है।

महत्वपूर्ण अस्वीकरण

केवल मार्गदर्शन और मनोरंजन। ज्योतिष रिपोर्ट केवल मार्गदर्शन, आत्म-चिंतन और मनोरंजन के लिए हैं। ये पारंपरिक पद्धतियों पर आधारित हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं और किसी परिणाम की गारंटी नहीं देतीं। ये चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक या अन्य पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं। रिपोर्ट के आधार पर स्वास्थ्य, कानूनी या वित्तीय निर्णय न लें।

यह रिपोर्ट कैसे बनी। कुंडली कंप्यूटर द्वारा गणना की जाती है (स्विस एफ़ेमेरिस, लाहिरी अयनांश) और व्याख्याएँ AI सहायता से लिखी व मनुष्यों द्वारा संपादित हैं। कोई ज्योतिषी व्यक्तिगत रिपोर्ट की समीक्षा नहीं करता।

परिणाम दिए गए जन्म विवरण की सटीकता पर निर्भर करते हैं; गलत जन्म समय से लग्न, भाव और समय-निर्धारण बदल सकते हैं।

ज्योतिषियों की पद्धतियाँ (अयनांश, भाव-पद्धति, राहु-केतु की गणना) अलग-अलग होती हैं; कोई अन्य ज्योतिषी अलग निष्कर्ष पर पहुँच सकता है।

जहाँ परंपरा किसी अवधि या ग्रह-स्थिति को चुनौतीपूर्ण बताती है, वह किसी हानि की भविष्यवाणी नहीं है। आपके निर्णय और परिस्थितियाँ कहीं अधिक मायने रखती हैं।

जिन क्षेत्रों में भविष्य-कथन (फ़ॉर्च्यून-टेलिंग) विनियमित है, वहाँ के ग्राहकों के लिए यह रिपोर्ट केवल मनोरंजन हेतु प्रदान की जाती है।

यदि आप मानसिक संकट में हैं, तो कृपया किसी स्थानीय हेल्पलाइन या आपातकालीन सेवा से संपर्क करें। भारत में आप टेली-मानस (Tele-MANAS) मानसिक-स्वास्थ्य हेल्पलाइन 14416 पर संपर्क कर सकते हैं।

किसी परिणाम की गारंटी नहीं है। अपने निर्णयों की पूरी ज़िम्मेदारी आपकी अपनी है।

Kundli Reports · kundlireports.com · support@kundlireports.com
रिपोर्ट SAMPLE · निर्माण तिथि 28 नवंबर 2026 · गणना: स्विस एफ़ेमेरिस (AGPL), लाहिरी अयनांश, पूर्ण-राशि भाव, माध्य राहु-केतु। · नमूना, काल्पनिक जन्म विवरण।
टाइपफ़ेस: Eczar, Crimson Pro, Martel, Kalam और Noto Sans Devanagari (SIL Open Font License)।